GL SANS 491.207
RAJ

125408
LBSNAA

:त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
Academy of Administration
मसूरी
MUSSOORIE
पुस्तकालय
LIBRARY

अवाप्ति संख्या
Accession No. 125408 ~~14266~~
वर्ग संख्या
Class No. GL Sans 491.207
पुस्तक संख्या
Book No. RAJ राजा

संस्कृत-प्रवेशिका

BEING

AN INTRODUCTION TO THE STUDY OF SANSKRIT GRAMMAR AND COMPOSITION.

BY

RAJA BAM,

Professor, D. A. V. College, Lahore.

1928.

PRINTED BY

HARBHAGWAN MANAGER,

AT THE BOMBAY MACHINE PRESS,

MOHAN LAL ROAD, LAHORE.

October 1927, Feb. 1928.

FOREWORD.

This simple Grammar is a new start in the study of Sanskrit. It aims at presenting the facts of the language in an easy and interesting way. Instead of requiring the student to *learn* any rules of Grammar of an advanced nature this book wishes to work the grammatical part side by side with the compositional. Difficult subjects such as sandhi and the declension have been split into graded parts, so that the easier forms are dealt with in the beginning, the more difficult coming later and proper exercises in between.

As a necessary corollary to the aim of this work, most of the Paninian convention has been set aside, technical terms used but sparingly, and the explanatory matter and exercises, couched in language well within the scope of matriculation students. Some teachers may find the language lacking in roundness of phrase to which they are used. But this doubtful shortcoming will be found compensated by the great advantage in the simplicity, and easy intelligibility of the book.

Use has been made of the Western writers on Sanskrit Grammar. I owe the suggestion

of providing suitable vocabularies at the end and the manner of exercises to the old but invaluable grammars of R. G. Bhandarakar and Ishwarachandra Vidyasagar.

The Book can be improved in many respects; I am conscious of many defects; and yet I have not introduced all the changes in method of teaching lest I should be making too drastic a change in the accepted methods in our schools.

In the preparation of this book, I have been helped by many kind friends, particularly my pupil and colleague, Pandit Veda Vyasa, M. A., who placed the ideas of English and American writers on the subject at my disposal ungrudgingly.

LAHORE :

RAJA RAM.

1st October 1927.

अनुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ-संख्या
व्याकरण के मूल नियम	१
वर्ण प्रकरण	५
सन्धि-प्रकरण	९
स्वर सन्धि	१०
णत्व विधि	१२
षत्व विधि	१३
अभ्यास	,,
नाम प्रकरण	१५
स्वरान्त नाम	१६
पुंलिङ्ग	,,
सर्वनाम	१८
विभक्तियों के अर्थ	२१
अभ्यास २	२६
अभ्यास ३	३२
नपुंसकलिङ्ग	३३
अभ्यास ४	३६
स्त्रीलिङ्ग	३८
अभ्यास ५	४६
धातु-प्रकरण	४८
काल, अवस्था	,,
सार्वधातुक-विभक्तियां	४९
भ्वादिगण	५२
लकारों के प्रयोग	५५
अभ्यास ६	५८
तुदादिगण	६०
दिवादिगण	६२
चुरादिगण	६४
अभ्यास ७	६७
व्यञ्जन सन्धि	६९
प्रयत्न-समीकरण	७०
स्थान-समीकरण	७१
विसर्ग सन्धि	७२
अभ्यास ८	७४
व्यञ्जनान्त नाम १	७५
अभ्यास ९	७८
व्यञ्जनान्त नाम २	८१
अभ्यास १०	९५
धातु-प्रकरण २	९७
स्वादिगण	९९
रुधादिगण	१०२
तनादिगण	१०५
क्र्यादिगण	१०८
अभ्यास ११	११३
अदादिगण	११५
जुहोत्यादिगण	१२४
अभ्यास १२	१३०

नाम	पृष्ठ-संख्या
लट्	१३१
अभ्यास १३	१३८
प्रेरणार्थक क्रिया	१४१
अभ्यास १४	१४५
कर्म-वाच्य, भाव-वाच्य	१४७
अभ्यास १५	१५१
वृद्धन्त-प्रकरण	१५३
अत्, आन	,,
वर्तमान कर्मवाच्य	१५३
अभ्यास १६	१५७
भविष्यत् वाच्यकृत्	१५८
त, तवत्, त्वा	१५९
अभ्यास १७	१६५
अभ्यास १८	१६६
अभ्यास १९	१६७
य, अनीय, तव्य, तुम्	१६९
अभ्यास २०	१७१
अभ्यास २१	१७४
,, २२	१७८
समास	१८३
द्वन्द्व	१८४
तत्पुरुष	१८५
कर्मधारय	१८७
द्विगु	१८८
बहुव्रीहि	१८८
अभ्यास २३	१९१
अभ्यास २४	१९३
स्त्रीप्रत्यय	१९६
अभ्यास २५	१९७
तद्धित	१९९
तारतम्यबोधक	१९९
अभ्यास २६	२०१
संख्या-वाचक	२०३
अभ्यास २७	२१२
कारक-प्रकरण	२१४
प्रथमा	२१४
द्वितीया	२१५
तृतीया	२१६
चतुर्थी	२१७
पञ्चमी	२१७
षष्ठी	२१८
सप्तमी	२१९
अभ्यास २८	२१९
Appendix I	
Examination-papers	
Appendix II	
धातुरूपावली	

पहला अध्याय ।

संस्कृत व्याकरण के मूल नियम ।

Basic Principles of Sanskrit Grammar.

१. किसी भी भाषा का शब्द-भाण्डार (Vocabulary) कितना ही बड़ा क्यों न हो, उस में मूल शब्द बहुत थोड़े होते हैं। शेष सारे शब्द उन मूल शब्दों से ही बनाये जाते हैं। जैसे मूल शब्द सेव् (To serve) से सेवते (serves), सेवक (Servant), सेविका (Female Servant), सेवा (Service), सेव्य (Worthy to be Served), सेवित (Served) इत्यादि; मूल शब्द पठ् (To read) से पठतु (May read), पठित (Read), पाठ, पठन (Reading), पाठक (Reader), पाठिका (Female reader) इत्यादि; मूल शब्द दृश् (To see) से अदर्शत् (Saw), दर्शन (Seeing), दृष्ट (Seen), दर्शक (Seer), दर्शिका (Female seer), दृष्टि (Sight), दृश्य (Scene) इत्यादि; अनेक शब्द बनते हैं। इनके अर्थ भिन्न भिन्न हैं तथापि सब का सम्बन्ध मूल शब्दों के अर्थों से है। जिन नियमों के द्वारा मूल शब्दों से नये नये शब्दों की रचना होती है उन का निरूपण व्याकरण का उद्देश्य है। इन नियमों के ज्ञान से भाषा का पूर्ण बोध हो जाता है और आवश्यकतानुसार नये शब्द बनाने की योग्यता भी हो जाती है।

२. संस्कृत के मूल शब्द तीन प्रकार के हैं–

धातु (Root), नाम (Substantive) और अव्यय (Indeclinable)

नाम में विशेष्य (Noun), विशेषण (Abjective) और सर्वनाम (Pronoun) तीनों का समावेश है। वाक्य (Sentence) बनाने के लिए नाम और धातु का प्रयोग आवश्यक है। अव्यय संख्या में बहुत थोड़े हैं। इन से बहुत थोड़े नये शब्द बनाए जाते हैं। जिन वाक्यों में इन का प्रयोग होता है वहाँ इन के रूप में हेर फेर नहीं होता।

मूलशब्दों से नये शब्द दो प्रकार से बनाये जाते हैं—

(क) उन के परस्पर मेल से—जैसे दश-रथ, राम-दास। ऐसे मेल को समास कहते हैं।

(ख) मूलशब्द से परे विविध अर्थों के प्रकाशक वर्ण-विशेष जोड़ देने से—जैसे सेव्+आ=सेवा, सेव्+अक=सेवक। ऐसे वर्णविशेषों को प्रत्यय (affix) कहते हैं।

३. धातु के परे दो प्रकार के प्रत्यय आते हैं—

(क) एक वे प्रत्यय हैं जिन से क्रिया (Verb) के काल (Tense), वचन (Number), और पुरुष (Person) इत्यादि का बोध होता है—जैसे पठ् धातु के परे ति प्रत्यय आ कर 'पठति' बना, जिस से पढ़ने की क्रिया का वर्तमान काल (Presnt tense), एक वचन (Singular number) और प्रथम पुरुष (Third person) इत्यादि का ज्ञान होता है। ऐसे प्रत्ययों के बिना धातु का वाक्य में प्रयोग नहीं होता।

(ख) दूसरे प्रत्यय वे हैं जिन के लगने से धातुओं से नाम बन जाते हैं। जैसे ज्ञा (To know) धातु से त प्रत्यय लग कर ज्ञात (Known) और गम् (To go) धातु से अन प्रत्यय लग गमन (Gait) बनते हैं। ऐसे प्रत्ययों को कृत कहते हैं।

४. नाम से परे भी दो प्रकार के प्रत्यय आते हैं—

(क) एक तो वे प्रत्यय हैं जो वाक्य में नामों का परस्पर वा क्रिया के साथ सम्बन्ध जितलाते हैं । जैसे हिन्दी में—राम ने डण्डे से चोर को पीटा—इस वाक्य में 'राम' 'डण्डा' 'चोर' नाम हैं, 'पीटा' क्रिया है। इन के परस्पर सम्बन्ध को दिखलाने के लिये 'ने', 'से', 'को' प्रत्यय लगाये गए हैं। इसी प्रकार में—रामः दण्डेन चौरम् अताडयत्—इस वाक्य में (:), (इन), (म्) ये प्रत्यय परस्पर सम्बन्ध को प्रकट करने के लिये लगाये गये हैं। ऐसे प्रत्ययों के विना नामों का वाक्य में प्रयोग नहीं होता, क्योंकि (:), (इन) और (म्) के विना यह पता न चलता कि किस ने पीटा, किस से पीटा और किस को पीटा।

(ख) दूसरे प्रत्यय वे हैं जो किसी प्रसिद्ध सम्बन्ध को दिखलाने के लिये नाम के परे लगाये जाते हैं। जैसे भाषा में स्त्रीसम्बन्ध को दिखलाने के लिए कबूतर से ई प्रत्यय लगा कर कबूतरी, 'उस में रहने वाला' सम्बन्ध बतलाने के लिये ई प्रत्यय लगा कर काश्मीर से कश्मीरी, पञ्जाब से पञ्जाबी आदि, पेशा दिखलाने के लिये आढ़त से आढ़तिया (इया), सांप से सपेरा (एरा), जुआ से जुआरी (री)-आदि नाम बनाये जाते हैं। इसी प्रकार संस्कृत में स्त्रीसम्बन्ध जितलाने के लिये अश्व (घोड़ा) से आ प्रत्यय लगा कर अश्वा (घोड़ी), हरिण (deer) से ई लगा कर हरिणी (She-deer), सन्तान-सम्बन्ध दिखलाने के लिये पाण्डु से अ लगा कर पाण्डव (Son of Pandu), 'वाला' अर्थ में धन से वत् लगा कर धनवत् (धन वाला), बुद्धि के परे मत् लगा कर बुद्धिमत

(बुद्धि वाला) आदि नाम बनाये जाते हैं । ऐसे प्रत्ययों को तद्धित कहते हैं ।

५. वाक्य में प्रयोग करने के लिये नाम और धातु के परे जो प्रत्यय अवश्य लगाने पड़ते हैं उन को विभक्ति (Termination) कहते हैं । ये विभक्तियां उन नामों के परे भी अवश्य लगाई जाती है जो कृत् और तद्धित प्रत्ययों के लगाने से अथवा समासों से बने हैं । अव्ययों के परे कोई विभक्ति नहीं आती ।

विभक्ति के साथ मिल कर बने हुए धातु और नाम के रूप को पद कहते हैं ।

पदों के उस समूह को वाक्य कहते हैं जिस से पूरी बात का बोध हो—जैसे रामः, दण्डेन, चौरम्, अताडयत्—यह चार पद हैं । इनके समूह से 'रामः दण्डेन चौरम् अताडयत्' यह वाक्य बना जिससे 'राम ने दण्डे से चोर को पीटा' इस पूरी बात का बोध होता है ।

६. शब्दों के आपस में वा प्रत्ययों के निकट आने से बहुधा कुछ परिवर्तन हो जाते हैं जिन को सन्धि कहते हैं । जैसे भाषा में 'पञ्च आब' इन दो शब्दों के परस्पर निकट होने से 'पञ्जाब' बन गया । इसी प्रकार संस्कृत में हिम आलय से हिमालय और राम औ से रामौ बना ।

दूसरा अध्याय

वर्ण-प्रकरण

वर्ण और उन के भेद

७—(क) स्वर

ह्रस्व—अ इ उ ऋ ऌ *

दीर्घ—आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ

(ख) व्यञ्जन

क् ख् ग् घ् ङ् (कवर्ग)

च् छ् ज् झ् ञ (चवर्ग)

ट् ठ् ड् ढ् ण (टवर्ग)

त् थ् द् ध न् (तवर्ग)

प् फ् ब् भ् म् (पवर्ग)

य् र् ल् व् (अर्धस्वर)

श् ष् स् ह् (ऊष्म)

अनुस्वार ं, विसर्ग-:

८—स्थान-वर्णों का उच्चारण मुख के इन छै स्थानों से होता है-कण्ठ, तालु, मूर्धा (the roof of the mouth), दन्त ओष्ठ और नासिका । वर्ण अपने अपने स्थानों के नाम पर इन नामों से पुकारे जाते हैं—कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य और नासिक्य ।

---

* 'ऌ' का सिवाय एक क्लृप् धातु के संस्कृत में और कहीं प्रयोग नहीं आता, इस लिए इस का आगे व्यवहार नहीं किया गया ।

(क) व्यञ्जनों से

क् ख् ग् घ् ङ् (कण्ठ्य)

च् छ् ज् झ् ञ् (तालव्य)

ट् ठ् ड् ढ् ण् (मूर्धन्य)

त् थ् द् ध् न् (दन्त्य)

प् फ् ब् भ् म् (ओष्ठ्य) हैं।

इन में से ओष्ठ्य दोनों ओठों के स्पर्श से और शेष अपने अपने स्थान और जिह्वा के स्पर्श से उत्पन्न होते हैं।

(ख) ङ् ञ् ण् न् और म् अनुनासिक कहलाते हैं। अनुनासिक का अर्थ है—नासिका का अनुगमन करने वाला। इन वर्णों का उच्चारण नासिका की सहायता से होता है अर्थात् इन को बोलते समय जिह्वा अपने स्थान विशेष पर होती है और श्वास मुख और नासिका दोनों से निकलता है।

(ग) य् र् ल् व् क्रमशः तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य हैं। इन का उच्चारण न पूरा स्वरों के सदृश है न पूरा व्यञ्जनों के सदृश किन्तु दोनों के बीच का है। इस लिए इन्हें अर्धस्वर कहते हैं।

(घ) श् ष् स् क्रमशः तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य हैं। ह् कण्ठ्य है। इन के उच्चारण में श्वास सुनाई देता है इस लिए इन को ऊष्म कहते हैं।

(ङ) अनुस्वार का स्थान नासिका है।

(च) विसर्ग कण्ठ्य है।

(छ) स्वरों में अ आ कण्ठ्य, इ ई तालव्य, उ ऊ ओष्ठ्य और ऋ ॠ मूर्धन्य हैं। अ+इ=ए और अ+ए=ऐ अतएव कण्ठ तालव्य। अ+उ=ओ और अ+ओ=औ—अतएव कण्ठौष्ठ्य।

९—प्रयत्न—(क) वर्गों का पहला दूसरा (क् ख्, च् छ्, ट् ठ्, त् थ्, प् फ्) श् ष् स् और विसर्ग ये १४ व्यञ्जन अघोष (hard) हैं। शेष सब व्यञ्जन (ग् घ् ङ्, ज् झ् ञ्, ड् ढ् ण्, द् ध् न्, ब् भ् म्, य् र् ल् व् ह्, अनुस्वार और सारे स्वर घोष (soft) हैं।

(ख) वर्गों का दूसरा चौथा (ख् घ्, छ् झ्, ठ् ढ्, थ्, ध्, फ् भ्) और श् ष् स् ह् ये १४ व्यञ्जन महाप्राण हैं। शेष सब व्यञ्जन (क् ग् ङ्, च् ज् ञ्, ट् ड् ण्, त् द् न्, प् ब् म्, य् र् ल् व्) अल्पप्राण हैं।

संज्ञाएं

१०—अ आ, इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ समान स्वर हैं।

११—इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ, तरल स्वर हैं।

य् व् र् इन का अर्धस्वरों के साथ परिवर्तन होता रहता है।

इ य—प्रति एकम्=प्रत्येकम्

य इ—यज्=इज्यते

उ व्—सु आगतम्=स्वागतम्

व उ—स्वप् त=सुप्त

ऋ र्—पितृ अर्थम्=पित्रर्थम्

र ऋ—प्रच्छ=पृच्छ

य् व् र् के इ उ ऋ में परिवर्तन का नाम सम्प्रसारण है।

१२—ए, ओ, अर् को गुण कहते हैं।

आ, ऐ, औ, आर् को वृद्धि कहते हैं।

गुण केवल तरल स्वरों के स्थान में और वृद्धि सब समान स्वरों के स्थान में होती है।

समान स्वर	अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ
गुण	×	ए	ओ	अर्
वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्

	अघोष		घोष				अघोष	घोष	
	अल्प-प्राण	महा-प्राण	अल्प-प्राण	महा-प्राण	अनु-स्वार	अर्ध स्वर	ऊष्म	ह्रस्व	दीर्घ
कण्ठ्य	क	ख	ग	घ	ङ		ह*	अ	आ
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ	य	श	इ	ई ए ऐ
मूर्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष	ऋ	ॠ
दन्त्य	त	थ	द	ध	न	ल	स	उ	ऊ ओ औ
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म	व			

* ह ऊष्म घोष है।

तीसरा अध्याय

सन्धि-प्रकरण ।

१३—सन्धि के मूल सिद्धान्त-

वर्णों के अतीव निकट बोलने में परस्पर के प्रभाव से उन में जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते हैं—जैसे पञ्च आब में दोनों शब्दों को बीच में ठहरे बिना एक साथ बोलते समय पञ्च के अन्त का अ और आब का आदि आ अतीव निकट आए । इस कारण दोनों मिल कर एक ही दीर्घ आ बन गया । यही सन्धि है । इस से पञ्च आब इन दो शब्दों का पञ्चाब यह एक शब्द बना ।

सन्धि का मुख्य कारण बोलने की सुगमता है । सन्धि के मुख्य भेद दो हैं-स्वर सन्धि और व्यञ्जन सन्धि ।

(क) स्वर सन्धि—संस्कृत में प्रायः दो स्वर एक साथ नहीं रह सकते । उन के अतीव निकट आने में या तो दोनों के स्थान में एक ही स्वर हो जाता है या दोनों में से एक का लोप हो जाता है, अथवा पहला स्वर अर्धस्वर (य्, व्, र्) हो जाता है । जैसे नर इन्द्रः=नरेन्द्रः-में नर का अन्त्य अ और इन्द्र का आदि इ दोनों के स्थान में एक स्वर ए हो गया। सर्वे अपि में सर्वे का ए और अपि का अ निकट आने से अ का लोप हो कर सर्वेपि बन गया । प्रति एकम् में प्रति का इ और एकम् का ए अतीव निकट आने से पहले स्वर इ को य् हो कर प्रत्येकम् बना । इस प्रकार स्वरों में सन्धियां हो जाती हैं ।

(ख) व्यञ्जन सन्धि—हम ऊपर बतला चुके हैं कि प्रत्येक वर्ण के उच्चारण में स्थान और प्रयत्न विशेष होते हैं । विविध वर्णों को एक साथ बोलने में स्थान और प्रयत्न का भेद

जितना कम हो उतनी ही बोलने में आसानी होगी । इसी सुगमता के लिये व्यञ्जनों में दो प्रकार के परिवर्तन होते हैं।

(१) प्रयत्न का समीकरण (अर्थात् दोनों को एक प्रयत्न से बोलना) जैसे वाक् दानम्=वाग्दानम् में क् का प्रयत्न अघोष और द् का घोष था । अब क् को ग् कर देने से दोनों का प्रयत्न घोष हो कर बोलने में आसानी हो गई।

(२) स्थान का समीकरण (अर्थात् दोनों को एक स्थान से बोलना) जैसे तत् च=तच्च में त् का स्थान दन्त्य और च् का तालु था। अब त् को च् कर देने से दोनों का स्थान तालु हो जाने पर बोलने में आसानी हो गई।

सन्धि प्रायः सब भाषाओं में पाई जाती है । जैसे अंग्रेजी में do not=do'nt आदि । परन्तु संस्कृत में सन्धि को बहुत नियमबद्ध और व्यापक किया गया है । संस्कृत का सारा वाक्य वर्णों की लगातार शृंखला समझी जाती है । इस लिए सन्धि केवल वहां नहीं होती जहां विराम (stop) हो अर्थात् जहां बोलने वाला ठहरे । एक पद और समास के उच्चारण में कोई नहीं ठहरता, इसलिए इन में सदा सन्धि हो जाती है । हां, वाक्य में यदि वक्ता चाहे तो किसी पद के अन्त पर ठहर कर दूसरा पद बोल सकता है। तब वहां सन्धि नहीं होगी। इसलिए वाक्य में सन्धि वक्ता के आधीन है।

स्वर सन्धि के नियम ।

१४—दो समान स्वर (ह्रस्व वा दीर्घ) मिलने पर दोनों के स्थान में एक दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे—वेद+अन्तः= वेदान्तः, हिम+आलयः=हिमालयः, सा+अपि=सापि, दया+आनन्दः= दयानन्दः, कवि+इन्द्रः=कवीन्द्रः, परि+ईक्षा=परीक्षा, मही+इन्द्र=

महीन्द्रः, नदी+ईशः=नदीशः, गुरु+उपदेशः=गुरूपदेशः, पितृ+ऋणम्=पितॄणम् इत्यादि।

१५—अ, आ के परे यदि—

(क) कोई तरल स्वर (इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ) हो तो दोनों के स्थान में गुण (ए, ओ, अर्) हो जाता है, जैसे—नर+इन्द्रः=नरेन्द्रः, गण+ईशः=गणेशः, रमा+ईशः=रमेशः, हित+उपदेशः=हितोपदेशः, सा+उक्त्वा=सोक्त्वा, देव+ऋषिः=देवर्षिः, महा+ऋषिः=महर्षिः।

(ख) यदि ए, ऐ हों तो दोनों के स्थान में ऐ, ओ, औ हों तो दोनों के स्थान में औ हो जाता है। जैसे—तव+एव=तवैव, सदा+एव=सदैव, परम+ऐश्वर्यम=परमैश्वर्यम, सा+ओषधिः=सौषधिः, महा+औषधम=महौषधम।

१६—तरल स्वर (इ ई, उ ऊ, ऋ ॠ) के परे कोई अन्य स्वर हो तो तरल स्वर को अर्धस्वर (य्, व्, र्) क्रम से हो जाता है। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि, नदी+उदकम=नद्युदकम, सु+आगतम=स्वागतम, मधु+इव=मध्विव, पितृ+अर्थम=पित्रर्थम।

१७—ए, ऐ, ओ, औ के परे कोई स्वर हो तो इन के स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं। ने+अति=नयति, हरे+ए=हरये, नै+अकः=नायकः, गो+इः=गविः, पौ+अकः=पावकः। परन्तु—

(क) जब ए, ऐ, ओ पद के अन्त में हों तो अय्, आय्, अव् के य्, व् का लोप हो जाता है, केवल आव् के व् का लोप नहीं होता। जैसे—ने+ऊचुः=नय् ऊचुः=न ऊचुः, श्रियै+अर्थः=श्रियाय्+अर्थः=श्रिया अर्थः, प्रभो+एहि=प्रभव् एहि=प्रभ एहि, परन्तु तौ+अपि=ताव्+अपि=तावपि। लोप हो जाने के बाद फिर सन्धि नहीं होती।

(ख) यदि ए, ओ पद के अन्त में हों और उन के परे ह्रस्व अ हो तो अ का लोप हो जाता है (और उस के स्थान में प्रायः ऽ चिन्ह दिया जाता है) । जैसे—सर्वे+अपि=सर्वेऽपि, प्रभो+अत्र=प्रभोऽत्र ।

१८—द्विवचनान्त पद के अन्त के ई,ऊ,ए से परे कोई स्वर हो तो उनकी परस्पर सन्धि नहीं होती (अर्थात् वे दोनों स्वर ज्यों के त्यों बने रहते हैं) । कवी+इमौ=कवी इमौ ही रहेगा (१४) से कवीमौ नहीं बनेगा, साधू+अत्र=साधू अत्र (न कि साध्वत्र १५ से), विद्ये+इमे=विद्ये इमे, सेवेते+आचार्यम्=सेवेते आचार्यम् * ।

इति स्वरसन्धिः समाप्तः

१९—न्—ण्

न् के पहले ऋ, ॠ, र्, ष् हों और परे स्वर, न्, म्, य्, व् हों तो न् को ण् हो जाता है—नृणाम्, मातॄणाम्, कर्णः, पुष्णाति ।

ऋ, ॠ, र्, ष् और न् के बीच में स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य्, व्, ह् और अनुस्वार में से चाहे कितने वर्ण आ जावें तो भी ण् हो जाता है—बृंहणम्, अर्केण, दूषणम्, रामायणम् ।

परन्तु अर्चनम्, अर्धेन में नहीं होता क्यों कि बीच में चवर्ग तवर्ग आदि आ गए हैं । कुर्वन्ति, रामान् आदि में नहीं होता क्योंकि पर-वर्ण स्वर, न्, म्, य्, व् में से नहीं हैं ।

---

* ऐसे निपात (Particles) जो केवल एक स्वर के हैं या जिन के अन्त में ओ है उन के साथ स्वर सन्धि नहीं होती ।

जैसे—आ+एवम्=आ एवम् अहो+अपेहि=अहो अपेहि ।

२०—स्—ष्

स् से पूर्व यदि अ, आ से भिन्न स्वर, क्, र् हो और परे स्वर, त्, थ्, न्, म्, य्, व्, हों तो स् को ष् हो जाता है—जैसे—हरि+सु=हरिषु, वाक्+सु=वाक्षु—वाक्षु, चतुर्+सु=चतुर्षु।

पूर्व-वर्ण और स् के बीच में चाहे—और (:) आ जावें तो भी ष् हो जाता है—सर्पिःषु, सर्पींषि।

परन्तु मनसा में ष् नहीं हुआ क्योंकि पूर्ववर्ण अ है, तमिस्रम् में नहीं हुआ क्योंकि परवर्ण र् है।

नियम नम्बर १९, २० की व्याकरण में बहुत आवश्यकता पड़ती है इस लिए विद्यार्थियों को इन्हें समझ कर भलि भांति कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। नीचे कोष्ठक में इन को स्पष्ट रूप में दिया है—

पूर्ववर्ण	व्यवधान चाहे हो	परिवर्तन	परवर्ण
ऋ, ॠ, र्, ष्,	स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य् व् ह् अनुस्वार	न्=ण्	स्वर न्, म्, य्, व्
स्वर (अ,आ से भिन्न) क् र्	अनुस्वार, विसर्ग	स्=ष्	स्वर, न्, म्, य्, व् त्, थ्

अभ्यास १

१—नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करो—

मम+एतत्, देव+अरिः, देव+ऋषिः, परम+ईश्वरः, सर्वे+अपि, भक्ति+उदयः, यमुना+अम्भः, गौरी+आगता, लते+अत्र

शीत+ऋतुः, गो+ए, स्वादु+उदकम्, भौ+उकः, तथा+एव, कवी+इमे, विष्णो+एहि । मुनि+सु, आशीः+सु, नर+इन, गुरु+ना, रामा+नाम् ।

२—नीचे लिखे शब्दों में सन्धिच्छेद करो—

ममापि,एकैकम्,अभ्युदयः,हितोपदेशः,गणेशः,स्वावुदिते, राजाज्ञा,इत्यादि, अभ्यागतः, तावपि, तेऽपि, देवर्द्धिः, एकैव, महोर्म्मिः, त्वयोक्तम् , त ऊचुः ।

३—नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करो—

सर्वदेव, गङ्गौदकस्, मृगेन, रामानास्, हरीण्, हर्वीसि, भ्रातृसु ।

चौथा अध्याय

नाम प्रकरण

२१—नाम में विशेष (Noun), विशेषण(Adjective) और सर्वनाम (Pronoun) तीनों का समावेश है। संस्कृत नामों के लिङ्ग तीन हैं—पुंलिङ्ग (Masculine), स्त्रीलिङ्ग (Feminine) और नपुंसकलिङ्ग (Neuter)। प्राणधारियों में तो नर वाचक शब्द पुंलिङ्ग हैं—जैसे—नर, अश्व, व्याघ्र, कुक्कुट, मयूर, पितृ आदि और स्त्रीवाचक स्त्रीलिङ्ग होते हैं—जैसे नारी अश्वा, व्याघ्री, कुक्कुटी, मयूरी, मातृ-आदि। अप्राणियों में कोई पुंलिङ्ग, कोई स्त्रीलिङ्ग और कोई नपुंसकलिङ्ग होते हैं। कई दो लिङ्गों में और कई तीन लिङ्गों में भी होते हैं—उन के लिङ्गों का निश्चय बहुत कुछ शब्दों की बनावट पर है और कुछ व्यवहार पर है।

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
वृक्ष	लता (बेल)	गुल्म (झाड़ी)
पर्वत	नदी	जल
काय	तनु	शरीर

मणि, नाभि, सिन्धु, बाहु आदि पुंलिङ्ग हैं और स्त्रीलिङ्ग भी और दण्ड, औषध, देह, पुच्छ आदि पुंलिङ्ग हैं और नपुंसकलिङ्ग भी।

विशेषणों का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है जैसे—शीतलः पवनः, शीतलं जलम्, शीतला नदी। सर्वनामों का लिङ्ग उस नाम के अनुसार होता है जिस के स्थान में वह प्रयुक्त किया गया हो यथा—

सीता रामस्य भार्या। सा तम् अन्वगच्छत्।

२२—नामों से परे सात विभक्तियां आती हैं। प्रत्येक विभक्ति के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन, और बहुवचन। एकवचन एक के लिए, द्विवचन दो के लिए और बहुवचन दो से अधिक के लिए प्रयुक्त होता है। विभक्तियां यह हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	अम्	,,	,,
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	,,	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	,,	,,
षष्ठी	,,	ओस्	आम्
सप्तमी	इ	,,	सु
सम्बोधन	स्	औ	अस्

* व्यञ्जनान्त नामों और कई स्वरान्त नामों के परे यह विभक्तियां इसी रूप में आती हैं। पर बहुत से स्वरान्त नामों के आगे इन के आकार में कुछ हेर फेर होजाता है।

स्वरान्त नाम

(पुंलिङ्ग)

अकारान्त।

२३—अकारान्त नामों से परे विभक्तियों के यह रूप बन जाते हैं—

* वे नाम जिन के अन्त में स्वर हैं स्वरान्त नाम से प्रसिद्ध और जिन के अन्त में व्यञ्जन हैं व्यञ्जनान्त नाम से प्रसिद्ध है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	म्	औ	न्
तृतीया	इन	भ्याम्	ऐस्
चतुर्थी	य	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	आत्	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	स्य	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	ओस्	सु

२४—(क) पदान्त स् को सदा विसर्ग हो जाता है। जैसे रामस्=रामः।

(ख) द्वितीया के बहुवचन न् और षष्ठी के बहुवचन नाम् से पहले ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। देव+न्=देवान्। देव+नाम्=देवानाम्। कवि+न्=कवीन्। कवि+नाम्=कवीनाम् इत्यादि।

(ग) य और भ्याम् से पहले अ को दीर्घ हो जाता है। देव+य=देवाय, देव+भ्याम्=देवाभ्याम्,।

(घ) भ्यस्, ओस्, और सु से पहले अ को ए हो जाता है। देव+भ्यस्=देवेभ्यस्=देवेभ्यः (२४ क), देव+ओस्=देवे ओस्=देव् अय् (१७) ओस्=देवयोस्=देवयोः, देव+सु=देवेसु=देवेषु (२०)। और सारे कार्य सन्धि नियमों से होते हैं। जैसे देव+औ=देवौ (१५ ख), देव+अस्=देवाः (१४, २४ क) देव+इन=देवेन (१५ क)। देव+ऐस्=देवैः (१५ ख), देव+आत=देवात् (१४), देव+इ=देवे (१५ क)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः

चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पञ्चमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	,,	देवेषु
सम्बोधन	देव	देवौ	देवाः

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप देव की नाईं होते हैं। हाँ, (१९) नियम से जिन के न् को ण् हो सकता है उन के तृतीया के एक वचन और षष्ठी के बहुवचन में न् को ण् होगा–जैसे रामेण, मनुष्येण, रामाणाम्, मनुष्याणाम्।

२५—सर्वनाम शब्दों में प्रथमा और षष्ठी के बहुवचन, चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के एक वचन में भेद है शेष सारे रूप देववत् होते हैं, जैसे—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	,,	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

(क) इसी प्रकार विश्व (All), सम(All), उभ (Both) (यह सदा द्विवचनान्त ही आता है), अन्य (Other) अन्यतर (Either) और इतर (Other) शब्दों के रूप जानो।

(ख) पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व और अन्तर इन शब्दों के रूप प्रथमा के बहुवचन और पञ्चमी

सप्तमी के एक वचन में दो दो होते हैं, एक देव की नाईं, दूसरा सर्व की नाईं। जैसे प्रथमा बहुवचन-पूर्वे-पूर्वाः, पञ्चमी एक-वचन-पूर्वस्मात्-पूर्वात्। सप्तमी एक वचन-पूर्वस्मिन्-पूर्वे। इन के शेष सारे रूप सर्व की नाईं होते हैं।

(ग) तद् (That) एतद् (This) यद् (Which) ये शब्द हैं तो दकारान्त पर इन के द् का लोप होकर शेष भाग त, एत, य, के रूप सर्व की नाईं होते हैं और प्रथमा के एक वचन में त, एत के त को स हो जाता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु
		एतद्	
प्रथमा	एषः (२०)	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
		यद्	
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्

तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

किम् (Which ?)

किम् का 'क' होकर इस के रूप भी सर्व की नाईं होंगे।

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

युष्मद् और अस्मद् के रूपों में बहुत परिवर्तन होता है, उनको अलग न दिखलाकर नीचे रूप दिये जाते हैं।

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वाम्)	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मभ्यम् (वः)
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः (वाम्)	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद्

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

सर्वादियों का सम्बोधन प्रायः नहीं होता।

विभक्तियों के अर्थ।

किस किस विभक्ति का कहाँ कहाँ प्रयोग होना चाहिए, यह आगे चल कर कारक प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जावेगा। यहाँ अनुवाद के लिए संक्षेप से विभक्तियों के अर्थ दिए जाते हैं।

(क) भाषा में प्रथमा विभक्ति के अर्थ का द्योतक कोई चिन्ह नहीं है वा ने है। यह कर्ता * (Subject) में प्रयुक्त होती है। रामः पठति=राम पढ़ता है, रामः अपठत्= राम ने पढ़ा। सम्बोधन में भी प्रथमा होती है जैसे–हे राम।

(ख) भाषा में द्वितीया के अर्थ का द्योतक या कोई चिन्ह नहीं वा को है। यह कर्म (Object) में प्रयुक्त होती है। गृहं गच्छति=घर जाता है, वेदं पठति=वेद को पढ़ता है।

(ग) तृतीया का अर्थ से, द्वारा है। बाणेन हतः=बाण से (बाण द्वारा) मारा गया।

* कर्मवाच्य (Passive voice) में कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती हैं।

(घ) चतुर्थी का अर्थ के लिये है । विप्राय गां ददाति= ब्राह्मण के लिये गौ देता है । भाषा की शैली के अनुसार अनुवाद यह होगा–ब्राह्मण को गौ देता है । जहां दान की क्रिया हो, वहाँ जिस को दान दिया जावे उस के लिए चतुर्थी का प्रयोग होता है ।

(ङ) पञ्चमी का अर्थ से है । वृक्षात् पतति=वृक्ष से गिरता है । तृतीया और पञ्चमी दोनों का हिन्दी अर्थ से है परन्तु अभिप्राय-भेद स्पष्ट है । तृतीया का प्रयोग साधन (Instrument) के लिए होता है और पञ्चमी का प्रयोग पृथक्त्व (Separation) के लिए होता है । अंग्रेजी में तृतीया का अर्थ (by, with) और पञ्चमी का (from) जानो ।

(च) षष्ठी का अर्थ का, के, की, है । नृपस्य पुत्रः=राजा का पुत्र, नृपस्य पुत्राः=राजा के पुत्र, नृपस्य पुत्री=राजा की पुत्री ।

(छ) सप्तमी का अर्थ में, पर है । कूपे जलम्=कूएँ में जल । तरुषु फलानि=वृक्षों पर फल ।

(ज) सम्बोधन बुलाने के अर्थ में आता है । इस में और प्रथमा विभक्ति में एकवचन के सिवा और कहीं भेद नहीं ।

देव शब्द के रूप ऊपर लिखे जा चुके हैं । विभक्तियों के अर्थों के साथ उस के रूप पुनः दिए जाते हैं ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
	एक देव (ने)	दो देवों (ने)	बहुत देवों (ने)
द्वितीया	देवम्	देवौ	देवान्
	एक देव (को)	दो देवों (को)	बहुत देवों (को)

तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
	एक देव से	दो देवों से	बहुत देवों से
चतुर्थी	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
	एक देव के लिए	दो देवों के लिए	बहुत देवों के लिए
पञ्चमी	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
	एक देव से	दो देवों से	बहुत देवों से
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
	एक देव का	दो देवों का	बहुत देवों का
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु
	एक देव में	दो देवों में	बहुत देवों में
सम्बोधन	देव	देवौ	देवाः
	हे देव	हे दो देवो	हे बहुत देवो

विशेषण (Abjectve) के लिङ्ग वचन और विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। मनोहरः ग्रामः, मनोहरा लता, मनोहरं वनम्, मनोहरौ ग्रामौ, मनोहराः ग्रामाः, मनोहरे ग्रामे इत्यादि।

सर्वनाम (Pronoun) जिस नाम के स्थान में आते हैं वे उसी के लिङ्ग, वचन, और विभक्ति में प्रयुक्त होते हैं—

रामः दशरथस्य पुत्रः, सः वनम् अगच्छत्।
सीता रामस्य पत्नी, सा वनम् अगच्छत्।
वृक्षात् फलानि पतन्ति, तानि रामः गृह्णाति।
रामलक्ष्मणौ वनम् अगच्छताम्, ताभ्याम् रावणः हतः।

शब्दकोष ।

नीचे लिखे शब्द (विशेषणों और अव्ययों के बिना) सब पुंलिङ्ग हैं ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
(क) नृप	राजा	आतप	धूप
नर	मनुष्य	प्रसाद	कृपा
बालक	बच्चा	प्रासाद	महल
आदेश	आज्ञा	ग्रन्थ	पुस्तक
दरिद्र	निर्धन	तीव्र (वि०)	तेज़
अर्थ	धन	छात्र	विद्यार्थी
श्वेत (वि०)	सफ़ेद	कोकिल	कोयल
अश्व	घोड़ा	पिक	कोयल
गम्भीर (वि०)	गहरा	मधुर (वि०)	मीठा
समुद्र	समुद्र	रव	शब्द
फलित (वि०)	फला हुआ	विवाद	झगड़ा
वृक्ष	पेड़	व्यर्थ (वि०)	निष्फल
शीतल (वि०)	ठंडा	स्वभाव	स्वभाव
पवन	वायु	चपल (वि०)	चंचल
पाद	पाँव	तनुज	पुत्र
खञ्ज (वि०)	लंगड़ा	पर्वत	पहाड़
आचार्य	गुरु	श्रेष्ठ (वि०)	उत्तम
आश्रम	डेरा	काक	कौवा
पुत्र	पुत्र	कृष्ण (वि०)	काला
सेवित (वि०)	सेवा किया हुआ	भेद	फ़रक (अन्तर)
सूर्य	सूरज	पालक (वि०)	पालने वाला

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
महायोध (वि०)	बड़ा शूर	धार्मिक	धर्मात्मा
तुल्य	समान	जन	अदामी
संसार	जगत्	रक्षक	रखवाला
जनक	पिता		

(ख) किनारा	तट	रक्षक	असुर
पागल	मत्त (वि०)	युद्ध	विग्रह
कुत्ता	कुक्कुर	बादल	मेघ
बकरा	अज	भयानक	भीषण (वि०)
चोर	चौर	गर्जन	निनाद
हरा	हरित	दुराचारी	दुराचार(वि०)
पक्षी	खग	नहीं	न (अ०)
आचार	आचार	प्यारा	प्रिय (वि०)
बहुत	प्रभूत (वि०)	सूखा	शुष्क (वि०)
विघ्न	विघ्न	जल	जल
लाठी	लगुड़	पुराना	जीर्ण (वि०)
मान	मान	हाथ	कर, हस्त
गरम	उष्ण (वि०)	लाल	रक्त (वि०)
झोंका	प्रवाह	नख	नख
भरोसा	आधार	गाँव	ग्राम
देवता	देव, सुर	कुक्कुड़	कुक्कुट
और	च (अ०)		

अभ्यास २
अनुवाद करो

(क) नृपाणाम् ।
तेषां नराणाम् ।
बालकौ ।
नृपस्यादेशेन ।
दरिद्राय अर्थः ।
श्वेतः अश्वः ।
गम्भीरे समुद्रे ।
फलितः वृक्षः ।
शीतलः पवनः ।
पादेन खञ्जः ।
आचार्यस्याश्रमात् ।
पुत्राभ्यां सेवितः ।
सूर्यस्यातपः ।
ईश्वरस्य प्रसादात् ।
नृपस्य प्रासादात् ।
कः बालकः ?

यस्य सः ग्रन्थः,
सः तीव्रः छात्रः ।
कोकिलस्य मधुरः रवः ।
एषः विवादः व्यर्थः ।
रामः स्वभावेन चपलः ।
रामः कस्य सुतः ?
स दशरथस्य तनुजः ।
सर्वेषुपर्वतेषु हिमालयःश्रेष्ठः
काकः कृष्णः पिकः कृष्णः,
तयोः कः भेदः ।
नराणां पालकः नृपः ।
पाण्डवेषुअर्जुनःमहायोधः।
रामेण तुल्यः न संसारे ।
मोहनस्य जनकः धार्मिकः
जनः ।
नृपः धर्मस्य रक्षकः ।

(ख) देशों में ।
समुद्र का किनारा ।
आचार्य की आज्ञा से ।
पागल कुत्ते को ।
दो काले बकरों के लिए ।
राजा के महल में चोर ।
निर्धनों कारक्षक ईश्वर (है)

हरे वृक्षों में पक्षियों का
निवास ।
धर्म के प्रचार में बहुत
विघ्न (होते हैं) ।
जिसकीलाठी उसका मान
गरम वायु का झोंका ।
दीनों का कोई आश्रयनहीं ।

ईश्वर पर उस का भरोसा (है)
व्यास के महाभारत का श्लोक।
देवताओं और राक्षसों का युद्ध।
सब गायकों का स्वर मधुर (है)।
बादलों का भयानक गर्जन।
उस का पुत्र दुराचारी (है)।
शरीर किस को नहीं प्यारा।
सूखे गले का स्वर मीठा नहीं (होता)।
उस छात्र की पुरानी पुस्तक।
हाथ के लाल नख।
गाँव का काला कुक्कुड़।

इकारान्त नाम।

२७—इकारान्त नामों से परे विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	ई	स्
द्वितीया	म्	,,	न्
तृतीया	ना	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	,,	भ्यस्
पञ्चमी	स्	,,	,,
षष्ठी	स्	ओस्	नाम्
सप्तमी	औ	ओस्	सु

२८—प्रथमा के बहुवचन, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सम्बोधन के एकवचन में 'इ' को गुण होकर ए होजाता है और सप्तमी एक वचन में 'इ' उड़ जाता हैं। जैसे—हरि+अस्=हरे अस्, हर् अय् (१७) अस्=हरयः। हरे ए=हर् अय् (१७)ए=हरये। हरि स्=हरे स्=हरेः (२४ क)। हरि+औ=हर्+औ=हरौ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	,,	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	,,	,,
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	,,	कविषु
सम्बोधन	कवे	कवी	कवयः

ह्रस्व 'इ' अन्त वाले शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं—

२९—सखि और पति शब्दों के रूपों में विशेषता है—

सखि (a friend)

प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	,,	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	,,	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	,,	,,
षष्ठी	,,	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	,,	सखिषु
सम्बोधन	सखे	सखायौ	सखायः

पति शब्द के रूप पहले पांच प्रत्ययों (सु औ अस्, अम् औ) में कवि की नाईं, शेष सारे रूप सखि की नाईं होते हैं, परन्तु समासान्त पति शब्द (भूपति आदि) के रूप सभी विभक्तियों में कवि की नाईं ही होते हैं।

उकारान्त नाम

३०—इकारान्तों से परे विभक्तियों के जो रूप दिखलाये हैं, वे ही उकारान्तों से परे आते हैं। भेद केवल इतना है, कि जहां इकारान्तों में इ को ई होता है वहां उकारान्तों में उ को ऊ होता है, जहां इ को य् होता है वहां उ को व् होना है; जहां इ को ए गुण होता है, वहां उ को ओ गुण होता है। जैसे हरि का द्विती० द्विव० हरी है और भानु का द्विती० द्विव० भानू है। हरि का षष्ठी द्विव० हर्योः है भानु का षष्ठी द्विव० भान्वोः है। भानु अस्=भानो अस्=भान् अव् (१७) अस्=भानवः। भानु ए=भानो ए=भान् (१७) अव् ए=भानवे।

भानु (Sun)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	,,	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	,,	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	,,	,,
षष्ठी	,,	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	,,	भानुषु
सम्बोधन	भानो	भानू	भानवः

ऋकारान्त नाम

३१—ऋकारान्तों में जो रूढ़ि संज्ञा शब्द हैं, उन के ऋ को पहले पांच वचनों में गुण (अर्) होता है और शेष को वृद्धि (आर्) जैसे पितृ औ=पितृ अर् (१७) औ=पितरौ। पर दातृ औ=दातृ

आर् (१२) औ=दातारौ। प्रथमा का एकवचन दोनों का एक जैसा होता है; जैसे पिता, दाता। सप्तमी के एक वचन में दोनों को ही गुण होता है जैसे पितृ इ=पितृ अर् इ=पितरि, एवं दातरि।

ऋकारान्तों से परे विभक्तियों के ये रूप होते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	०	औ	अस्
द्वितीया	अम्	,,	न्
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	,,	भ्यस्
पञ्चमी	उस्	,,	,,
षष्ठी	उस्	ओस्	नाम्
सप्तमी	इ	,,	सु

पितृ (father)

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	,,	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	,,	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	,,	,,
षष्ठी	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन	पितः	पितरौ	पितरः

दातृ (giver)

प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्

शेष पितृ की तरह।

अभ्यास ३

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
(क) साधु	सज्जन	मृत्यु	मौत
कूप	कुँआ	हेतु	कारण
शिशु	बालक	भ्रातृ	भाई
दयालु (वि०)	दयावान	अशोभन	बुरा
नृपति	राजा	ऋतु	मौसम
रम्य (वि०)	सुन्दर	जामातृ	दामाद
कर्तृ	बनाने वाला	पशु	पशु
गुण	रस्सी, गुण	रक्षितृ	रक्षक
आदि (वि०)	पहला सिरा	हित	हित करने वाला
अन्तिम (वि०)	पिछला सिरा	शुचि	ईमानदार
आकार	शकल	विक्रेतृ	बेचने वाला
तरु	वृक्ष	विधु	चांद
बहु	बहुत	चक्रवाक	चकवा
विहग	पक्षी	मोद	हर्ष
रिपु	शत्रु		

(क) बन्दर	कपि	ऊँचा	उन्नत (वि०)
शोर	कोलाहल	बन्धु	बन्धु
मालिक	प्रभु	मणि	मणि
आग	अग्नि	खजाना	कोष
जला हुआ	दग्ध (वि०)	सुहावना	रम्य

अभ्यास ३

(क) कः एषः साधु ।
कूपस्यैतस्य ।
तस्य शिशोः करः कोमलः ।
दुर्लभाः सुजनाः, सुलभाः दुर्जनाः ।
दयालोः नृपतेः आदेशात् ।
अर्जुनस्य सखा कृष्णः ।
मुनीनां रम्याः आश्रमाः ।
बाल्मीकिः रामायणस्य कर्ता
एतस्य गुणस्य एषः आदिः
एषः च अन्तिमः भागः ।
सर्वेषु शिशुषु हरेः पुत्रः आकारेण सुन्दरः ।

तरुषु बहवः विहगाः ।
रिपौ विश्वासः मृत्योः हेतुः ।
भ्रातुःभ्रात्रा कलहःअशोभनः ।
रम्यः वसन्तः ऋतुः ।
जामातरि जनानां प्रभूतः स्नेहः ।
सर्वेषां नराणां पालकः यः सः पशूनामपि रक्षिता ।
हितः नरपतिः संसारे दुर्लभः ।
शुचिः एषः विक्रेता ।
विधोः उदये चक्रवाकाणां मोदः ।

(ख) घर के शत्रुओं का ।
शीतल वायु से आनन्द ।
बन्दरों का तीखा शोर ।
किसके मालिक का आदेश?
सबका मालिक ईश्वर (है) ।
मुनिओं के सुन्दर आश्रमों के मृग ।
आग से जला हुआ ।
ऊँचे वृक्षों पर पक्षी ।
जो देव का पिता (है) वह मोहन का भाई (है) ।

इन दो मित्रों का स्वाभाविक प्यार (है) ।
बन्धुओं की लड़ाई अच्छी नहीं ।
मणियों का खजाना ।
ग्रीष्म ऋतु में ।
बन्धु और गुरु की मृत्यु का शोक ।
वसन्त का समय सुहावना (है) ।

नपुंसकलिङ्ग (Neuter)

नपुंसकलिङ्ग के मुख्य शब्द ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ अन्त-वाले ही हैं।

३२—नपुंसक में प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के रूप अकारान्तों से परे–०, ई, इ–होते हैं। शेष सारी विभक्तियों के रूप वही होते हैं, जो पुंलिङ्ग में लिखे हैं—

ज्ञान (Knowledge)

प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	,,	,,	,,
सम्बोधन	ज्ञान	,,	,,

शेष सारे रूप पुंलिङ्ग अकारान्तों की नाईं होते हैं। अकारान्त सर्वनाम के भी प्रथमा और द्वितीया में रूप ऐसे ही होते हैं। जैसे–सर्वम् सर्वे सर्वाणि: शेष सारे पुंलिङ्ग की नाईं।

३३—व्यञ्जनान्त सर्वनामों से परे प्रथमा और द्वितीया का एकवचन ज्यों का त्यों रहता है, द्विवचन बहुवचन अकारान्तों की नाईं होते हैं। जैसे–तत् ते तानि। एनत् एते एतानि। यत् ये यानि। किम् के कानि। शेष सारे रूप पुंलिङ्गवत्।

इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त।

३४—नपुंसक में इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्तों से परे स्वरादि विभक्तियों के आदि में एक न् बढ़ा दिया जाता है। जैसे वारि+आ=वारि+न्+आ=वारिणा (१९), मधु+आ=मधुना, कर्तृ+आ=कर्तृना=कर्तृणा (१९)।

३५—प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे–वारि+इ=वारीणि (१९)।

वारि (Water)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	,,	,,
षष्ठी	,,	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	,,	वारिषु
सम्बोधन	वारे-वारि	वारिणी	वारीणि

३६—इकारान्त नपुंसक शब्द सब वारि की नांई होते हैं। किन्तु अक्षि शब्द में यह विशेषता है, कि तृतीया से लेकर स्वरादि विभक्ति परे होने पर अक्षि का अक्ष्ण् बन जाता है। जैसे—अक्षि+आ=अक्ष्ण्+आ=अक्ष्णा।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
चतुर्थी	अक्ष्णे	,,	अक्षिभ्यः
पञ्चमी	अक्ष्णः	,,	,,
षष्ठी	,,	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
सप्तमी	अक्षणि,अक्ष्णि	,,	अक्षिषु
सम्बोधन	अक्षि-अक्षे	आक्षिणी	अक्षीणि

विभक्तियों में अस्थ्न् और दध्न् बन जाते हैं।

उकारान्त–मधु (Honey)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः–इत्यादि

'वारि की नांई'

ऋकारान्त–कर्तृ (A doer)

प्रथमा	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः–इत्यादि

शब्दकोष

(क) लोहित (वि०) लाल
नगर शहर
विमल (वि०) निर्मल
प्रभव सोत
स्वच्छ (वि०) निर्मल
आस्वाद स्वाद
वारि पानी
क्षालन धोना
आम्र आम
भीषण (वि०) डरावना
उज्ज्वल (वि०) चमकने वाला
नक्षत्र तारा
विपुल (वि०) बहुत

कृष्ण (वि०) काला
कुसुम फूल
जीर्ण (वि०) फटा हुआ पुराना
दधि दही
दुग्ध दूध
अस्थि हड्डी
मूल जड़
कूजन पक्षियों का शब्द
नयन आंख
स्नान न्हाना
पर्ण पत्ता
पीत पीला

(ख) लाल	रक्त (वि०)	सफाई	संशोधन
चांदी	रजत	कारण	कारण
भूषण	भूषण	घूमना	भ्रमण
बिल	विवर	देखना	दर्शन
नाम	अभिधान	शून्य	शून्य
इनाम	पारितोषिक	जड़	मूल
तारा	नक्षत्र, तारक	ज्ञान	ज्ञान
नाशवान्	नश्वर (वि०)		

अभ्यास ४

(क) लोहितं कुसुमम् ।
श्वेतानि वस्त्राणि ।
तेषां नगराणां भूपः ।
विमलस्य जलस्य प्रभवः ।
स्वच्छस्य वारिणः पानम् ।
मधुराणां फलानाम् आस्वादः ।
वारिणा क्षालनम् ।
अक्ष्णा काणः कुरूपः ।
आम्रं चारु फलम् ।
सिंहस्य मुखं भीषणम् ।
आकाशे उज्ज्वलानि नक्षत्राणि ।
तस्य विपुलं धनम् ।
यानि वस्त्राणि कृष्णानि तानि रम्याणि ।
सर्वेषु कुसुमेषु एनस्य कुसुमस्य गन्धः शोभनः ।
दरिद्राय दानं सफलम् ।
भिक्षूणां जीर्णानि वस्त्राणि ।
दधि दुग्धस्य विकारः ।
तस्य सारमेयस्य मुखेऽस्थि ।
वनेषु मुनीनां निवासः ।
तरोः मूले कृष्णः सर्पः ।
खगानां कूजनं मधुरम् ।
कस्य नयने सुन्दरे ?
शीतेनोदकेन स्नानं हितम् ।
हेमन्ते वृक्षाणां पर्णानि पीतानि ।

(ख) उस की आंखें लाल (हैं)।
चांदी के भूषण।
बिल में भयानक सांप।
सुख से दुःख।
दुःख से सुख।
धन के बल से मद।
जिसका नाम राम (है),
उसका यह इनाम (है)।
नीले आकाश में चमकते
हुए तारे।
तालाब का शीत पानी।
मनुष्य का जीवन नाशवान्
(है)।
घर की सफाई।
दूध स्वभाव से मीठा (है)।
धन से धर्म, धर्म से सुख
(होता है)।
लोभ पाप का कारण (है)।
बसन्त में घूमना हित-
कारक (है)।
खिले कमलों का देखना।
मूर्ख का जीवन शून्य (है)।
आलस रोग की जड़ (है)।
ज्ञान सुख का कारण (है)।
कमल के पत्ते पर काले भौंरे।

छठवा अध्याय

स्त्रीलिङ्ग

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग (Femenine)

आकारान्त

३७—स्त्रीलिङ्ग शब्दों से परे विभक्तियों के ये रूप बन जाते हैं—

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा०	०	इ	स्
द्वितीया	म्	,,	,,
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	,,	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	,,	,,
षष्ठी	,,	ओस्	नाम्
सप्तमी	आम्	,,	सु
सम्बोधन	०	इ	स्

३७—आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ, ओस् और सम्बोधन का एकवचन परे होने पर आ को ए होजाता है। लता+आ=लते आ=लत् अय् (१७) आ=लतया । लता+ओस्=लते ओस्=लत् अय् (१७) ओस्=लतयोः । हे लते।

३८—ए, अस् (पं० ष० एकव०) और आम् से पहले आकारान्त शब्द के अन्त में या जोड़ दिया जाता है । जैसे—लता+ए=लता+या+ए=लतायै (१७ख),लता+अस्=लता या अस्=लतायाः (१४), लता+आम्=लता+या आम्=लतायाम् ।

लता (a creeper)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	,,	,,
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	,,	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	,,	,,
षष्ठी	,,	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	,,	लतासु
सम्बोधन	लते	लते	लताः

३९—सर्वनाम शब्द स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त होते हैं। जैसे-सर्व=सर्वा, विश्व=विश्वा, यद्=या, किम्=का तद्=ता, एनद्=एना, पर ता, एना के त् को प्रथमा के एकवचन में पुंलिङ्ग की नाईं स् हो जाता है।

४०—चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी के एकवचन में प्रत्यय के या (३८) से पूर्व स् आजाता है, और सर्वनाम का अन्तिम आ ह्रस्व हो जाता है। जैसे सर्वा+ए=सर्वा या (३८) ए=सर्वास् या ए=सर्वस्या ए=सर्वस्यै (१७ ख), विश्वा+अस्=विश्वा या अस्=विश्वा स् या अस्=विश्वस्या अस्=विश्वस्याः (१४), ता+आम्=ता या आम्=ता स्या आम्=तस्या आम्=तस्याम्।

४१—(क) षष्ठी के बहुवचन की विभक्ति साम् होती है न कि नाम्। जैसे सर्वा+साम्=सर्वासाम्।

(ख) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ए और अस् (पं० ष० एकव०) से पहले और शब्द के अन्त में आ जोड़ दिया जाता है। जैसे—नदी+ए=नदी+आ+ए=नद्या+ए (१६)=नद्यै (१७ ख), नदी+अस्=नदी+आ+अस्=नद्या (१४)+अस्=नद्याः।

नदी (A river)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	,,	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	,,	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि	नद्यौ	नद्यः

४२—(क) जिन शब्दों के अन्त में स्त्री प्रत्यय ई लगता है, वे सब नदीवत् होते हैं। शेष ईकारान्त स्त्री शब्दों के अन्त में प्रथमा का एकवचन स् लगता है। जैसे—लक्ष्मीः, अवीः, तन्त्रीः इत्यादि। शेष सारे रूप नदीवत् होते हैं।

(ख) ई प्रत्ययान्त स्त्री शब्द के रूपों में नदी से यह विशेषता है, कि इस के रूपों में ई को य् के स्थान इय् होता है और द्वितीया के एकवचन और बहुवचन में विकल्प से होता है।

स्त्री (a woman)

	एकव०	द्विवच०	बहुव०
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्-स्त्रीम्	,,	,,-स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	,,	,,
षष्ठी	,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्

सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि	स्त्रियौ	स्त्रियः

४३—धी शब्द के ई को स्वरादि विभक्तियां परे होने पर इय् हो जाता। जैसे धी+औ=धिय् औ=धियौ।

धी (talent)

	एकव०	द्विव०	बहुव
प्रथमा	धीः	धियौ	धियः
द्वितीया	धियम्	,,	,,
तृतीया	धिया	धीभ्याम्	धीभिः
चतुर्थी	धिये	,,	धीभ्यः
पञ्चमी	धियः	,,	,,
षष्ठी	,,	धियोः	धियाम्
सप्तमी	धियि	,,	धीषु
सम्बोधन	धीः	धियौ	धियः

४४—श्री शब्द को भी इय् होता है, किन्तु चतुर्थी पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी का एकवचन विकल्प से स्त्रीवत् है। विभक्तियां वही लगती हैं जो प्रारम्भ में दी हैं, हां, षष्ठी के बहुवचन में नाम् विभक्ति विकल्प से आजाती है।

श्री (wealth)

	एकवचन	द्विव०	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	,,	,,
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	,,	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	,,	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः	श्रियौ	श्रियः

ऊकारान्त वधू (A young woman)

४५—ऊकारान्तोंसे परे वही विभक्तियां आती हैं, जो ईकारान्तों से आती हैं किन्तु प्रथमा का एकवचन स् होता है। ईकारान्तों में ई को य् होता है, ऊकारान्तों में ऊ को व् होता है। शेष आ का आगम, दीर्घ स्वर को ह्रस्व आदि कार्य दोनों में समान हैं। जैसे—वधू+अस् (पं० एक०)=वधू आ अस्=वध् व् आस्=वध्वाः।

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	,,	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	,,	,,
षष्ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	,,	वधूषु
सम्बोधन	वधु	वध्वौ	वध्वः

इकारान्त और उकारान्त

४६—इकारान्त और उकारान्तों के सारे रूप पुंलिङ्गवत् होतेहैं, किन्तु द्वितीया का बहुवचन नदीवत् होता है और चतुर्थी पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एक वचनों के रूप दो दो होते हैं—एकनदी और वधू की नाईं और दूसरा कवि और भानु की नाईं।

इकारान्त-मति (Intellect)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	,,	मतीः

तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	,,	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम, मतौ	,,	मतिषु
सम्बोधन	मते	मती	मतयः

उकारान्त धेनु (A cow)

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	,,	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	,,	,,
षष्ठी	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	,,	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो	धेनू	धेनवः

ऋकारान्त

४७—ऋकारान्त शब्दों से परे द्वितीया का बहुवचन सु है और सु से पहले ऋ दीर्घ हो जाता है। शेष सारे रूप स्वसृ के दातृवत् होंगे, अन्य ऋकारान्तों के पितृवत्—

मातृ (A mother)

प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	,,	मातॄः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः

शेष सारा पितृवत्

स्वसृ (A sister)

प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	,,	स्वसॄः

शेष सारा दातृवत्

ओकारान्त–गो (A cow)

४८—प्रथमा विभक्ति और द्वितीया के द्विवचन में ओ को औ और द्वितीया के एकवचन और बहुवचन में आ होता है । शेष रूपों में स्वरादि विभक्ति परे होने पर ओ को सन्धि नियम से अव् हो जाता है, पञ्चमी षष्ठी का एक वचन स् आता है—

प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	,,	गाः
तृतीया	गवा (१७)	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे (१७)	,,	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	,,	,,
षष्ठी	,,	गवोः (१७)	गवाम् (१७)
सप्तमी	गवि (१७)	,,	गोषु

औकारांत-नौ (A boat)

४९—स्वरादि विभाक्तियों में औ को आव् सन्धि नियम से होता है और कोई परिवर्तन नहीं होता—

प्रथमा	नौः	नावौ	नावः
द्वितीया	नावम्	,,	,,
तृतीया	नावा	नौभ्याम्	नौभिः
चतुर्थी	नावे	,,	नौभ्यः
पञ्चमी	नावः	,,	,,
षष्ठी	,,	नावोः	नावाम्
सप्तमी	नावि	,,	नौषु

शब्द-कोष

[क] आख्यायिका कहानी
गति चाल
विरक्ति वैराग्य
श्रुति वेद
अपि भी [अ०]
विद्या विद्या
कीर्ति यश
अंगुली [लि] अंगुली
कनिष्ठा सब से छोटी
मध्यमा बीच की
कृति काम [ग्रन्थ]
श्रेणी जमात
रजनी रात्रि
तारा नक्षत्र
पृथ्वी [थिवी] भूमि
व्याघ्री बाघन
मृगी हरिणी

[ख] काली [वि०] कृष्णा
शोभा शोभा
स्थिर [वि०] स्थिरा
अच्छी [वि०] साध्वी, पतिव्रता
समान [वि०] समान, सम, तुल्य
नाव नौ
गीदड़ शृगाल
बहू वधू

भगिनी बहन
पत्नी स्त्री (भार्या)
भक्ति भक्ति
निशा रात
भू पृथ्वी
धी बुद्धि
भग्ना [वि०] टूटी हुई
शाखा टहनी
दुहितृ कन्या
बुद्धि बुद्धि
गो गाय
सेवा सेवा
प्राची पूर्वदिशा
प्रतीची पश्चिमदिशा
उदीची उत्तर दिशा
दक्षिण दक्षिण दिशा
इति यह (अ०)
दिशा दिशा
सास श्वश्रू
कठोर [वि०] परुषा
कौवा काक
चोंच चञ्चु
टुकड़ा खण्ड
गुफा गुहा
जङ्गली [वि०] वन्य
गुणकारी हितकर (वि०)

अभ्यास ९

[क] एषा आख्यायिका ।
हिमालयः गङ्गायाः प्रभवः।
तस्याः नद्याः जलं शुभ्रम ।
एतस्य मृगस्य गतिः रम्या ।
संसारात् विरक्तिः साधूनां धर्मः ।
श्रुतेः अध्ययने शूद्राणा मप्यधिकारः ।
विद्यायाः संसारे कीर्तिः ।
अंगुलिषु का कानिष्ठा, का च मध्यमा ?
महाभारतं व्यासस्य कृतिः ।
एतस्यां श्रेण्यां सर्वे छात्राः प्रवीणाः ।
रजन्यां नाराणां शोभा ।
पृथिव्यां बहूनि वस्तूनि ।
एषः व्याघ्रयाः शावकः,
सःच मृग्याः ।
एतयोः भगिन्योःपरमः स्नेहः ।
पार्वती शिवस्य पत्नी ।
एतस्याः स्त्रियाः पत्यौ परा भक्तिः ।
निशायाः अन्तिमे प्रहरे ।
भुवि रामेण तुल्यःन कोपि ।
धियि सः अत्युत्तमः ।
वृक्षस्य भग्नायां शाखायाम् ।
सीता जनकस्य दुहिता ।
बुद्धेः विकारः अनिष्टस्य जनकः ।
गवां सेवा नराणां धर्मः ।
प्राची, प्रतीची, उदीची, दक्षिणा च इति दिशाः ।

[ख] उस स्त्री के काम ।
काली हरिणी का बच्चा ।
विद्या की शोभा सेवा में[है]
विद्या के प्रभाव से ।
ऋषियों का निवास गङ्गा के तट पर [है]
स्त्रियों का चित्त स्थिर नहीं ।
अच्छी स्त्रियों का पति देवता है
रघु के समान दाता पृथ्वी पर नहीं ।
नाव से तरना ।

गौ का दूध मीठा (है)
उस हरिणी के दो बच्चे (हैं)।
रात को गीदड़ों का शब्द
डरावना होता (है)
यशोदा की बहू घर के
कामों में निपुण (हैं)
गङ्गा के शीतल जल में स्नान
उस लड़की की सास
कठोर (है)
कौवे की चोंच में मांस
का टुकड़ा (है)
पहाड़ों की गुफाओं में
जंगली जीवों का निवास (है)।
जिस नदी का जल शीतल (है)
उसमें न्हाना गुणकारी (है)।

सातवां अध्याय ।

धातु-प्रकरणम् ।

५०—धातुओं के रूप बनाने के लिए उन के परे दो प्रकार की विभक्तियां लगाई जाती हैं—परस्मैपदी और आत्मनेपदी। कई धातु केवल परस्मैपदी हैं, कई केवल आत्मनेपदी, कई ऐसे धातु हैं जिनके परे दोनों प्रकार की विभक्तियां आती हैं । उन्हें उभयपदी कहते हैं ।

संस्कृत में छः काल (Tenses) और चार अवस्था (Moods) हैं; इन को लकार कहते हैं ।

काल (Tenses)

लट्	[वर्तमान]	Present.
लुट्	[आज से भिन्न भविष्यत्]	First Future.
लृट्	[भविष्यत्]	Second Future.
लङ्	[आज से भिन्न भूत]	Past Imperfect.
लिट्	[परोक्ष भूत]	Past perfect.
लुङ्	[भूत]	Aorist.

अवस्था (Moods)

लोट्	[आज्ञा]	Imperative mood.
लिङ्	[विधि]	Potential mood.
लिङ्	[आशीः]	Benedictive mood.
लृङ्	[पण-बन्ध]	Conditional mood.

प्रत्येक काल और अवस्था में धातु के रूप तीन वचनों (एकवचन, द्विवचन, और बहुवचन) औ तीन पुरुषों (प्रथम पुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष) में बनते हैं ।

उत्तमरुष (Eirst person) सदा वक्ता अपने लिए प्रयुक्त करता है—अहम् गच्छामि (मैं जाता हूँ)।

मध्यमपुरुष (Second person) जो पुरुष सामने हो उसको सम्बोधन करने में प्रयुक्त होता है—त्वं पश्यसि (तू देखता है)।

अन्यपुरुष के लिए प्रथमपुरुष (Third person) का प्रयोग होता है—सः गच्छति (वह जाता है)।

५१—लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् को सार्वधातुक कहते हैं। इन के रूप बनाते समय धातु और विभक्ति के मध्य में प्रायः एक विकरण आजाता है।

सार्वधातुक प्रत्ययों से पूर्व धातुओं के रूप दस प्रकार के होते हैं। इसलिए संस्कृत के धातुओं को दस गणों (समूहों) में बांटा गया है। प्रत्येक धातु के पहले धातु के अनुसार गणों के नाम ये हैं—

भ्वादि (भू आदि) गण, तुदादिगण, दिवादिगण, चुरादिगण, स्वादिगण, तनादिगण, क्र्यादिगण, रुधादिगण, अदादिगण और जुहोत्यादिगण।

इन दस गणों में से पहले चार गणों के रूप बनते समय परिवर्तन बहुत कम होते हैं, इसलिए पहले उन्हीं के नियम दिए जाते हैं। इन गणों के सार्वधातुक लकारों में रूप बनाते समय धातु के परे नीचे लिखी विभक्तियां लगाई जाती हैं—

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्वि०	बहुवचन
लट्	प्रथम पुरुष	ति	तस्	अन्ति	ते	एते	अन्ते
	मध्यम पुरुष	सि	थस्	थ	से	एथे	ध्वे
	उत्तम पुरुष	मि	वस्	मस्	ए	वहे	महे
लङ्	प्रथम पु०	त्	ताम्	अन्	त	एताम्	अन्त
	मध्यम पु०	स्	तम्	त	थास्	एथाम्	ध्वम्
	उत्तम पु०	अम्	व	म	ए	वहि	महि
लोट्	प्रथम पु०	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	एताम्	अन्ताम्
	मध्यम पु०	०	तम्	त	स्व	एथाम्	ध्वम्
	उत्तम पु०	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै
विधि-लिङ्	प्रथम पु०	एत्	एताम्	एयुस्	एत	एयाताम्	एरन्
	मध्यम पु०	एस्	एतम्	एत	एथास्	एयाथाम्	एध्वम्
	उत्तम पु०	एयम्	एव	एम	एय	एवहि	एमहि

५२—(क) सार्वधातुक विभक्तिया परे होने पर पहले चार गणों के धातुओं से ये चार विकरण क्रमशः लगते हैं।

भ्वादिगण से	अ
तुदादिगण से	अ
दिवादिगण से	य
चुरादिगण से	अय

(ख) व् और म् से पूर्व अ दीर्घ हो जाता है। पत+मि=पतामि॥

(ग) स्वरादि विभक्ति से पूर्व अ का लोप हो जाता है। भव्+अ+अन्ति=भव्+अन्ति=भवन्ति, भव्+अ+एत्=भव्+एत्=भवेत्।

(घ) लङ्, लुङ् और लृङ् में धातु के पहले एक अ लगाया जाता है। यदि धातु स्वरादि हो तो अ और धातु का आदि स्वर दोनों मिल कर वृद्धि हो जाती है—पत्—अपतत्, ऋछ् (ऋ)—अ+ऋछत्=आर्छत्।

(ङ) १—भ्वादिगण में विकरण से पूर्व धातु के अन्तिम स्वर को गुण हो जाता है—भू+अ=भो+अ=भव्+अ (१७)=भव, नी+अ=ने+अ=नय, जि+अ=जय।

२—यदि धातु के अन्त में एक व्यञ्जन हो तो उसके पूर्व ह्रस्व स्वर को भी विकरण परे होने पर गुण हो जाता है। बुध्+अ=बोध्+अ=बोध। पर कूज्+अ=कूज, यहां गुण नहीं होता क्योंकि दीर्घ स्वर है। चिन्त्+अ=चिन्त में गुण नहीं होता क्योंकि अन्त में दो व्यञ्जन हैं। शिक्ष्+अ=शिक्ष—यहां गुण नहीं होता क्योंकि अन्त में क्ष् (क्+ष्) संयुक्त व्यञ्जन हैं।

धातु-कोष (भ्वादिगण)

परस्मैपदी

भू—होना
पत्—गिरना
पठ्—पढ़ना
वद्—बोलना
नम्—झुकना
रक्ष्—रक्षा करना
पच्—पकाना
वस्—रहना
त्यज्—त्यागना
दा (यच्छ्)—देना
पा (पिब्)—पीना
गम् (गच्छ्)—जाना
शुच्—शोक करना
स्था (तिष्ठ्)—ठहरना
जि—जीतना
स्मृ—याद करना
दृश् (पश्य्)—देखना
खाद्—खाना
चल्—चलना
दह्—जलाना
अर्ज्—कामना
अर्च्—पूजा करना

आत्मनेपदी

वेप्—काँपना
यत्—यत्न करना
शिक्ष्—सीखना
शङ्क्—शंका करना
कम्प्—काँपना
श्लाघ्—प्रशंसा करना
सह्—सहना
भाष्—बोलना
सेव्—सेवा करना
रभ्—आरम्भ करना
लभ्—पाना
वृध्—बढ़ना
मुद्—प्रसन्न होना
शुभ्—शोभा पाना
रुच्—पसन्द आना
वन्द्—प्रणाम करना
ईक्ष्—देखना
राज्—चमकना
रम्—खेलना

उभयपदी

बुध्—जानना	**याच्**—मांगना
हृ—चुराना, छीनना	**नी**—ले जाना

रूपावली ।

बुध् (उभयपदी)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्रथम पुरुष	बोधति	बोधतः	बोधन्ति	बोधते	बोधेते	बोधन्ते
	मध्यम पुरुष	बोधसि	बोधथः	बोधथ	बोधसे	बोधेथे	बोधध्वे
	उत्तम पुरुष	बोधामि	बोधावः	बोधामः	बोधे	बोधावहे	बोधामहे
लङ्	प्रथम पुरुष	अबोधत्	अबोधताम्	अबोधन्	अबोधत	अबोधेताम्	अबोधन्त
	मध्यम पुरुष	अबोधः	अबोधतम्	अबोधत	अबोधथाः	अबोधेथाम्	अबोधध्वम्
	उत्तम पुरुष	अबोधम्	अबोधाव	अबोधाम	अबोधे	अबोधावहि	अबोधामहि

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	बोधेत्	बोधेताम्	बोधेयुः	बोधेत	बोधेयाताम्	बोधेरन्
	मध्यम पुरुष	बोधेः	बोधेतम्	बोधेत	बोधेथाः	बोधेयाथाम्	बोधेध्वम्
	उत्तम पुरुष	बोधेयम्	बोधेव	बोधेम	बोधेय	बोधेवहि	बोधेमहि
लोट्	प्रथम पुरुष	बोधतु	बोधनाम्	बोधन्तु	बोधताम्	बोधेताम्	बोधन्ताम्
	मध्यम पुरुष	बोध	बोधतम्	बोधत	बोधस्व	बोधेथाम्	बोधध्वम्
	उत्तम पुरुष	बोधानि	बोधाव	बोधाम	बोधै	बोधावहै	बोधामहै
		भू (परस्मैपदी)			शिक्ष् (आत्मनेपदी)		
लट्	प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति	शिक्षते	शिक्षेते	शिक्षन्ते
	मध्यम पुरुष	भवस्ति	भवथः	भवथ	शिक्षसे	शिक्षेथे	शिक्षध्वे
	उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः	शिक्षे	शिक्षावहे	शिक्षामहे
लङ्	प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अशिक्षत	अशिक्षेताम्	अशिक्षन्त
	मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत	अशिक्षथाः	अशिक्षेथाम्	अशिक्षध्वम्
	उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम	अंशिक्षे	अशिक्षावहि	अशिक्षामहि

		एकवचन	द्विवचन	बहुवच	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	शिक्षेत	शिक्षेयाताम्	शिक्षेरन्
	मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत	शिक्षेथाः	शिक्षेयाथाम्	शिक्षेध्वम्
	उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम	शिक्षेय	शिक्षेवहि	शिक्षेमहि
लोट्	प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु	शिक्षताम्	शिक्षेताम्	शिक्षन्ताम्
	मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत	शिक्षस्व	शिक्षेथाम्	शिक्षध्वम्
	उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम	शिक्षै	शिक्षावहै	शिक्षामहै

लकारों का प्रयोग।

५३—जिन चार लकारों के रूप ऊपर दिए गए हैं उनके प्रयोग के लिए प्रसिद्ध नियम नीचे लिखे जाते हैं—

(क) लट्—१ जब क्रिया वर्तमान समय में हो तो धातु से परे लट् का प्रयोग होता है—रामः गृहं गच्छति (राम घर जाता है)।

२—वर्तमान के समीपवर्ती भूत और भविष्यत् काल में भी लट् का प्रयोग हो सकता है—कदा आगतः असि (कब आए हो), अयमागच्छामि (अभी आता हूं,) कदा गमिष्यसि (कब जाओगे,), एष गच्छामि (अभी जाता हूं)।

३—स्म शब्द के साथ भूत काल के अर्थ में लट् प्रत्यय आता है—रामः पठति स्म (राम पढ़ता था)।

(ख) लङ्—आज से भिन्न भूत काल के लिए लङ् का प्रयोग होता है। सः ह्यः ग्राममगच्छत् (वह कल घर गया)।

(ग) विधिलिङ्—इस का प्रधान अर्थ विधि (हुक्म) है। स्वर्गकामः यजेत। इस से अतिरिक्त आज्ञा, प्रार्थना, निमन्त्रण, हेतुहेतुमद्भाव (cause and effect) आदि अर्थों में भी प्रयुक्त होता है।

(घ) लोट्—आज्ञा, प्रार्थना, निमन्त्रण, आशीर्वाद-आदि अर्थों में लोट् का प्रयोग होता है। विधिलिङ् का प्रधान अर्थ विधि (हुक्म) है जो बड़े से छोटे को हो। इस लिए गुरु-आज्ञा और शास्त्र-आज्ञा आदि में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

त्वं ग्रामं गच्छ (लोट्)

सः पाठं पठेत् (विधिलिङ्)-इत्यादि

शब्दकोष

(क) शङ्ख	शङ्ख	प्रातः	प्रातःकाल(अ०)
ध्मा(धम्)(धा०)	बजाना	यज् (धा०)	पूजना
पद	पांव	विमार्ग	कुमार्ग
धाव् (धा०)	दौड़ना	निवृत्(धा०)	हटना
शुक	तोता	स्तेन	चोर
तत्त्व	सचाई	वस्तु	चीज़
उद्यान	बाग	कदा (अ०)	कब
आम्र	आम	प्रभा	प्रकाश
सोम	सोम,सोम रस		

चर्व् (धा०)	चबाना	तरुणी	युवती
पङ्गु (वि०)	लंगड़ा	आ+नी(धा०)	लाना
खग	पक्षी	पत्र	पत्ता
वर्षा	वर्षा ऋतु	दरिद्र	निर्धन
मयूर	मोर	रक्षितृ	रक्षा करने वाला
क्षय	नाश	तडाग	तालाब
पुण्य (वि०)	पवित्र	बालिका	लड़की
गान	गाना	आचार्य	गुरु
शोभन (वि०)	अच्छा	भागीरथी	गङ्गा
धूर्त	ठग	अव्+गाह्(धा०)	गाहना,न्हाना
शुण्ड	सूण्ड	तृषित	प्यासा
कष्ट	दुःख	मा (अ०)	मत

(ख) इशारा	इङ्गित	लाल	रक्त (वि०)
बुलाना	आ+ह्वे (धा०)	धूप	आतप
खाना	खाद् (धा०)	घास	तृण
प्रसन्न होना	प्र+सद् (प्र+सीद्)(धा०)	शहद	मधु
		मिठास	माधुर्य
दामाद	जामातृ	इनाम	पारितोषिक
बढ़ना	वृध् (धा०)	नया	नूतन,नूत्न(वि०)
चमकना	प्र+काश्(धा०)	उड़ना	डी(ड्य्)(धा०)
अन्धेरा	अन्धकार	रचना	रच् (धा०)
भूलना	वि+स्मृ (धा०)	चोटी	शिखर

अभ्यास ६

लट्

(क) देवदत्तः मुखेन शङ्खं धमति।
पादाभ्यां धावति बालः।
अहं वृक्षे शुकं पश्यामि।
यूयं तत्त्वं न बोधथ।
स्तेनः परेषां वस्तूनि हरति।
रात्रौ चन्द्रस्य प्रभया आकाशः शोभते।

दन्तैश्चर्वति तण्डुलान्।
पङ्गुः पादाभ्यां न चलति।
अयमहं पुस्तकं पठामि।
गजः शुण्डेन जलं पिबति।
आवां धनम् अर्जावः।
निर्धनः परेभ्यः कष्टं सहते।
तरुणीनद्याः जलम् आनयति।

लङ्

वृक्षात् पत्राण्यपतन्।
धनिकाः दरिद्रेभ्यः अन्नमयच्छन्।
दासः रक्षितारं यत्नेनासेवत।
अहं सत्यमभाषे।
गतायां रात्रौ तारकाणि नाराजन्त।

शिष्यः गुरोः पादयोः अनमत्।
सिंहः तडागात् जलमापिबत्।
बालिके पाठशालां पादाभ्यामगच्छताम्।
छात्रः आचार्यस्य भयादवेपत।
लक्ष्मणः रामस्याज्ञया सीतां वनेऽत्यजत्।

लोट्

वृक्षात् खगाः डयन्ताम्।
वर्षासु मयूराः प्रसीदन्तु।
आसने निषीदत।
जनाः धनं लभन्ताम्।

धनस्य क्षयं मा शोचत।
रात्र्यां लोकाः गृहाणि गच्छन्तु।

एतस्य कूपस्य जलं न पिबत।
आचार्यस्य आज्ञया पाठान् पठत।
उद्यानं गच्छत आम्राणिच आनयत।

विधि लिङ्

सोमं पिबेत् भवान्।
नरः सायं प्रातः यजेत।
पुनरपि पुण्यां भागीरथी-मवगाहेवहीत्यवदद्रामं सीता।
नृत्यं शिक्षेय वा गानम्।
यदि हरिः विमार्गात् निव-र्तेत शोभनं भवेत्।
शिष्यस्याविनयं गुरुः न सहेत।
विपत्तावपिधर्मं न त्यजेत्।
तृषिताय जलं यच्छेत्।
सुजनः धूर्तानां सङ्गं त्यजेत्।

—

(ख) हरि हाथ के इशारे से भाई को बुलाता है।
घर में चलो और खाना खाओ।
जो मैं देखूं यदि मिल जाय तो प्रसन्न हो जाऊँ।
वह कन्या को दामाद के घर ले गया।
पानी से वृक्ष बढ़े।
शिष्य गुरु को प्रणाम करें।
जो उस ने कहा है उसे याद रक्खो।
यदि तुम निराश भी हो जाओ तो अपना प्रण न छोड़ो।
जब सूर्य चमकता है तो अन्धेरा भाग जाता है।
जो शत्रुओं को जीतते हैं लोग उन की श्लाघा करतेहैं।
हम पढ़नेके लिये काशी गये।
वह बैल सरयू के तट पर गया।
इन में से कौन फल तुम्हें अच्छा लगता है?

प्रिय मित्रों को न भूलना।
उस स्त्री की आंखें रोने से लाल हो गईं।
राम ने वानरों की सहायता से रावण को जीता।
मैं उसको नहीं सराहता।
धूप से नदियों का पानी सूख गया।
शेर घास और पत्ते नहीं खाते।
इस नदी का जल न पियो।
शहद में मिठास रहती है।
सत्य बोलो।
मैं अध्यापक से न्याय पढ़ूं।
यदि मैं झूठ बोलूं तो आप मुझे दंड दें।
आज एक नया पाठ पढ़ो।
मैं ईश्वर का भजन करूं और अपना इष्ट पाऊं।
पक्षी वृक्ष की शाखा से उड़ गया।
उस ईश्वर को प्रणाम करें जिस ने यह संसार रचा।
वायु के वेग से वृक्ष कांपे।
लड़के के शरीर के दो वस्त्र आग से जल गये।
हरि ने राम को घर के शिखर से देखा।

तुदादिगण।

तुदादि गण का विकरण अ है। मुच्+अ+ति=**मुञ्चति**, मुच्+अ+एय=**मुञ्चेय** (६२ ग)।

धातुकोष (तुदादि गण)।

परस्मैपदी

स्पृश्—छूना
विश्—प्रवेश करना
सृज्—उत्पन्न करना
इष् (इच्छ्)—इच्छा करना
प्रच्छ् (पृच्छ्)—पूँछना

आत्मनेपदी

मृ (म्रिय्)—मरना

उभयपदी।

क्षिप्—फेंकना
तुद्—पीड़ा देना
सिच् (सिञ्च्)—सींचना
मिल्—मिलना
मुच् (मुञ्च्)—छोड़ना
कृत् (कृन्त्)—काटना

उभयपद

मुच् (मुञ्च्) छोड़ना

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्रथम पुरुष	मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
	मध्यम पुरुष	मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
	उत्तम पुरुष	मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
लङ्	प्रथम पुरुष	अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
	मध्यम पुरुष	अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
	उत्तम पुरुष	अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
	मध्यम पुरुष	मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत	मुञ्चेथाः	मुञ्चेथाम्	मुञ्चेध्वम्
	उत्तम पुरुष	मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि
लोट्	प्रथम पुरुष	मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
	मध्यम पुरुष	मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
	उत्तम पुरुष	मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै

		परस्मैपद इष् (इच्छ्)			आत्मनेपद मृ (म्रिय्)		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्रथम पु०	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
	मध्यम पु०	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
	उत्तम पु०	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
लङ्	प्र० पु०	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
	म० पु०	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
	उत्तम पु०	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि
विधि-लिङ्	प्रथम पु०	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
	म० पु०	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
	उ० पु०	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि
लोट्	प्र० पु०	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
	म० पु०	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
	उ० पु०	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

दिवादिगण ।

दिवादि गण का विकरण य है ।

नश्+य+मि=**नश्यामि** (६२ ख), युध्+य+वहे=**युध्यावहे** (६२ ख) ।

धातुकोष (दिवादिगण)

परस्मैपद

शम् (शाम्)—शान्त होना
श्रम् (श्राम्)—थकना
भ्रम् (भ्राम्)—घूमना
नृत्—नाचना
दिव् (दीव्)—चमकना, जुआ खेलना
पुष्—पुष्ट होना
शुष्—सूखना
तुष्—सन्तुष्ट होना
नश्—नष्ट होना
सिध्—सिद्ध होना
तृप्—तृप्त होना
मुह्—मोहित होना, अचेतन होना
शुध्—शुद्ध होना
क्रुध्—क्रुद्ध होना
कुप्—क्रुद्ध होना
अस्—फेंकना
लुभ्—लोभ करना

आत्मनेपदी

युध्—युद्ध करना
दीप्—चमकना
जन् (जा)—जन्म लेना
मन्—जानना
विद्—विद्यमान होना

		परस्मैपद दिव् (दीव्)			आत्मनेपद युध्		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्रथम पुरुष	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते
	मध्यम पुरुष	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे
	उत्तम पुरुष	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे
लङ्	प्रथम पुरुष	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त
	मध्यम पुरुष	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत	अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्
	उत्तम पुरुष	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्
	मध्यम पुरुष	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्
	उत्तम पुरुष	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि
लोट्	प्रथम पुरुष	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्
	मध्यम पुरुष	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
	उत्तम पुरुष	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै

चुरादिगण

चुरादिगण का विकरण अय है।

५४—(क) चुरादिगण में धातु के अन्त में यदि एक व्यञ्जन हो तो उसके पूर्व अ-भिन्न ह्रस्व स्वर को गुण होजाता है। जैसे—चुर्+अय+ति=चोरयति, तोलयति। भूषयति में गुण नहीं होता क्योंकि यहां भू का ऊ दीर्घ है। चिन्तयति में गुण नहीं होता क्योंकि धातु के अन्त में दो व्यञ्जन हैं।

(ख) यदि धातु के अन्तिम एक व्यञ्जन से पूर्व ह्रस्व अ हो तो वह अ दीर्घ हो जाता है। जैसे—ताड्+अय+ति=ताडयति। दण्डयति यहां दीर्घ नहीं होता क्योंकि धातु के अन्त में दो व्यञ्जन हैं।

धातु कोष (चुरादिगण)।

चुरादिगण के प्रायः सब धातु उभयपदी हैं।

चुर (चोर्)—चुराना	भूष—अलंकृत करना
तड (ताड्)—पीटना	भक्ष्—खाना
तुल् (तोल्)—तोलना	स्पृह्—इच्छा करना
दण्ड्—दण्ड देना	कथ्—कहना
रच्—रचना करना	पाल्—रक्षा करना

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	ताडयते	ताडयेते	ताडयन्ते
	मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	ताडयसे	ताडयेते	ताडयध्वे
	उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	ताडये	ताडयावहे	ताडयामहे
लङ्	प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	अताडयत	अताडयेताम्	अताडयन्त
	मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	अताडयथाः	अताडयेथाम्	अताडयध्वम्
	उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	अताडये	अताडयावहि	अताडयामहि
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः	ताडयेत	ताडयेयाताम्	ताडयेरन्
	मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	ताडयेथाः	ताडयेयाथाम्	ताडयेध्वम्
	उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	ताडयेय	ताडयेवहि	ताडयेमहि
लोट्	प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	ताडयताम्	ताडयेताम्	ताडयन्ताम्
	मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत	ताडयस्व	ताडयेथाम्	ताडयध्वम्
	उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	ताडयै	ताडयावहै	ताडयामहै

शब्दकोष

(क) भ्रमर	भौंरा	कन्दुक	गेंद
उप+विश् (धा०)	बैठना	प्रति (अ०)	ओर
छुरिका	छुरी	रव	शब्द
वृथा (अ०)	व्यर्थ	समस्त (वि०)	सब
सुवृत्त (वि०)	सदाचारी	लुब्ध (वि०)	लोभी
द्रुह् (धा०)	विद्रोह करना	तृष्णा	इच्छा
विद्ध	बींधा हुआ	अनावृष्टि	सोख
गोमय	गोबर	कासार	तालाब
वृश्चिक	बिच्छू	शासन	आज्ञा
रुग्ण (वि०)	रोगी	अति+क्रम् (धा०)	उलांघना

(ख) तराजू	तुला	वात	वार्ता
संतोषी	संतुष्ट (वि०)	कुत्ता	कुक्कुर
थोड़ा	स्वल्प (वि०)		

अभ्यास ७

(क) भ्रमराः कमलेषूपविशन्ति।
अरयः अरिभिः युध्यन्ताम्।
ईश्वरः संसारमसृजत्।
यस्मात् एतं प्रश्नं पृच्छेयं स एवास्योत्तरं यच्छेत्।
वत्स, अग्निं मा स्पृश।
व्याधः छुरिकया मृगमकृन्तत्।
नरः वृथा न भ्राम्येत्।
ये नृपस्य धनमचोरयन् तान् सः अदण्डयत्।
सुवृत्ताय नरपतये प्रजाः न द्रुह्येयुः।
राजकुमारस्यागमने जनाः गृहाण्यभूषयन्।
वयं पितरं प्रीणयेमहि।

गुरो, अस्मभ्यं धर्ममुपदिश।
सः करेण भूमिमस्पृशत्।
यः भूपतेः धनं चोरयेत् सः दण्डं लभेत।
रामस्याग्निना विद्धाः बहवः शूराः अम्रियन्त।
गोमयात् वृश्चिकाः अजायन्त।
ईश्वरः पापान् दण्डयेत्।
यः रुग्णः जायेत स औषधं पिबेत्।
गोपाल, कन्दुकं मां प्रति क्षिप।
जलेन वस्त्राणि क्षालयत।
सिंहस्य रवेण सा नार्यमुह्यत्।
रामः रावणस्य वधेन कीर्तिमविन्दत।
सुजनाः परेषामपि श्रियमिच्छन्ति।
राजपुरुषाः नृपस्याज्ञां समस्ते नगरे घोषयेयुः।
लुब्धानां धनस्य तृष्णा शाम्यतु।
अनावृष्टौ कासाराः शुष्यन्ति।
यः नृपस्य शासनं अतिक्रामयेत् स दण्डं लभेत।

(ख) हरि ने राम को नहीं सताया, उसे दण्ड न दो।
हम भूमि पर बैठते हैं।
नवमी को दशरथ के घर राम का जन्म हुआ।
वह तराजू में गेहूं तोले।
ईश्वर संसार को रचता है और पालता है।
वर्षा में मोर नाचते हैं।
सन्तोषी थोड़े से भी संतुष्ट होजाता है।
वही बात कहो जो सच्ची हो।
शहरों में कुत्ते और बनों में शेर घूमते हैं।
जो आग को छूता है, आग उसे जलाती है।
ज्ञान से बुद्धि और जल से शरीर शुद्ध होता है।
इसे मत पीटो इस ने पुस्तक नहीं चुराई।

यदि वह पढ़े तो विद्वान् हो जाय। जो थोड़ी सी बात पर	क्रोध करता है वह थोड़ी सी बात में प्रसन्न हो जाता है

व्यञ्जन सन्धि के नियम।

[illegible]५—(क) व्यञ्जन के निकट व्यञ्जन अथवा स्वर होने से व्यञ्जन में जो परिवर्त्तन होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। एक पद के अन्त और दूसरे पद के आदि वर्ण के मेल से जो व्यञ्जन सन्धि होती है, उसको समझने के लिए यह स्मरण रखना चाहिये कि किसी पद के अन्त में केवल यह आठ व्यञ्जन आ सकते हैं—

क, त, ट्, प्, ङ, न्, म और (:)

(ख) पद के अन्त में यदि कोई अन्य व्यञ्जन हो, वह इन्हीं आठों में कोई एक बन जाता है—

(१) वर्गों के दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण के स्थान में पहला वर्ण हो जाता है। सुहृद्=सुहृत्, ककुभ्=ककुप्।

(२) च् ञ् को क् ङ्, ज् श् और ह् को क् या ट् हो जाता है। प्रत्यञ्=प्रत्यङ्, वाच्=वाक्, स्रज्=स्रक्, सम्राज्=सम्राट्, तादृश्=तादृक्, विश्=विट्, दुह्=धुक्, लिह्=लिट्।

(३) र् और स् के स्थान में विसर्ग हो जाता है। पुनर्=पुनः, रामस्=रामः।

(४) ष् को ट् होजाता है। द्विष्=द्विट्।

(५) ल्, व्, य् पद के अन्त में नहीं पाये जाते। पदों में सन्धि करने के पूर्व पहले पद के अन्त्य व्यञ्जन को पूर्वोक्त वर्णों में से किसी एक रूप में ले आना आवश्यक है। समास के पहले पदों

पर भी यही नियम लागू हैं। वाच् पटुः=वाक्पटुः, दिश् शूलम् =दिक्शूलः।

(ग) पद के अन्त में एक से अधिक व्यञ्जन नहीं रहते। जहां हों, वहां पहिले के अतिरिक्त शेष का लोप होजाता है। * सुहृद्स्=सुहृद्=सुहृत्, महान्स्=महान्।

प्रयत्न का समीकरण।

५६—घोष वर्ण परे होने पर पद के अन्त का अघोष व्यञ्जन (क्, ट्, त् प्) घोष (क्रमशः ग्, ड्, द्, ब्,) हो जाता है। दिक्+अन्तः=दिगन्तः, दिक्+गजः=दिग्गजः, परिव्राट्+अयम्= परिव्राडयम्, सम्राट्+गच्छति=सम्राड्गच्छति, जगत्+ईशः=जगदीशः. महत्+धनम्=महद्धनम्, अप्+जः=अब्जः, ककुप्+अत्र= ककुबत्र।

(क) परला वर्ण यदि ह् हो तो वह स्वयं पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा हो जाता है। तत्+हितम्=तद्+हितम्=तद्+धितम्= तद्धितम्।

(ख) अघोष व्यञ्जन (क्, ट्, त्, प्,) के परे न्, म् हों तो पूर्व वर्ण को क्रम से ङ्, ण्, न् म्, हो जाते हैं। दिक्+नागः= दिङ्नागः, षट्+मासाः=षण्मासाः, जगत्+नाथः=जगन्नाथः। †

(ग) त् के परे ल् हो तो त् को ल् हो जाता है। तत्+ लब्धम्=तल्लब्धम्।

(घ) न् के परे ल् हो तो न् को अनुनासिक ल् (ल्ँ) हो जाता है (अर्थात् उसका उच्चारण नासिका की सहायता से होता है।) महान्+लाभः=महाँल्लाभः।

* परन्तु नाम वा धातु के र् से संयुक्त क्, ट्, त् का लोप नहीं होता। अमार्ट्, ऊर्क्।

† प् को अनुनासिक म् होने के उदाहरण प्रचलित संस्कृत में नहीं मिलते। अप्+मूलम=अम्मूलम्-इत्यादि वैयाकरणों के बनाए हुए हैं।

(ङ) न् के परे यदि च् छ, ट् ठ, त् थ् हों तो न् को अनुस्वार (ं) होजाता है और बीच में क्रम से श्, ष्, स् आ जाते हैं । कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्, पाशान्+छेत्तुम्=पाशांश्छेत्तुम्, चलन्+टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः, पतन्+तरुः=पतंस्तरुः ।

स्थान का समीकरण ।

५७—स्थान के समीकरण में केवल त्, न्, म् और (ः) को परिवर्तन होता है ।

(क) त्, न् तालव्य वर्ण से मिलें तो त्, न् तालव्य (च्, ञ्) हो जाते हैं, यदि मूधन्र्य (ष भिन्न) वर्ण से मिलें तो त्, न् मूर्धन्य (ट्, ण्) हो जाते हैं। तत्+च=तच्च, एतत्+छादनम्=एतच्छादनम्, तत्+जायते=तज्जायते, एतत्+ठक्कुरः=एतट्ठक्कुरः, तत्+टीका=तट्टीका, तान्+जयति=ताञ्जयति, महान्+डमरुः=महाण्डमरुः ।

(ख) त् न् के परे परे श् हो तो श् स्वयं भी प्रायः छ् हो जाता है—तत्+श्रुत्वा=तच्+श्रुत्वा=तच् छ्रुत्वा । भवान्+शृणोति=भवाञ्+शृणोति=भवाञ्छृणोति ।

(ग) म् के परे य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् हों तो म् को अनुस्वार हो जाता है—तम्+वद=तं वद, मधुरम्+हसति=मधुरं हसति, कष्टम्+सहते=कष्टं सहते ।

(घ) म् के परे पाँच वर्गों का कोई व्यञ्जन हो तो म् को अनुस्वार हो जाता है या उसी वर्ग का पाँचवां वर्ण हो जाता है—किम्+करोति=किं करोति या किङ्करोति, किम्+फलम्=किं फलम् या किम्फलम् । गाम्+चारयति=गां चारयति या गाञ्चारयति ।

द्वित्व ।

५८-(क) पदान्त न् के पहले ह्रस्व स्वर हो और पीछे स्वर

हो तो न् को द्वित्व* हो जाता है—धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः।

(ख) स्वर मे परे छ् को च्छ् हो जाता है। किन्तु पद के अन्त के दीर्घ स्वर मे परे छ् को च्छ् विकल्प से होता है—

राच्छति, श्लेच्छः, तरु+छाया=तरुच्छाया, परन्तु वदरी+छाया=वदरीछाया या वदरीच्छाया।

विसर्ग सन्धि।

५९—(क) च छ, ट ठ, त थ परे हों तो विसर्ग को क्रम से श्, ष्, स् हो जाता है—गौः+चरति=गौश्चरति, रामः+टीकते=रामष्टीकते, नरः+तरति=नरस्तरति।

(ख) श्, ष्, स् परे हों तो विसर्ग को विकल्प से क्रमशः श्, ष्, स् हो जाते हैं—हरिः+शेते=हरिश्शेते या हरिःशेते। कः षष्ठः=कष्षष्ठः या कः षष्ठः। प्रथमः+सर्गः=प्रथमस्सर्गः या प्रथमः सर्गः।

(ग) विसर्ग के पहले अ, आ के विना कोई स्वर हो और विसर्ग के परे कोई घोष वर्ण हो तो विसर्ग को र् हो जाता है—कविः+अयम्=कविरयम्, हरिः+गच्छति=हरिर्गच्छति, वायुः+वाति=वायुर्वाति, राजपुत्रैः+उक्तम्=राजपुत्रैरुक्तम्।

(घ) विसर्ग के पूर्व आ हो और परे घोष वर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है—देवाः+अवदन्=देवा अवदन्, अश्वाः+धावन्ति=अश्वा धावन्ति।

(ङ) विसर्ग के पूर्व अ हो और परे अ के विना कोई

* इसी प्रकार ङ् के द्वित्व के थोड़े से उदाहरण मिलते हैं—प्रत्यङ्+इह=प्रत्यङ्ङिह

स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है—रामः+उवाच=राम उवाच, कः+एषः=क एषः।

(च) विसर्ग के पूर्व अ हो और परे अ या घोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग को उ हो जाता है—नरः+अयम=नर+उ+अयम्=नरो अयम्=नरोऽयम् (१७च),मनः+रथः=मन+उ+रथः=मनोरथः।

(छ) जो विसर्ग र का बना हो उसे घोष वर्ण परे होने पर र् ही हो जाता है—पुनः+वदति=पुनर्वदति, पितः+अपि=पितरपि।

(ज) सः, एषः के विसर्ग का लोप होता है यदि अ के बिना कोई वर्ण परे हो—सः+आगतः=स आगतः, एषः+गच्छति= एष गच्छति, परन्तु सः+अभवत्=सोऽभवत्।

पूर्व वर्ण	विसर्ग-परिवर्तन	परवर्ण	उदाहरण
स्वर	श्, ष्, स्	च् छ्,ट्,ठ्, त् थ्	सौश्चरति,रामष्टीकते, नरस्तरति
स्वर	श्, ष्, स् विकल्प से	श् , ष्, स्	हरिश्शेते या हरिः शेते
स्वर (अ, आ से भिन्न)	र्	स्वर या घोष वर्ण	हरिर्गच्छति
आ	लोप	घोष वर्ण	देवा अवदन्
अ	लोप	स्वर (अ भिन्न)	राम उवाच
अ	उ	अ या घोष व्यञ्जन	नरोऽयम्, मनोरथः

नोट—जहां विसर्ग का लोप हुआ हो वहां फिर सन्धि नहीं होती। रामः+उवाच=राम उवाच ही रहेगा रामोवाच नहीं होगा।

अभ्यास ८

(क) सन्धि करो ।

किम्+तु ।
किम्+चित् ।
बुद्धिमान्+लोकः ।
हसन्+इव ।
मकरः+अपि+आह
इतः+ततः ।
कुतः+भयात् ।
कः+चित्+लक्ष्यते ।
व्याघ्रः+नष्टः ।
वानरात्+अन्यः ।

बुद्धिः+यस्य ।
तत्+च ।
वाक्+दानम् ।
हरेत्+श्येनः ।
एषः+आर्यः ।
विपद्+जालम् ।
परि+छेदः ।
ग्रन्थः+अधीतः ।
वाक्+रोधः ।
शीतलः+वायुः ।

(ख) सन्धि छेद करो ।

तच्छरीरम् ।
पाशांश्छिन्धि ।
गुरोरपि ।
किङ्करोमि ।
धावन्नश्वः ।

पूर्णश्चन्द्रोऽयम् ।
जगदीशः
यावच्चासौ ।
मुनिरवदत् ।
त ऊचुः ।

(ग) शुद्ध करो ।

महालाभः ।
शांतः ।
हसनिव ।

कुतागतः ।
एषो गच्छति ।
रामोवाच ।

व्यञ्जनान्त नाम (१)

६०—जिन नामों के अन्त में व्यञ्जन हो उन के लिये वही विभक्तियां आती हैं जो २२ में दी गई हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्	औ	अस्
द्वितीया	अम्	औ	अस
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्
सप्तमी	इ	ओस	सु

६१—व्यञ्जनान्त नाम पूरे पद समझे जाते हैं। जब उन से परे भ्याम्, भिस्, और सु विभक्तियां आवें तो उन के परे होने पर वह नियम लागू होंगे जो पदान्त में होते हैं (देखो नियम ५१)।

मरुत् (पुंलिङ्ग) (वायु)

मरुत्+स्=मरुत्स् (५१ ग)

६१—मरुत्+भ्याम्=मरुद्भ्याम (५६ क)

प्रथमा	मरुत्	मरुतौ	मरुतः
द्वितीया	मरुतम्	,,	,,
तृतीया	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुद्भिः
चतुर्थी	मरुते	,,	मरुद्भ्यः
पञ्चमी	मरुतः	,,	,,
षष्ठी	,,	मरुतोः	मरुताम्
सप्तमी	मरुति	,,	मरुत्सु

इसी प्रकार सरित् (स्त्रीलिङ्ग)।

६२—नपुंसक में पुंलिङ्ग से केवल प्रथमा और द्वितीया में भेद होता है। नपुंसक नामों के प्रथमा और द्वितीया का द्विवचन ई और बहुवचन इ होता है।

६३—इ (ए०, द्वि० बहुवचन) विभक्ति परे होने पर नपुंसक नामों के अन्त्य स्वर से परे न आजाता है यदि र, र और म अन्त्य में न हों। जगत्+इ=जगन्त्+इ=जगन्ति, परन्तु वार्+इ=वारि।

जगत् (नपुंसक)

प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष मरुत् की तरह।

भूभृत्, विजित, भाष्यकृत् आदि के रूप मरुत् की तरह बनते हैं। इसी प्रकार सुहृद् (पुं०) आदि दकारान्त, समिध् (स्त्री०) आदि धकारान्त शब्दों के रूप बनते हैं।

सुहृद्+स्=सुहृद्स्=सुहृद् (५५-ग)=सुहृत् (५५ ख १)

सुहृद्+सु=सहृत्+सु=सुहृत्सु (५५ ख १)

समिध्+स्=समिध्स्=समिध् (५५-ग)=समित् (५५-ख१)

समिध्+भ्याम्=समिध्भ्याम्=समित् भ्याम् (१९-ख)

समिद्भ्याम् (५६—क)

समिध्+सु=समित्सु (५५-ख १)

इस प्रकार के व्यञ्जनान्त नामों के रूप स्मरण करने के लिए यह पर्याप्त होगा कि प्रथमा एकवचन (स्) और प्रथमा, तृतीया, और सप्तमी के बहुवचन (अस्, भिस्, सु) के रूप स्मरण कर लिए जावें।

६४—तालव्यान्त नामों के अन्त्य व्यञ्जन में से च् पदान्त

में सदा क् हो जाता है, ज् और श् प्रायः क्, परन्तु कभी २ ट् हो जाते हैं—(५५-ख-२)।

वाच्+सु=वाक्स्=वाक्
वाच्+भ्याम्=वाक्+भ्याम्=वाग्भ्याम् (५६ क)
वाच्+सु=वाक्+सु=वाक्+षु=वाक्षु
सम्राज्+सु=सम्राज्स्=सम्राज्=सम्राट्
सम्राज्+भिः=सम्राट्+भिः=सम्राड्+भिः

नाम	प्रथमा एकव०	प्रथमा बहु०	तृतीया बहु०	सप्तमी बहु०
वाच् (स्त्री०)	वाक्	वाचः	वाग्भिः	वाक्षु
वणिज् (पुं०)	वणिक्	वणिजः	वणिग्भिः	वणिक्षु
सम्राज (पुं०)	सम्राट्	सम्राजः	सम्राड्भिः	सम्राट्सु
दिश (स्त्री०)	दिक्	दिशः	दिग्भिः	दिक्षु
विश् (पुं०)	विट्	विशः	विड्भिः	विट्सु

वाच् की तरह त्वच् (स्त्री), जलमुच् (पुं०) आदि के, वणिज् की तरह रुज् (स्त्री०), असृज् (नपुं०) भिषज् (पुं०) स्रज् (स्त्री०) आदि के, सम्राज् की तरह, परिव्राज् का, दृश् की तरह तादृश् आदि के रूप बनते हैं।

प् (५५-ख ४) नियम से पदान्त में ट् बन जाता है।

द्विष् (पुं०)	द्विट्	द्विषः	द्विड्भिः	द्विट्सु
प्रावृष् (स्त्री०)	प्रावृट्	प्रावृषः	प्रावृड्भिः	प्रावृट्सु

६५—ह् को पदान्त में प्रायः क् होता है (परन्तु उपानह् के ह् को त् और लिह् आदि के ह को ट् होता है)।

उष्णिह् (स्त्री०)	उष्णिक्	उष्णिहः	उष्णिग्भिः	उष्णिक्षु
उपानह् (,,)	उपानत्	उपानहः	उपानद्भिः	उपानत्सु

६६—रकारान्त नामों का र् केवल प्रथमा एकवचन में

विसर्ग होजाता है। पदान्त में र् के पूर्व 'इ उ' को दीर्घ होजाता है—

द्वार् (स्त्री०)	द्वाः	द्वारः	द्वार्भिः	द्वार्षु
गिर् (स्त्री०)	गीः	गिरः	गीर्भिः	गीर्षु
पुर् (स्त्री०)	पूः	पुरः	पूर्भिः	पूर्षु

६७—नपुंसक में सकारान्त नामों के प्रथमा द्वितीया के बहुवचन में न् आने से, पहले स्वर को दीर्घ होजाता है; पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में स् का पूर्ववर्ती अ दीर्घ होजाता है।

हविस् (नपुं०)+इ=हवि न् स् इ=हवींषि

उषस् (स्त्री०)+स्=उषस्स्=उषस्=उषास्=उषाः।

हविस् (नपुं०)

हविः	हविषी	हवींषि
,,	,,	,,
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
हविषे	,,	हविर्भ्यः
हविषः	,,	,,
,,	हविषोः	हविषाम्
हविषि	,,	हविःषु

इसी प्रकार आयुस्, धनुस् आदि के रूप बनते हैं। यशस् (नपुंसक) का केवल भ्याम् आदि से पूर्व यशस्+भ्याम्=यशः+भ्याम्=यश+उ+भ्याम्=यशोभ्याम् होगा।

उषस् (स्त्री०)

उषाः	उषसः	उषोभिः	उषःसु

इसी प्रकार वेधस्, सुमनस्, चन्द्रमस् आदि—

आशिस् (स्त्री०) का पदान्त में इ दीर्घ हो जाता है।

आशीः	आशिषः	आशीर्भिः	आशीःषु

(क) भूभृत्	राजा	उद्+अय	निकलना
महीभृत्	राजा	ऋत्विज	यज्ञ करने वाला
वेदना	पीड़ा	तडित्	बिजली
प्रभूत (वि०)	बहुत	सुहृद्	मित्र
दिश्	दिशा	जगत्	संसार
हविस्	घी आदि, हवन की सामग्री	कातर (वि०)	भीत
		क्षुध्	भूख
वियत्	आकाश	महीरुह्	वृक्ष
विपद्	विपत्ति	मृद्	मिट्टी
त्विष्	कान्ति	वेधस्	ब्रह्मा
सुखभाक् (वि०)	सुखी	निनाद	शब्द
पुर	शहर	चन्द्रमस्	चांद
अभिधान	नाम	उपानह्	जूता
वाच्	वाणी		

(ख) पत्थर	दृशद्, दृषद्	जल	वार्
पक्का	दृढ	माला	स्रज्
आकाश	नभस्	आशीर्वाद	आशिस्
आसमान	वियत्	तम	तमस्
आग	हुतभुज	सिर	शिरस्
वस्त्र	वासस्		

अभ्यास ९

(क) भूभृतः सकाशात् आगतः दूतः पुरं प्राविशत् ।

महीभृदिति पर्वतस्य नृपस्य चाभिधानम्।
कवीनां वाचि माधुर्यं वर्तते।
चन्द्रमाः करैः महीरुह-सम्पृक्तात्।
पूर्वस्यां दिशि सूर्य उदयते।
घटा भूमौ विकाराः।
अग्नौ हविः प्रास्यन्ति ऋत्विजः।
विलक्षणा इयं वेधसः सृष्टिः।
वियति तडितः निनादः चित्तमाह्लादयते।
विपदि यः सुहृत् स यथार्थः सुहृत्।
सुहृदः जगति दुर्लभाः।
चन्द्रमसः त्विषा प्राणभृतः तुष्यन्तु।
किं ते हृक् कातरा वर्तते।
स्वराज्ये जनाः सुखभाजो वर्तन्ते।
सभ्याः पादयोरुपानहं शिरसि चोष्णीषं धारयन्ति।

(ख) राजा मनुष्यों में देवता है।
सम्पत्ति विपत्ति का घर है।
पत्थरों के बने घर पक्के होते हैं।
आग से जले घर को नल ने देखा।
माता लड़कियों को आशीर्वाद देती है।
इन दोनों वस्त्रों को पहनो।
आकाश काला होगया।
गङ्गा का जल सफेद है।
मित्र से कलह मुझे नहीं भाता।
जगत् में पुत्र का उत्पन्न होना उत्सव का कारण है।
प्रतिपत् को पाठ न पढ़ना चाहिए।
शत्रुओं के शिरों पर मारो।
जो मन से ईश्वर को याद करते हैं वे ही सुख के भागी होते हैं।
आसमान में चांद है।
हरि कण्ठ में फूलों की माला पहने।

व्यञ्जनान्त नाम (२)

६८—इस प्रकरण में उन व्यञ्जनान्त नामों के रूप दिये जाते हैं जिन के रूपों में दो वा तीन प्रकार का परिवर्तन (Change) होता है।

१ दो प्रकार के परिवर्तनों वाले व्यञ्जनान्त नाम।

(क) त्-अन्त वाले जिन नामों के अन्त में प्रत्यय का त् है। जैसे-अदत् (अद्+अत्-यहां अत् कृत्-प्रत्यय है), दास्यत् (दा+स्यत्-यहां स्यत् कृत्-प्रत्यय है), धनवत् (धन+वत्-यहां वत् तद्धित प्रत्यय है) श्रीमत् (श्री+मत्-यहां मत् तद्धित प्रत्यय है)।

(ख) जिन के अन्त में 'इन्' है। जैसे धनिन् (धन+इन्-यहां इन् तद्धित प्रत्यय है)। भाविन् (भू=भाव+इन् यहां इन् कृत्-प्रत्यय है)

(ग) जिन के अन्त में ईयस् (तद्धित प्रत्यय का यस्) है। जैसे-बलीयस् (बल+ईयस्), श्रेयस्, गरीयस्, महीयस्।

तकारान्त

६९—(क) जिन के अन्त में अत् है उन के पहले पांच वचनों (स् औ अस्, अम् औ) में त् से पूर्व न् लग कर अन्त् बन जाता है। जैसे अदत्+स्=अदन्त् स्=अदन् (५५ ग)। दास्यत्+औ=दास्यन्तौ। धनवत्+अस्=धनवन्तः। अदत्+ए=अदते, अदत्+आम्=अदताम्, बलवताम् इत्यादि में अत् अन्त् नहीं बनता।

(ख) १-जो अत्-अन्त वाले शब्द भ्वादि, दिवादि और चुरादि गणों के धातुओं के आगे अत् लग कर बनते हैं, उन के नपुंसक लिङ्ग के प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन में त् से पूर्व न् नित्य लगता है। जैसे-पठत (पठ् (भ्वा०)+अत्) से पठन्ती,

नश्यत् (नश (दि०)+य+अत्) से नश्यन्ती, चोरयत् (चोर् (चु०)+अय+अत्) से चोरयन्ती।

२—जो तुदादिगण के धातुओं से अत् लग कर बनते हैं, उन में न् विकल्प से लगता है। जैसे तुदत् (तुद् (तु०)+अत्) से तुदन्ती-तुदती।

३—शेष छः गणों के धातुओं से अत् लग कर जो शब्द बनते हैं उन में कभी नहीं लगता। अदत् (अद् (अदादि)+अत्) से अदन्ती।

४—जिन के अन्त में तद्धित प्रत्ययों का अत् (वत्, मत्) है उन में भी न् नहीं लगता। धनवत् से धनवती, श्रीमत् से श्रीमती।

टिप्पणी—अत् अन्त वाले शब्दों का जो रूप नपुंसक के प्रथमा वा द्वितीया के द्विवचन में ई परे होने पर बनता है, वही स्त्रीलिङ्ग में स्त्री-प्रत्यय ई परे होने पर बनता है। फिर उसका उच्चारण नदी की तरह होता है। जैसे पठत् से पठन्ती, पठन्त्यौ, पठन्त्यः। तुदत् से तुदती, तुदत्यौ, तुदत्यः वा तुदन्ती, तुदन्त्यौ, तुदन्त्यः। श्रीमत् से श्रीमती, श्रीमत्यौ, श्रीमत्यः।

पुंलिङ्ग

तकारान्त अदत् (eating) अद् (to eat) से—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदन्	अदन्तौ	अदन्तः
द्वितीया	अदन्तम्	,,	अदतः
तृतीया	अदता	अदद्भ्याम्	अदद्भिः
चतुर्थी	अदते	,,	अदद्भ्यः
पञ्चमी	अदतः	,,	,,

षष्ठी	अदतः	अदतोः	अदताम्
सप्तमी	अदति	,,	अदत्सु
सम्बोधन	अदन्	अदन्तौ	अदन्तः

नपुंसक अदत्

प्रथमा	अदत्	अदती	अदन्ति
द्वितीया	,,	,,	,,

शेष पुँल्लिङ्गवत् ।

तकारान्त पुँल्लिङ्ग दास्यत् (one who will give)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दास्यन्	दास्यन्तौ	दास्यन्तः
द्वितीया	दास्यन्तम्	,,	दास्यतः
तृतीया	दास्यता	दास्यद्भ्याम्	दास्यद्भिः
चतुर्थी	दास्यते	,,	दास्यद्भ्यः
पञ्चमी	दास्यतः	,,	,,
षष्ठी	,,	दास्यतोः	दास्यताम्
सप्तमी	दास्यति	,,	दास्यत्सु
सम्बोधन	दास्यन्	दास्यन्तौ	दास्यन्तः

महत्

७०—महत् में भी अत् अन्त वाले शब्दों की तरह त् से पूर्व न् पहले पांच वचनों में लग जाता है। साथ ही ह का अ भी दीर्घ हो जाता है। किन्तु सम्बोधन के एकवचन में दीर्घ नहीं होता।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	,,	महतः

तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	,,	महद्भ्यः
पञ्चमी	महतः	,,	,,
षष्ठी	,,	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	,,	महत्सु
सम्बोधन	महन्	महान्तौ	महान्तः

नपुंसक

महत्	महती	महान्ति

स्त्रीलिङ्ग में महती नदीवत् ।

७१—जहां अत् से पहिले धातु को द्वित्व हुआ हो वहां के त् मे पूर्व न् नहीं आता । किन्तु नपुंसक के प्रथमा द्वितीया बहुवचन में न् विकल्प से लगता है । जैसे—ददत्+इ=ददति-ददन्ति ।

ददत् (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ददत्	ददतौ	ददतः
द्वितीया	ददतम्	,,	,,
तृतीया	ददता	ददद्भ्याम्	ददद्भिः
चतुर्थी	ददते	,,	ददद्भ्यः
पञ्चमी	ददतः	,,	,,
षष्ठी	,,	ददतोः	ददताम्
सप्तमी	ददति	,,	ददत्सु
सम्बोधन	ददत्	ददतौ	ददतः

ददत् (नपुंसक लिङ्ग)

प्रथमा, द्वितीया	ददत्	ददती	ददति,ददन्ति

शेष पुँलिङ्गवत् ।

वत्-मत् प्रत्ययान्त।

७२—वत्, मत्—प्रत्ययान्तों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं। भेद केवल इतना ही है, कि पुँल्लिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में वत् और मत् के अ को दीर्घ हो जाता है, जैसे धनवत् का धनवान् न कि धनवन्, और श्रीमत् का श्रीमान् न कि श्रीमन्, हां सम्बोधन में धनवन् और श्रीमन् ही होंगे। और स्त्रीलिङ्ग में ई आकर धनवती, श्रीमती बनकर नदीवत् होंगे।

धनवत् (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनवान्	धनवन्तौ	धनवन्तः
द्वितीया	धनवन्तम्	,,	धनवतः
तृतीया	धनवता	धनवद्भ्याम्	धनवद्भिः
चतुर्थी	धनवते	,,	धनवद्भ्यः
पञ्चमी	धनवतः	,,	,,
षष्ठी	,,	धनवतोः	धनवताम्
सप्तमी	धनवति	,,	धनवत्सु
सम्बोधन	धनवन्	धनवन्तौ	धनवन्तः

श्रीमत् (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वितीया	श्रीमन्तम्	,,	श्रीमतः
तृतीया	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
चतुर्थी	श्रीमते	,,	श्रीमद्भ्यः
पञ्चमी	श्रीमतः	,,	,,
षष्ठी	,,	श्रीमतोः	श्रीमताम्

सप्तमी	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सम्बोधन	श्रीमन	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः

नपुंसक में

प्रथमा द्वितीया	धनवत्	धनवती	धनवन्ति
	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति

शेष पुंलिङ्गवत् ।

टिप्पणी—भवत् शब्द दो प्रकार के हैं । एक भू धातु से अत् लग कर अत् अन्त वाला भवत्, और दूसरा सर्वनाम भवत् (=आप) । सर्वनाम भवत् के रूप वत् अन्त वाले शब्दों की तरह होते हैं । जैसे—भवत् (सर्वनाम) भवान् भवन्तौ भवन्तः और भवत् (अत् अन्त के रूप) भवन् भवन्तौ भवन्तः ।

नकारान्त इन् अन्तवाले ।

७२—प्रथमा के एकवचन में इन् के इ को दीर्घ होता है और न् का लोप होता है । जैसे धनिन्+सु=धनिन्=धनी । सम्बोधन में नहीं होता—धनिन्+सु=धनिन् । व्यञ्जनादि विभक्ति परे होने पर नकारान्तों के न् का लोप होता है । राजन्+भ्याम्=राजभ्याम् । धनिन्+सु=धनिसु=धनिषु ।

धनिन् (Possessing wealth) (पुंलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनी	धनिनौ	धनिनः
द्वितीया	धनिनम्	,,	,,
तृतीया	धनिना	धनिभ्याम्	धनिभिः
चतुर्थी	धनिने	,,	धनिभ्यः
पञ्चमी	धनिनः	,,	,,
षष्ठी	,,	धनिनोः	धनिनाम्

सप्तमी	धनिनि	धनिनोः	धनिषु
सम्बोधन	धनिन्	धनिनौ	धनिनः

नपुंसक

प्र०–द्वि०,	धनि	धनिनी	धनीनि
सम्बोधन	धनि, धनिन्		

शेष पुंल्लिङ्गवत्

इसी प्रकार गुणिन्, स्वामिन्, मनस्विन्, वाग्मिन् आदि के रूप जानो।

स्त्री लिङ्ग में इन के अन्त में ई आकर धनिनी गुणिनी, स्वामिनी मनस्विनी, वाग्मिनी आदि के रूप नदी की नाईं होते हैं

सकारान्त ईयस् प्रत्ययान्त।

७४—पहले पांचवचनों (सु, औ, अस्, अम्, औ) में यस् को यान्स् हो जाता है। जैसे गरीयस्+सु=गरीयान्स्+सु=गरीयान्स्=गरीयान्। गरीयस्+औ=गरीयान्स्+औ=गरीयांस्+औ=गरीयांसौ।

सम्बोधन में यस् का अ ह्रस्व ही रहता है। गरीयन्—

गरीयस् (Heavier)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
द्वितीया	गरीयांसम्	,,	गरीयसः
तृतीया	गरीयसा	गरीयोभ्याम्	गरीयोभिः
चतुर्थी	गरीयसे	,,	गरीयोभ्यः
पञ्चमी	गरीयसः	,,	,,
षष्ठी	,,	गरीयसोः	गरीयसाम्

सप्तमी	गरीयसि	गरीयस्सोः	गरीयःसु
सम्बोधन	गरीयन्	गरीयांसौ	गरीयांसः

२—तीन प्रकार के परिवर्तनों वाले व्यञ्जनान्त नाम।

७५—(क) वे नकारान्त जिनके अन्त में अन् है। जैसे—राजन् तक्षन्, युवन्—इत्यादि।

(ख) वे सकारान्त जिनके अन्त में वस् प्रत्यय है। जैसे विद्वस्।

अन्—अन्त

७६—(क) अन् अन्त वालों के अन् के अ को पहले पांच वचनों (सु, औ, अस्, अम्, औ) में दीर्घ होता है। जैसे—राजन्+औ=राजान् औ=राजानौ।

(ख) प्रथमा के एकवचन में न् का लोप भी होता है। राजन्+स्=राजान्स्=राजान=राजा।

(ग) सम्बोधन में दीर्घ और नलोप नहीं होते। जैसे—राजन्।

(घ) द्वितीया के बहुवचन से लेकर स्वरादि विभक्ति परे होने पर न् से पूर्व अ का लोप होजाता है। जैसे राजन्+अस्=राज्न्+अस्=राज्ञ्+अस्=राज्ञस्=राज्ञः।

(ङ) सप्तमी का एकवचन और नपुंसक के प्रथमा, द्वितीया का द्विवचन परे होने पर अ का लोप विकल्प से होता है। राजन्+इ=राजन् इ=राज्ञ् इ=राज्ञि वा राजनि।

राजन् (A king)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	,,	राज्ञः

तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	,,	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	,,	,,
षष्ठी	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राजनि, राज्ञि	,,	राजसु
सम्बोधन	राजन्	राजानौ	राजानः

अपवाद—वन् (जैसे यज्वन्) और मन् (जैसे आत्मन्) जिनके अन्त में हो, उनके अ का लोप नहीं होता। जैसे यज्वन्+आ=यज्वना, आत्मन्+आ=आत्मना, कर्मन् (नपुंसक)+ई=कर्मणी।

यज्वन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यज्वा	यज्वानौ	यज्वानः
द्वितीया	यज्वानम्	,,	यज्वनः
तृतीया	यज्वना	यज्वभ्याम्	यज्वभिः
चतुर्थी	यज्वने	,,	यज्वभ्यः
पञ्चमी	यज्वनः	,,	,,
षष्ठी	,,	यज्वनोः	यज्वनाम्
सप्तमी	यज्वनि	,,	यज्वसु
सम्बोधन	यज्वन्	यज्वानौ	यज्वानः

आत्मन्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	,,	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	,,	आत्मभ्यः

पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	,,	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

नपुंसक

नामन् (Name)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० द्वि० सं०	नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि

शेष राजन्वत् ।

कर्मन् (An act)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० द्वि० सं०	कर्म	कर्मणी	कर्माणि

शेष आत्मन्वत् ।

अ लोप वाले स्थलों में श्वन् को शुन् और युवन् को यून् होजाता है। जैसे श्वन्+आ=शुन् आ=शुना, युवन्+आ=यूना ।

श्वन् (A dog)

प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	,,	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	,,	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	,,	,,
षष्ठी	,,	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	,,	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्	श्वानौ	श्वानः

युवन् (A young man)

प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	,,	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवाभिः
चतुर्थी	यूने	,,	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	,,	,,
षष्ठी	,,	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	,,	युवसु
सम्बोधन	युवन्	युवानौ	युवानः

पथिन् (A road)

पथिन् के रूप इस प्रकार हैं।

प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	,,	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	,,	,,
षष्ठी	,,	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	,,	पथिषु

नपुंसक विशेष शब्द-अहन्

न लोप वाले स्थलों में अहन् को अहः हो जाता है।

प्र० द्वि०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	,,	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	,,	,,
षष्ठी	,,	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहानि	,,	अहःसु अहस्सु
सम्बोधन	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि

वस् अन्तवाले

७७—इन के तीन रूप होते हैं। पहले पाञ्च वचनों में वस्=वान्स् हो जाता है। शेष स्वरादि विभक्तियों में वस्=उष् और व्यञ्जनादि विभक्तियों में वस्=वत् होता है।

	एक०	द्वि०	बहु०
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः

पुंलिङ्ग पुमस् (A man)

पहले पांच वचनों में पुमान्स् हो जाता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	,,	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
चतुर्थी	पुंसे	,,	पुम्भ्यः
पञ्चमी	पुंसः	,,	,,
षष्ठी	,,	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	,,	पुंसु
सम्बोधन	पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः

स्त्रीलिङ्ग-विशेष अप् (Water)

अप् शब्द सदा बहुवचनान्त होता है। प्रथमा के बहुवचन में आप् और भादि में अत् हो जाता है।

आपः अपः आद्भिः अद्भ्यः अद्भ्यः अपाम् अप्सु

इदम् पुँलिङ्ग			अदस् पुँलिङ्ग		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१–अयम्	इमौ	इमे	असौ	अमू	अमी
२–इमम्	,,	इमान्	अमुम्	,,	अमून्
३–अनेन	आभ्याम्	एभिः	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
४–अस्मै	,,	एभ्यः	अमुष्मै (२०)	,,	अमीभ्यः
५–अस्मात्	,,	,,	अमुष्मात्	,,	,,
६–अस्य	अनयोः	एषाम्	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७–अस्मिन्	,,	एषु	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु
स्त्रीलिङ्ग					
इयम्	इमे	इमाः	असौ	अमू	अमूः
इमाम्	,,	,,	अमूम्	,,	,,
अनया	आभ्याम्	आभिः	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अस्यै	,,	आभ्यः	अमुष्यै	,,	अमूभ्यः
अस्याः	,,	,,	अमुष्याः	,,	,,
,,	अनयोः	आसाम्	,,	अमुयोः	अमूषाम्
अस्याम्	,,	आसु	अमुष्याम्	,,	अमूषु
नपुँ० प्र० द्वि०	इदम्	इमे इमानि	अदः	अमू	अमूनि

अदस् के 'अमी' से परे कोई स्वर हो, तो दोनों ज्यों के त्यों बने रहते हैं, जैसे 'अमी अश्वाः' यहां ई को य होकर 'अम्यश्वाः' नहीं होगा।

शब्दकोष

(क) योगिन् योगी
भाविन् होने वाला
ज्ञानिन् ज्ञानवान्
भित्ति भीत
अश्मन् पत्थर
गुणवत् गुणवान्
शिरस् सिर
महत् बड़ा
महिमन् बड़ाई
पक्षिन् पक्षी
मनस् चित्त
वचस् वचन
ब्रह्मन् ब्रह्मा
नामन् नाम
अहन् दिन
पुमस् आदमी
विद्वस् विद्वान्
यशस् कीर्ति
सद्मन् घर
अन्तरात्मन् चित्त
धावत् भागता हुआ
(ख) आकाश नभस्
छोटा लघीयस्
अन्धेरा तमस्
अच्छा श्रेयस्
वस्त्र वासस

प्राणिन् जीव
कर्मन् काम
महिषी रानी
श्रेयस् अच्छा
धनवत् धनवान्
पथिन् मार्ग
अप् जल
गात्र शरीर
पयस् जल
धवल सफेद
कनीयस् छोटा
दास्यत् जो देगा
गरीयस् बड़ा
अदत् खाता हुआ
ददत् देता हुआ
धनिन् धनवान्
यज्वन् यज्ञ करने वाला
आत्मन् जीवात्मा, आप
श्वन् कुत्ता
युवन् जवान
घी हविस्
बड़ाई गरिमन्
छुटाई लघिमन्
तट रोधस्
तप करता हुआ तपस्यत्

निकलता हुआ	उद्गच्छत्	सिर	शिरस्
दुर्वासा	दुर्वासस्	काटना	कृत् (धा०तु०)
राक्षस	रक्षस्		

अभ्यास १०

योगिनः फलानि भक्षयन्ते ।
भाविनोऽर्थान् बोधन्तु ज्ञानिनः ।
असौ प्रासादस्य भित्तिमश्मभि ररचयत् ।
प्राण्यमुष्मिँल्लोके कर्मणां फलं लभते ।
राजन् श्रीमत्यै महिष्यै अमुं सन्देशं देहि ।
अपराधिनः पुरुषान् दण्डयन्तु राजानः ।
श्रेयानयं मार्गः ।
अस्मिँल्लोके धनवन्त एव गुणवन्तः ।
पक्षिण आकाशे डयन्ते ।
शत्रून् शिरस्सु प्राहरत् ।
महेश्वरस्य महिम्नः फलमेतत् ।
पुमान् मनसा चिन्तित वचः भाषेत ।
बलवद्भिर्बलवन्त एव युध्यन्ते ।
ब्रह्मणः जगद्जायत ।
अपराधिनं न क्षमस्व ।
विदुषां यशः संसारे प्रसरति ।
अयमसौ वृक्षः यस्य फलानि स्वादूनि ।
अस्मिन् सद्मनि एको महान् सर्पः ।
प्रसन्नः भवतोऽन्तरात्मा ?
धावन्त्यसौ नारी न्यपतत् ।
किन्ते नाम ?
अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति । मनः सत्येन शुध्यति ।
गङ्गायाः पयो धवलम् ।
लक्ष्मणः रामस्य कनीयान् भ्राता ।

(ख) हरि ने अपने वचनों से माता को प्रसन्न किया।
आकाश में बादल चमकते हैं।
मेरे छोटे भाई का दिल अन्धेरे से डरजाता है।
यदि सचाई है तो तप से क्या ?
जो वृद्धों के वचन मन से पालते हैं वही सम्पूर्ण आयु में यश पाते हैं।
इस संसार में बड़ाई और छुटाई अपने कर्मों से होती है।
सभी पुरुष विद्वानों को पूजते हैं।
राजा ने ऋषिओं को गङ्गा के तट पर तप करते देखा।
गहरे अन्धेरे में चलता हुआ वह गिर पड़ा।
मनुष्यो, निकलते हुए चांद का दृश्य देखो।
रामने मार्ग में बहुत से अपराधी देखे।
इन मनुष्यों के काम अच्छे हैं।
देश की रक्षा जवानों का काम है।
दुर्वासा और दूसरे वनवासी मुनि ब्रह्मा आदि देवों के पास गए।
राम ने राक्षसों के सिर काट दिये।
इसने ब्रह्म की महिमा वेदान्त में पढ़ी।
इस ग्रन्थ का लेखक बड़ा विद्वान् है।
उस चलती हुई स्त्री का वस्त्र गिर गया।
सेवक स्वामी की आज्ञा मानते हैं।
जलती हुई आग में घी डालो।

धातुप्रकरणम् २

७८—दसगणों में से चार गणों के सार्वधातुक चार लकारों के रूप पूर्व दिखला आये हैं। अब शेष छह गणों के सार्वधातुक रूप दिखलाते हैं, इन गणों में सार्वधातुक चार लकारों के प्रत्यय ये लगते हैं।

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुचन
लट्	प्रथम पुरुष	ति	तस्	अन्ति	ते	आते*	अते
	मध्यम पुरुष	सि	थस्	थ	से	आथे	ध्वे
	उत्तम पुरुष	मि	वस्	मस्	ए	वहे	महे
लङ्	प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्	त	आताम्	अत
	मध्यम पुरुष	स्	तम्	त	थास्	आथाम्	ध्वम्
	उत्तम पुरुष	अम्	व	म	इ	वहि	महि

* पहले चार गणों में लट् में इते, अन्ते इथे, लङ् में इताम्, अन्त, इथाम् और लोट् में इताम्, अन्ताम् और इथाम् विभक्तियां हैं।

लोट्	प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	आताम्	अताम्
	मध्यम पुरुष	हि	तम्	त	स्व	आथाम्	ध्वम्
	उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै
विधि-लिङ्	प्रथम पुरुष	यात्	याताम्	युस्	ईत	ईयाताम्	ईरन्
	मध्यम पुरुष	यास्	यातम्	यात	ईथास्	ईयाथाम्	ईध्वम्
	उत्तम पुरुष	याम्	याव	याम	ईय	ईवहि	ईमहि

७९—सार्वधातुक विभक्तियां परे होने पर इन गणों के रूपों में दो भेद होते हैं—एक प्रकार के रूपों में तो प्रत्यय से पूर्ववर्ती अङ्ग प्रबल होता है और दूसरे प्रकार के रूपों में निर्बल ।

१—आत्मने पद में लोट् के केवल उत्तमपुरुष के तीन वचनों (ऐ, आवहै, आमहै) में अंग प्रबल रहता है और सभी रूपों में निर्बल ।

२—परस्मैपद में लट् और लङ् के एकवचन (ति, सि, मि और त्, स्, अम्) में और लोट् के प्रथमपुरुष के एकवन (तु) और उत्तमपुरुष के तीनों वचनों (आनि, आव, आम) में प्रबल, और सभी रूपों में निर्बल होता है । प्रबल और निर्बल अंग के अनुसार जो कार्य होता है, वह आगे स्पष्ट होता जायगा ।

८०—(क) शेष छह गणों में से चार गणों के विकरण ये हैं।

स्वादि	नु
तनादि	उ
क्र्यादि	ना
रुधादि	न

(ख) अदादि और जुहोत्यादि में कोई विकरण नहीं आता।

स्वादि गण।

स्वादि गण का विकरण नु है।

८१—(क) (१) प्रबल स्थल में अंग के अन्त्य स्वर को गुण हो जाता है। जैसे—सु+नु+ति=सुनोति।

(२) यदि अन्त में एक ही व्यञ्जन हो और पूर्व ह्रस्व स्वर हो, तो उसको भी गुण हो जाता है। जैसे—द्विष्+ति=द्वेष्टि=द्वेष्टि।

(ख) अंग के अन्त्य उ से परे व, म हों तो उ का लोप विकल्प से हो जाता है—पर उस से पूर्व दो व्यञ्जन हों तो नहीं होता। जैसे—सु+नु+वः=सुन्वः वा सुनुवः। सु+नु+मः=सुन्मः वा सुनुमः; पर 'शक्नुवः, शक्नुमः' यहां न हुआ क्योंकि उ से पूर्व दो व्यञ्जन हैं

(ग) अंग के अन्त्य उ से परे हि का लोप होता है, पर उ से पूर्व दो व्यञ्जन हों, तो नहीं होता। जैसे सु+नु+हि=सुनु। पर 'आप्नुहि' यहां न हुआ, क्योंकि उ से पूर्व दो व्यञ्जन हैं।

(घ) उ से पूर्व यदि दो व्यञ्जन हों, तो जहाँ उ को (१६ से) व् प्राप्त है, वहां उव् होता है। जैसे शक्नु+अन्ति= 'शक्नुवन्ति' न कि शक्न्वन्ति।

धातु कोष (स्वादिगण)

परस्मैपदी

शक्—सकना

हि (प्र+हि)—भेजना

श्रु (श्रृ)—सुनना

आप्—पाना

आत्मनेपदी

अश्—व्यापना

उभयपदी

सु—रस निकालना।

वृ—चुनना।

सु—परस्मैपद

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति
	म० पु०	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
	उ० पु०	सुनोमि	सुनुवः-न्वः	सुनुमः-न्मः
लङ्	प्र० पु०	असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्
	म० पु०	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत
	उ० पु०	असुनवम्	असुनुव-न्व	असुनुम-न्म

सु—आत्मनेपद

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
	म० पु०	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
	उ० पु०	सुन्वे	सुनुवहे-न्वहे	सुनुमहे-न्महे
लङ्	प्र० पु०	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
	म० पु०	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
	उ० पु०	असुन्वि	असुनुवहि-न्वहि	असुनुमहि-न्महि

विधि-लिङ्	प्र० पु०	सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
	म० पु०	सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
	उ० पु०	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि
लोट्	प्र० पु०	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	सुनुताम	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
	म० पु०	सुनु	सुनुतम्	सुनुत	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
	उ० पु०	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै

इसी प्रकार दोनों पदों में वृ के रूप जानो। वृ से परे नु के न् को सर्वत्र (१९ से) ण् हो जाता है, वृणोति, वृणुते।

		शक् परस्मैपद			अश् आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
	म० पु०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे
	उ० पु०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे
लङ्	प्र० पु०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
	म० पु०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत	आश्नुथाः	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्
	उ० पु०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि

विधि-लिङ्	प्र० पु०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्
	म० पु०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात	अश्नुवीथाः	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीध्वम्
	उ० पु०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम	अश्नुवीय	अश्नुवीवहि	अश्नुवीमहि
लोट्	प्र० पु०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
	म० पु०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्
	उ० पु०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम	अश्नवै	अश्नवावहै	अश्नवामहै

रुधादि गण

८२ (क) रुधादि का विकरण न है। यह न धातु के अन्त में नहीं, किन्तु धातु के अन्त्य स्वर से परे रक्खा जाता है। जैसे रुध्=रुनध्।

(ख) निर्बल स्थलों में न को न् होता है। रुनध्+अन्ति=रुन्धन्ति।

८३—वर्गों के चतुर्थ वर्ण (घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) से परे प्रत्यय का त् वा थ् हो, तो उस को ध् और पूर्वले चतुर्थ को तीसरा (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) हो जाता है। जैसे रुनध्+तस्=रुन्ध्तस्=रुन्द्धस्=रुन्द्धः।

८४—घोष से परे हि को धि होता है। रुनध्+हि=रुन्ध्+धि=रुन्द्धि।

उभयपदी

रुध्—रोकना।

भुज्—खाना (आ०) पालना (प०)

छिदू—टुकड़े करना, छेदना।

युज्—जोड़ना।

भिदू—तोड़ना।

उभयपदी

रुध् (रोकना, to obstruct)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचः
लट्	प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति	रुन्द्धे	रुन्धाते	रुन्धते
	म० पु०	रुणत्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्दूध्वे
	उ० पु०	रुणध्मि	रुन्ध्व;	रुन्ध्मः	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
लङ्	प्र० पु०	अरुणत्	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्	अरुन्द्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
	म० पु०	अरुणत्	अरुन्द्धम	अरुन्द्ध	अरुन्द्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्दूध्वम्
	उ० रु०	अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
	म० पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
	उ० पु०	रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि

लोट्	प्र० पु०	रुणद्धु	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु	रुन्द्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
	म० पु०	रुन्द्धि	रुन्द्धम्	रुन्द्ध	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्दूध्वम्
	उ० पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै

उभयपदी

युज् (जोड़ना, to join)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
	म० पु०	युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
	उ० पु०	युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे
लङ्	प्र० पु०	अयुनक्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
	म० पु०	अयुनक्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
	उ० पु०	अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
	म० पु०	युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
	उ० पु०	युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि

लोट्	प्र० पु०	युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
	म० पु०	युङ्ग्धि	युङ्क्तम्	युङ्क्त	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
	उ० पु०	युनजानि	युनजाव	युनजाम	युनजै	युनजावहै	युनजमाहै

तनादिगण ।

तनादि गण का विकरण उ है । इस को सारे कार्य नु की नाईं होते हैं ।

उभयपदी

तन् (फैलाना, तनना, to spread)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	तनुते	तन्वाते	तन्वते
	म० पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
	उ० पु०	तनोमि	तनुवः-तन्वः	तनुमः-तन्मः	तन्वे	तनुवहे-तन्वहे	तनुमहे-तन्वहे

लङ्	प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
	म० पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
	उ० पु०	अतनवम्	अतनुव-	अतनुम-	अतन्वि	अतनुवहि-	अतनुमहि-
			अतन्व ८१(ख)	अतन्म		अतन्वहि (८१ख)	अतन्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
	म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
	उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि
लोट्	प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
	म० पु०	तनु८१ (ग)	तनुतम्	तनुत	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
	उ० पु०	तनवानि ८१ (क१)	तनवाम	तनवाव	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

८५ (क) प्रबल विभक्तियों के पूर्व कृ को कर् और निर्बल विभक्तियों के पूर्व कुर् हो जाता है। जैसे—कृ+उ+ति=कर्+उ+ति=करोति, कृ+उ+तः=कुरुतः।

(ख) व, म और य के पूर्व विकरण उ का लोप हो जाता है। जैसे—कृ+उ+वः=कुर्+उ+वः=कुर्वः। कृ+उ+यात्=कुर्+उ+यात्=कुर्यात्।

उभयपदी

कृ (करना, to do)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विव०	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लङ्	प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
	म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
	उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
	म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
	उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लोट्	प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम	करवै	करवावहै	करवामहै

क्र्यादिगण

८६ (क) १—क्र्यादिगण का विकरण ना है।

२—प्रबल स्थलों में ना होता है। जैसे क्रीना+ति= क्रीणाति (१९)

३—निर्बल स्थलों में व्यञ्जनादि विभक्ति परे हो तो ना के स्थान नी, स्वरादि परे हो, तो न् हो जाता है। जैसे व्यञ्जनादि परे होते हुए क्रीना+तस्=क्रीनीतस्=क्रीणीतः। और स्वरादि परे होते हुए क्रीना+अन्ति=क्रीन् अन्ति=क्रीणन्ति।

(ख) लोट् का हि परे होने पर व्यञ्जनान्त धातु से परे ना को आन हो कर हि का लोप हो जाता है। जैसे बध्+ना+हि= बध्+आन+हि=बधान, नकि बध्नीहि।

(ग) निर्बल स्थलों में ग्रह् को गृह् हो जाता है।

धातुकोष (क्र्यादिगण)

उभयपदी	परस्मैपदी
क्री=खरीदना	बध्—बांधना
प्री=तृप्त करना	अश्—भोजन करना
पू (पु) पवित्र करना	मुष्—चुराना
ज्ञा (जा) जानना	क्लिश्—तंग करना
ग्रह् (गृह्) पकड़ना	

उभयपदी

क्री (ख़रीदना, to buy)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
	म० पु०	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
	उ० पु०	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
लङ्	प्र० पु०	अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
	म० पु०	अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
	उ० पु०	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	अक्रीणे	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	क्रीणीयात्	क्रीणीयातम्	क्रीणीयुः	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
	म० पु०	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
	उ० पु०	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि
लोट्	प्र० पु०	क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
	म० पु०	क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
	उ० पु०	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

उभयपदी

ज्ञा (जा) (जानना to know)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति	जानीते	जानाते	जानते
	म० पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
	उ० पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः	जाने	जानीवहे	जानीमहे
लङ्	प्र० पु०	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
	म० पु०	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
	उ० पु०	अजानाम्	अजानीव	अजानीम	अजाने	अजानीवहि	अजानीमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन
	म० पु०	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
	उ० पु०	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
लोट्	प्र० पु०	जानातु	जानीताम्	जानन्तु	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
	म० पु०	जानीहि	जानीतम्	जानीत	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
	उ० पु०	जानानि	जानाव	जानाम	जानै	जानावहै	जानामहै

उभयपदी

ग्रह् (गृह्) (पकड़ना, to hold)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
	म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
	उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे
लङ्	प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
	म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
	उ० पु०	अगृह्णाम	अगृह्णीव	अगृह्णीम	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
	म० पु०	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
	उ० पु०	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि
लोट्	प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
	म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
	उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

शब्द-कोष

(क) कृ (धा०) करना
तत्व सचाई
ज्ञा (धा०) जानना
यावत् (अ०) जबतक
त्रुट् (धा०) टूटना
तावत् (अ०) तबतक
पाश जाल
छिद् (धा०) काटना
चि (धा०) चुनना
अश् (धा०) खाना, व्यापना
ग्रह् (गृह) पकड़ना
प्रान्त कोना
युज् (धा०) जोड़ना
बन्ध् (धा०) बांधना
मानव मनुष्य
विक्रम पराक्रम
अवगम ज्ञान
अश्वतरी खच्चर
हितकाम (वि०) भला चाहने वाला
भ्रम् (धा०) घूमना
आद्यान्तविभाग आगे का और पीछे का सिरा
श्रु (श्रृ) (धा०) सुनना
अनुपकुर्वाण (वि०) उपकार न करता हुआ
उपायन भेंट
तिरस्+कृ (धा० निरादर करना
आप् (धा०) पाना
कृपण (वि०) कञ्जूस
द्रव्य धन
सम्+चि (धा०) संचय करना
साध् (धा०) सिद्ध करना
क्री (धा०) खरीदना
कपट-प्रबन्ध धोखे का काम
चञ्चु चोंच
उदरपूरण पेट भरना
दुःखसागर दुःखों का समुद्र
सत्त्व जीव
पातक पाप
भाषित बात
भङ्ग टूटना
तन्तु तांत

(ख) रोकना रुध्(धा०)
जोड़ना युज्(धा०)
ग्रहण करना-ग्रह=गृह्(धा०)
पाना आप् (धा०)
पवित्र करना पू (पु) (धा०)
छिपाना आ+वृ (धा०)
सकना शक् (धा०)
बिछाना आस्तृ (धा०)
जंजीर शृङ्खला
तोड़ना भज् (धा०)
खाना अश् (धा०)
वरना वृ (धा०)
जानना ज्ञा (धा०)
हिलाना धू (धु) (धा०)
सिद्ध करना साधू (धा०)
करना कृ (धा०)
बिस्तरा आस्तरण

अभ्यास ११

(क) कथं व्याघ्रस्य भक्षणाय कलहं कुरुथः।
किं तत्त्वं जानासि ?
तद्यावन्मे दन्ता न त्रुट्यन्ति तावत्तव पाशं छिनद्मि।
पुष्पाणि वृक्षादपतन् तानि चिनुमः।
भो बालकाः, भोजनमश्नीत।
रामस्य हस्तादू यष्टिं गृहाण।
अस्या रज्ज्वा उभौ प्रान्तौ युङ्ग्धि बधान च।
यत्त्वां विनाऽऽद्यन्तविभागं न कोऽपि जानाति।
ततः शृणु, कथयामि।
अनुपकुर्वाणो न कस्याप्युपायनं गृह्णीयात्।
तं सर्वे तिरस्कुर्वन्ति।
भर्तुश्च पुनर्दर्शनमाप्नुहि।
कृपणो द्रव्यं सञ्चिनोति।
धीराः यत्नेन कार्याणि साध्नुवन्ति।
पिता पुत्राय वस्त्राण्यक्रीणीत।
त्वं तेषां कपटप्रबन्धान्न जानासि।
स्वामी भृत्यं तत्र कर्मण्ययुनक्।

बुद्धिहीनाः परं क्लेशमाप्नुवन्तीह मानवाः ।
धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते ।
काकोऽपि किं न कुरुते चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ।
महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।
आत्मनाऽवगमं कृत्वा बध्नीयात् पूजयेत वा ।
स मृत्युमेव गृह्णाति गर्भमश्वतरी यथा ।
किं करोमि क्व गच्छामि पतितो दुःखसागरे ।
निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः ।
अस्य दग्धोदरस्यार्थे कः कुर्यात् पातकं महत् ।
सुहृदां हितकामानां यः शृणोति न भाषितम् ।
भङ्गेऽपि हि मृणालानामनुबध्नन्ति तन्तवः ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ।
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

(ख) उसे घर जाने से मत रोको ।
मेरे हाथ से अपना हाथ जोड़ो ।
यदि मेरी सम्मति ग्रहण करोगे तो सुख पाओगे ।
उस ने मेरा वचन क्यों नहीं सुना ?
जो यह ज़ंजीर तोड़ेगा, वही यह इनाम लेगा ।
घोड़े मांस नहीं खाते और शेर घास नहीं खाते ।
मैं पक्षियों का शब्द सुनता हूँ ।
दूसरों की चीज़ मत लो ।
सीता ने स्वयंवर में राम को वरा ।
यह सच जानो कि वह कुछ नहीं सुनता ।
जल शरीर को पवित्र करता है ।
वायु वृक्षों को हिलाता है ।
महापुरुष कठिन कामों को भी सिद्ध करते हैं ।

मोहन बाग़ में फूल चुनता है।
देवदत्त, अपने दोषों को मत छिपाओ।
जिसने इसे खाया, उसने आनन्द पाया।
हर साल हम गङ्गा में स्नान करते हैं।
जो वह काम नहीं कर सका, उस से यह कैसे हो सकता है?
हम ने तो उसे अच्छा समझा था।
इस बिस्तेरे को मत बिछाओ, यह मैला है।

अदादिगण।

अदादिगण में कोई विकरण नहीं आता।

धातुकोष

परस्मैपदी	आत्मनेपदी	उभयपदी
अद्—खाना	शी—सोना	द्विष्—द्वेष करना
अस्—होना	आस्—बैठना	ब्रू—बोलना
हन्—मारना	अधि+इ=पढ़ना	
विद्—जानना		
रुद्—रोना		
पा—पालना		

८७—अद् से परे लङ् के त् स् से पूर्व अ आजाता है।
अ+अद्+त=आद् अत्=आदत्।

		अद् परस्मैपद			आस् आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति	आस्ते	आसाते	आसते
	म० पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ	आस्से	आसाथे	आध्वे
	उ० पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः	आसे	आस्वहे	आस्महे
लङ्	प्र० पु०	आदत्	आत्ताम्	आदन्	आस्त	आसाताम्	आसत
	म० पु०	आदः	आत्तम्	आत्त	आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्
	उ० पु०	आदम्	आद्व	आद्म	आसि	आस्वहि	आस्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
	म० पु०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
	उ० पु०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम	आसीय	आसीवहि	आसीमहि
लोट्	प्र० पु०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
	म० पु०	अद्धि	अत्तम्	अत्त	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
	उ० पु०	अ	अदाव	अदाम	आसै	आसावहै	आसामहै

अस् (होना) परस्मैपद

८८ (क) निर्बल स्थलों में अस् के अ का लोप हो जाता है। जैसे अस्+तस्=स्तस्=स्तः। अस्+यात्=स्यात्=स्यात्।

(ख) लङ् के त्, स् से पूर्व ई आ जाता है। जैसे—आ+अस्+त्=आस् ई त्=आसीत्

(ग) लोट् के मध्यम पुरुष एक वचन का रूप एधि बनता है।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
	म० पु०	असि	स्थः	स्थ
	उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः
लङ्	प्र० पु०	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
	म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
	उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म
विधि-लिङ्	प्र० पु०	स्यात्	स्याताम्	स्युः
	म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
	उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम
लोट्	प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
	म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
	उ० पु०	असानि	असाव	असाम

हन् (मारना) परस्मैपद

८९ (क) निर्बल स्थलों में य्, व्, म्, न् भिन्न व्यञ्जनादि प्रत्यय परे होने पर हन् के न् का लोप होता है। जैसे हन्+तस्=हतस्=हतः, पर हन्+यात्=हन्यात् और हन्+मि=हन्मि।

(ख) निर्बल स्थलों में स्वरादि प्रत्यय परे होने पर हन् को घ्न् हो जाता है। जैसे हन्+अन्ति=घ्न अन्ति=घ्नन्ति।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
	म० पु०	हंसि	हथः	हथ
	उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः
लङ्	प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
	म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
	उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म
विधि-लिङ्	प्र० पु०	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
	म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
	उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
लोट्	प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
	म० पु०	जहि	हतम्	हत
	उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

पा (रक्षा करना) परस्मैपद

लट्	प्र० पु०	पाति	पातः	पान्ति
	म० पु०	पासि	पाथः	पाथ
	उ० पु०	पामि	पावः	पामः
लङ्	प्र० पु०	अपात्	अपाताम्	अपान्, अपुः
	म० पु०	अपाः	अपातम्	अपात
	उ० पु०	अपाम्	अपाव	अपाम
विधि-लिङ्	प्र० पु०	पायात्	पायाताम्	पायुः
	म० पु०	पायाः	पायातम्	पायात
	उ० पु०	पायाम्	पायाव	पायाम
लोट्	प्र० पु०	पातु	पाताम्	पान्तु
	म० पु०	पाहि	पातम्	पात
	उ० पु०	पानि	पाव	पाम

इसी प्रकार या (जाना), रा (देना), दा (काटना) आदि के रूप होते हैं ।

विद् (जानना) परस्मैपद

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
	म० पु०	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
	उ० पु०	वेद्मि	विद्वः	विद्मः
लङ्	प्र० पु०	अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः
	म० पु०	अवेः	अवित्तम्	अवित्त
	उ० पु०	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
विधि-लिङ्	प्र० पु०	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
	म० पु०	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
	उ० पु०	विद्याम्	विद्याव	विद्याम
लोट्	प्र० पु०	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
	म० पु०	विद्धि	वित्तम्	वित्त
	उ० पु०	वेदानि	वेदाव	वेदाम

विशेष धातु—रुद् (रोना) परस्मैपद

९० (क) य-भिन्न व्यञ्जनादि सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर रुद् आदि से परे इ लग जाता है । जैसे रुद्+ति=रुद् इति=रोद् इति =रोदिति । पर रुद्यात् में न हुआ, क्योंकि परे यादि प्रत्यय हैं और रुदन्ति में न हुआ, क्योंकि परे स्वरादि प्रत्यय है ।

(ख) लङ् के त स के स्थान में ईत ईस वा अत् अस् होते हैं ।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	रोदिति	रुदितः	रुदन्ति
	म० पु०	रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ
	उ० पु०	रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः

लङ्	प्र० पु०	अरोदीत्-दत्	अरुदिताम्	अरुदन्
	म० पु०	अरोदीः-दः	अरुदितम्	अरुदित
	उ० पु०	अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम
विधि-लिङ्	प्र० पु०	रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः
	म०पु०	रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात
	उ०पु०	रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम
लोट्	प्र० पु०	रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु
	म० पु०	रुदिहि	रुदितम्	रुदित
	उ०पु०	रोदानि	रोदाव	रोदाम

इसी प्रकार स्वप् (सोना), श्वस् (सांस लेना), अन् (सांस लेना) के रूप जानो। अन् के प्रयोग प्रायः प्र-पूर्वक होते हैं—प्राणिति।

विशेषधातु-शास् (शासन करना) परस्मैपद

९१—शास् को निर्बल स्थलों में व्यञ्जनादि प्रत्यय परे होने पर शिष् हो जाता है। जैसे शास्+तस्=शिष् तः=शिष्टः। 'शासति' में न हुआ क्योंकि स्वरादि प्रत्यय परे है।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	शास्ति	शिष्टः	शासति
	म० पु०	शास्सि	शिष्ठः	शिष्ठ
	उ० पु०	शास्मि	शिष्वः	शिष्मः
लङ्	प्र० पु०	अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः
	म० पु०	अशात्	अशिष्टम्	अशिष्ट
	उ०पु०	अशासम्	अशिष्व	अशिष्म
विधि-लिङ्	प्र० पु०	शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः
	म०पु०	शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात
	उ०पु०	शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम

लोट्	प्र० पु०	शास्तु	शिष्टाम्	शासतु
	म० पु०	शाधि	शिष्टम्	शिष्ट
	उ० पु०	शासानि	शासाव	शासाम

विशेष धातु—शी (सोना) आत्मनेपद

९२ (क) शी को सार्वधातुक में सर्वत्र गुण हो जाता है। (ख) लट्, लङ्, लोट् के प्रथम पुरुष के बहुवचन में प्रत्यय से पूर्व र् आजाता है। शी+अते=शे अते=शेर् अते=शेरते।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु	शेते	शयाते	शेरते
	म० पु	शेषे	शयाथे	शेध्वे
	उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे
लङ्	प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
	म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
	उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
	म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
	उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
लोट्	प्र० पु०	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
	म० पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
	उ० पु०	शयै	शयावहै	शयामहै

आधि+इ (पढ़ना) आत्मनेपद

९३—निर्बल स्थलों में स्वरादि प्रत्यय परे होने पर इ को इय् हो जाता है। इ+अते=इयाते=अधि+इयाते=अधीयाते। यह सदा अधिपूर्वक ही आता है।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	अधीते	अधीयाते	अधीयते
	म० पु०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
	उ० पु०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे
लङ्	प्र० पु०	अध्यैत*	अध्यैयाताम्†	अध्यैयत
	म० ,,	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
	उ० ,,	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
	म० ,,	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
	उ० ,,	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि
लोट्	प्र० पु०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
	म० ,,	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
	उ० ,,	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

विशेष धातु ब्रू (बोलना) उभयपद।

९२ (क) प्रबल स्थलों में व्यञ्जनादि प्रत्यय से पूर्व ई आजाता है। जैसे—ब्रू+ति=ब्रो ति=ब्रो ई ति=ब्रवीति। 'ब्रूतः' में नहीं आया क्योंकि यह निर्बल स्थल है। 'ब्रूवः' में नहीं आया क्योंकि प्रत्यय स्वरादि है।

(ख) निर्बल स्थल में स्वरादि प्रत्यय परे होने पर ऊ को उव् होता है। ब्रू+अन्ति=ब्रुव् अन्ति=ब्रुवन्ति

---

* धातु इ है, इस से पूर्व और परे लङ् का त (प्र० पु० एक०) लगकर और वृद्धि (अ+इ=ऐ) होकर ऐत बन जाता है। फिर अधि जुड़ कर अध्यैत बनता है।

† अधि+अ+इ+आताम्=अधि+अ+इय्+आताम्=अध्यैयाताम।

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
लट्	प्र० पु०	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
	म० पु०	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
	उ० पु०	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे
लङ्	प्र० पु०	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
	म० पु०	अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
	उ० पु०	अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
	म० पु०	ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
	उ० पु०	ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि
लोट्	प्र० पु०	ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
	म० पु०	ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
	उ० पु०	ब्रवाणि	ब्रवाम	ब्रवाम	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लट् (परस्मैपद) के पहले पाञ्च वचनों में विकल्प से इसके ये रूप भी प्रयुक्त होते हैं—
आह, आहतुः, आहुः। आत्थ, आहथुः।

जुहोत्यादिगण ।

जुहोत्यादिगण में कोई विकरण नहीं आता और धातु को द्वित्व होता है ।

द्वित्व के सामान्य नियम ।

९५ (क) द्वित्व करने में धातु का प्रथम अक्षर (Syllable) दो बार बोला जाता है जैसे—बुध्—बुबुध् ।

(ख) द्वित्व हुए के पूर्व भाग का दीर्घ स्वर ह्रस्व होजाता है। जैसे—दा—दादा=ददा ।

(ग) आदि व्यञ्जन महाप्राण हो तो अल्पप्राण हो जाता है। जैसे—भिद्—भिभिद्=बिभिद् , धा—धाधा=धधा=दधा

(घ) कवर्ग को चवर्ग और ह् को ज् हो जाता है। जैसे कम्—ककम्=चकम् । हु—हुहु=जुहु ।

अन्त्य स्वर को प्रबल स्थलों में गुण होता है। जैसे जुहु+ति=जुहोति ।

९६ (क) दुर्बल स्थलों में दा के आ का लोप होता है । जैसे ददा+तः=ददतः=दत्तः ।

(ख) दुर्बल स्थलों में व्यञ्जनादि प्रत्यय परे होने पर धा को धत्, और स्वरादि प्रत्यय वा व म परे होने पर दध् होता है।

(ग) भी को निर्बल स्थलों में ह्रस्व विकल्प से होता है। जैसे बिभीतः वा बिभितः ।

हु (होम करना) परस्मैपद ।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
	म० पु०	जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
	उ० पु०	जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः
लङ्	प्र० पु०	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
	म० पु०	अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत
	उ० पु०	अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम
विधि-लिङ्	प्र० पु०	जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः
	म० पु०	जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात
	उ० पु०	जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम
लोट्	प्र० पु०	जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु
	म० पु०	जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत
	उ० पु०	जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
लट्	प्र० पु०	ददाति	दत्तः	ददति	दत्ते	ददाते	ददते
	म० पु०	ददासि	दत्थः	दत्थ	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
	उ० पु०	ददामि	दद्वः	दद्मः	ददे	दद्वहे	दद्महे
लङ्	प्र० पु०	अददात्	अदत्ताम्	अददुः	अदत्त	अददाताम्	अददत
	म० पु०	अददाः	अदत्तम	अदत्त	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम
	उ० पु०	अददाम्	अदद्व	अदद्म	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	दद्यात्	दद्याताम	दद्युः	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
	म० पु०	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
	उ० पु०	दद्याम	दद्याव	दद्याम	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
लोट्	प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
	म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
	उ० पु०	ददानि	ददाव	ददाम	ददै	ददावहै	ददामहै

धा (धारण करना, To hold)

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एक०	द्वि०	बहु०	एक०	द्वि०	बहु०
लट्	प्र० पु०	दधाति	धत्तः	दधति	धत्ते	दधाते	दधते
	म० पु०	दधासि	धत्थः	धत्थ	धत्से	दधाथे	धद्ध्वे
	उ० पु०	दधामि	दध्वः	दध्मः	दधे	दध्वहे	दध्महे
लङ्	प्र० पु०	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
	म० पु०	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
	उ० पु०	अदधाम्	अदध्व	अदध्म	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि
विधि-लिङ्	प्र० पु०	दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
	म० पु०	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
	उ० पु०	दध्याम्	दध्याव	दध्याम	दधीय	दधीवहि	दधीमहि
लोट्	प्र० पु०	दधातु	धत्ताम्	दधतु	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
	म० पु०	धेहि	धत्तम्	धत्त	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
	उ० पु०	दधानि	दधाव	दधाम	दधै	दधावहै	दधामहै

भी (डरना, to fear)

परस्मैपद ।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्			बिभीतः-	
	प्र० पु०	बिभेति	बिभितः	बिभ्यति
			बिभीथः-	बिभीथ-
	म० पु०	बिभेषि	बिभिथः	बिभिथ
			बिभीवः-	बिभीमः-
	उ० पु०	बिभेमि	बिभिवः	बिभिमः
लङ्			अबिभीताम्-	
	प्र० पु०	अबिभेत्	अबिभिताम्	अबिभयुः
			अबिभीतम्-	अबिभीत-
	म० पु०	अबिभेः	अबिभितम्	अबिभित
			अबिभीव-	अबिभीम-
	उ० पु०	अबिभयम्	अबिभिव	अबिभिम
विधिलिङ्		बिभीयात्-	बिभीयाताम्-	बिभीयुः-
	प्र० पु०	बिभियात्	बिभियाताम्	बिभियुः
		बिभीयाः-	बिभीयातम्-	बिभीयात-
	म० पु०	बिभियाः	बिभियातम्	बिभियात
		बिभीयाम्-	बिभीयाव-	बिभीयाम-
	उ० पु०	बिभियाम्	बिभियाव	बिभियाम
लोट्			बिभीताम्-	
	प्र० पु०	बिभेतु	बिभिताम्	बिभ्यतु
		बिभीहि-	बिभीतम्-	बिभीत-
	म० पु०	बिभिहि	बिभितम्	बिभित
	उ० पु०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

शब्दकोष ।

(क) मानुष	मनुष्य	संसद्	सभा
भी (धा०)	डरना	हरित	हरा घास
वेला	समय	प्रमाद	असावधानता
शी (धा०)	सोना	प्रश्रय	विनय
स्वप् (धा०)	सोना	रुद् (धा०)	रोना
भा (धा०)	चमकना	वि+श्वस् (धा०)	विश्वास करना
विद्युत्	बिजली	प्रति+भा (धा०)	मालूम होना
अभ्र	मेघ	श्रम	थकावट
शंस् (धा०)	कहना	हित (वि०)	भला चाहने वाले
जागृ (धा०)	जागना	एकतर	दो में से एक
दरिद्र	निर्धन	हा (धा०)	त्यागना
मन्द-भाग्य	भाग्यहीन	अधः	नीचे
आ+या (धा०)	आना	भीम (वि०)	भयानक
विशेष	खास	निशा	रात
वि+धा (धा०)	करना	संयमिन्	योगी

(ख) रोना	रुद् (धा०)	आना	आ+इ (धा०)
कहना	ब्रू (धा०)	बचाना	पा (धा०)
दण्डक	एक वन का नाम	हवा चलना	वा (धा०)
मारना	हन् (धा०)	जानना	विद् (धा०)
सोना	स्वप्, शी (धा०)	करना	वि+धा (धा०)
आलसी	अलस (वि०)	ऊपर जाता है	उद्+या (धा०)
डरना	भी (धा०)	होना	अस् (धा०)
त्यागना	हा (धा०)	नहाना	स्ना (धा०)

अभ्यास १२

(क) आसीद्देवकुलो नाम ग्रामः।
मृगधूर्तो हसन्नाह।
किं त्वं मानुषादपि बिभेषि।
तदा वेलाप्यवेला स्यात्।
मम हृदयं मम पार्श्वे नास्ति।
तपस्विनः गंगायास्तीरे शेरते।
नरः न स्वप्यात् दीर्घकालम्।
स प्रातरेवाजागः नदीं प्रति चाचलत।
धनिनो दरिद्रेभ्यो धनं ददतु।
सखे, ब्रूहि किमेतत्।
किं ब्रवीमि मन्दभाग्यः।
देहि विद्यामिमां मम।
कोऽयमायाति ?
सविशेषपूजामस्मै विधेहि।
इति पादयोरपतत् अरोदीच्च
दुर्जनानां वचनेषु न विश्वसिति।
अत्र बहवो निर्धना सन्तीति मे प्रतिभाति।
अधुना वयं धनहीनाः स्मः।
पादाभ्यां यायाश्चेत् श्रममाप्नुयाः।
शूराः शत्रुभ्यो न बिभ्यति।

कल्याणवचनं ब्रूयादपृष्टोऽपि हितो नरः।
तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति।
नाधः शिखा याति कदाचिदेव।
तत्रैवासीत् विदर्भेषु भीमो भीमपराक्रमः।
भासि विद्युदिवाभ्रेषु शंस मे काऽसि कस्य वा।
ब्रूयास्त जनसंसत्सु तत्र तत्र पुनः पुनः।
एते रुदन्ति हरिणा हरितं विमुच्य।
प्रमादः संपदं हन्ति, प्रश्रयं हन्ति विस्मयः।
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

(ख) उस से पूछो वह क्यों रोता है।
तुम क्या करते हो ?
राम ने दण्डक में बहुत राक्षसों को मारा।
जो दिन में सोते हैं, वह आलसी होते हैं।
उसे दान मत दो, वह दुष्ट है।
वह मूर्ख तो कुत्ते से भी डर जाता है।
जो ठगों पर विश्वास करता है, वह दुःख पाता है।
तुम दोनों क्यों रो रहे थे ?
लड़के आपस में ऐसा कह रहे थे कि राम ने सीता को त्याग दिया।
मैं तुम्हारी शरण में आता हूं।
ईश्वर, मुझे पापों से बचाओ।
जंगल में ठंडी हवा चली।
वह मेरे विषय में कुछ नहीं जानता।
अपना काम समय पर करो।
हवाई जहाज़ ऊपर जाता है।
चाणक्य चन्द्रगुप्त का मन्त्री था।
उसने यह पुस्तक मुझे दी और मैंने राम को दी।
मैं प्रातःकाल जागता हूं और नहाता हूं।

लृट् (सामान्य-भविष्यत्, Simple Future)

९७—लट् की विभक्तियों के पूर्व 'स्य' लगादें, तो लृट् की विभक्तियां बन जाती हैं।

परस्मैपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

९८—धातु से परे सार्वधातुक प्रत्ययों से भिन्न जो प्रत्यय

आते हैं, उनकी आर्धधातुक संज्ञा होती है। आर्धधातुक प्रत्यय का पहला वर्ण य् भिन्न कोई व्यञ्जन हो, तो उस से पूर्व इ लग जाता है। जैसे पठ्+स्यति=पठ् इ स्यति=पठिस्यति=पठिष्यति।

कुछ ऐसे धातु भी हैं, जिनसे परे इ नहीं आता। जैसे दा+स्यति=दास्यति।

कुछ थोड़े से ऐसे भी हैं, जिन के दो दो रूप होते हैं, एक इ वाला, दूसरा बिना इ के। जैसे सिध्+स्यति=सेधिष्यति वा सेत्स्यति।

इस इ को इट् कहते हैं, इस लिए इ वाले धातु सेट्, न इ वाले अनिट्, विकल्प से इ वाले वेट् कहलाते हैं। अनिट् थोड़े हैं, वेट् उन से भी थोड़े हैं। इन का पता प्रयोगों से ही लगता है।

आत्मनेपद

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

९९ (क) लृट् प्रत्ययों के परे होने पर धातु के अन्त्य स्वर को गुण होता है। जैसे जि+स्यति=जे स्यति=जेष्यति।

(ख) धातु के अन्त में एक ही व्यञ्जन हो, और उस से पूर्व ह्रस्व स्वर हो, तो उस को भी गुण हो जाता है। जैसे क्षिप्+स्यति=क्षेप् स्यति=क्षेप्स्यति।

याच् (मांगना) उभयपदी।

		परस्मैपद			आत्मनेपद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र० पु०	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
	म० ,,	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
	उ० ,,	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

सब सेट् धातुओं के परस्मैपद और आत्मनेपद के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

जिन को गुण प्राप्त है, उन को गुण भी हो जाता है। जैसे भू+स्यति=भू इ स्यति=भो इ स्यति=भव् इ स्यति=भविष्यति। चित्+स्यति=चित् इ स्यति=चेत् इ स्यति=चेतिष्यति। वृत्+स्यते=वृत् इ स्यते=वर्त् इ स्यते=वर्तिष्यते।

अनिट् धातुओं के रूप इ के बिना होंगे। जैसे दा+स्यति=दास्यति। दा+स्यते=दास्यते। किन्तु सन्धि के नियमों से जो जो परिवर्तन उन में हो सकते हैं, वे सब होंगे। जैसे पच्+स्यति=पक् स्यति=पक् ष्यति=पक्ष्यति।

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लृट्	प्र० पु०	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
	म० ,,	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
	उ० ,,	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

जि (भ्वा० प०) जि+स्यति=जेस्यति=जेष्यति।

नी (भ्वा० उ०) नी+स्यति=नेस्यति=नेष्यति। नी+स्यते=नेस्यते=नेष्यते।

श्रु (स्वा० प०) श्रु+स्यति=श्रोस्यति=श्रोष्यति।

हु (जु० प०) हु+स्यति=होष्यति।

अधि+इ (अ० आ०) अधि+इ+स्यते=अधि ए स्यते=अध्ये स्यते=अध्येष्यते।

शक् (स्वा० प०) शक्+स्यति=शक्ष्यति=शक्ष्यति।

पच् (भ्वा० उ०) पच्+स्यति=पक्स्यति=पक्ष्यति=पक्ष्यति। आत्मनेपद में—पक्ष्यते।

मुच् (तु० उ०) मुच्+स्यति=मोच्स्यति=मोक्स्यति=मोक्ष्यति=मोक्ष्यति—मोक्ष्यते।

प्रच्छ् (भ्वा० प०) प्रच्छ्+स्यति=प्रच्स्यति=प्रक्स्यति=प्रक्ष्यति।

यज् (भ्वा० उ०) यज्+स्यति=यच्स्यति=यक्ष्यति=यक्ष्यति, यक्ष्यते।

त्यज् (भ्वा० प०) त्यक्ष्यति।

भुज् (रु० उ०) भोक्ष्यति, भोक्ष्यते।

अद् (अ० प०) अद्+स्यति=अत्स्यति।

नृत् (दि० प०) नृत्+स्यति=नर्त्स्यति=नत्स्यति।

भिद् (रु० उ०) भेत्स्यति, भेत्स्यते।

रुध् (रु० उ०) रुध्+स्यति=रोध्स्यति=रोत्स्यति।

युध् (दि० आ०) युध्+स्यते=योध्स्यते=योत्स्यते।

नम् (भ्वा० प०) नम्+स्यति=नंस्यति।

दृश्, स्पृश्, और सृज् के ऋ को र होता है।

दृश् (भ्वा०प०) दृश्+स्यति=द्रश्स्यति द्रक्स्यति द्रक्ष्यति=द्रक्ष्यति

स्पृश् (तु० उ०) स्पृश्+स्यति=स्प्रक्ष्यति=स्प्रक्स्यति=स्प्रक्ष्यति=स्प्रक्ष्यति।

सृज् (तु० प०) सृज्+स्यति=स्रज्स्यति=स्रक्ष्यति=स्रक्स्यति=स्रक्ष्यति=स्रक्ष्यति।

शुष् (दि०प०) शुष्+स्यति=शोष्स्यति=शोक्स्यति=शोक्ष्यति=शोक्ष्यति।

वस् (भ्वा० प०) वस्+स्यति=वत्स्यति।

वेट्—सिध् (भ्वा० प०) सिध्+स्यति=सेध्स्यति=सेत्स्यति वा सेधिष्यति।

धातुकोष।

सेट् धातु-भ्वादि परस्मैपद।

पत् गिरना पतिष्यति
पठ्-पढ़ना, पठिष्यति
वद्-कहना, वदिष्यति
रक्ष्-रक्षा करना, रक्षिष्यति
गम्-जाना (अन्यत्र अनिट्, स्य में सेट् है) गमिष्यति
मन्थ्-बिलोना, मन्थिष्यति
स्वाद्-खाना, स्वादिष्यति
कूज्-पक्षियों का बोलना, कूजिष्यति
गर्ज्-गर्जना, गर्जिष्यति
व्रज्-जाना, व्रजिष्यति
अर्च्-पूजना, अर्चिष्यति
भू-होना, भविष्यति
चित्-चेतना, चेतिष्यति
शुच्-शोक करना, शोचिष्यति
सृ—सरिष्यति
स्मृ-स्मरण करना, स्मरिष्यति
तृ-तरना, तरिष्यति
वृष्-बरसना, वर्षिष्यति

सेट् भ्वादि आत्मनेपदी ।

सेव्-सेवा करना, सेविष्यते
ईक्ष्-देखना, ईक्षिष्यते
सह्-सहना, सहिष्यते
वन्द्-वन्दना करना, वन्दिष्यते
शिक्ष्-शिक्षिष्यते
शङ्क्—शङ्किष्यते
जन्—जनिष्यते
शुभ्—शोभिष्यते
भाष—भाषिष्यते
वृत्—वर्तिष्यते
वृध्—वर्धिष्यते
भाष्—बोलना, भाषिष्यते
यत्-यत्न करना, यतिष्यते
कम्प्-कांपना, कम्पिष्यते
श्लाघ्-स्तुति करना, श्लाघिष्यते
द्युत्-चमकना, द्योतिष्यते
रुच्-पसन्द आना, रोचिष्यते
मुद्-प्रसन्न होना, मोदिष्यते
भिक्ष्-मांगना, भिक्षिष्यते
एध-बढ़ना, एधिष्यते
कल्प्-(कल्प) समर्थ होना, कल्पिष्यते
त्वर्-जल्दी करना, त्वरिष्यते

अन्य गणों के सेट् धातु ।

हन्—हनिष्यति
भ्रम्—भ्रमिष्यति
अस्—असिष्यति
ध्वस्—ध्वसिष्यति
ग्रह्—ग्रहीष्यति
मृ—मरिष्यति
जागृ—जागरिष्यति
कृ—करिष्यति
वृत्—वर्तिष्यति
रुद्—रोदिष्यति

सेट् उभयपदी

याच्—याचिष्यति, याचिष्यते
चुर्—चोरयिष्यति, चोरयिष्यते
भूष्—भूषयिष्यति, भूषयिष्यते
दण्ड्—दण्डयिष्यति, दण्डयिष्यते
हृ—हरिष्यति, हरिष्यते
ताड्—ताडयिष्यति, ताडयिष्यते
भक्ष्—भक्षयिष्यति, भक्षयिष्यते
तुल्—तोलयिष्यति, तोलयिष्यते

अनिट् धातु ।

दा—दास्यति ।
स्था—स्थास्यति ।
पा—पास्यति ।
धा—धास्यति ।
जि—जेष्यति ।
श्रु—श्रोष्यति ।
नी—नेष्यति
क्री—क्रेष्यति ।
पच्—पक्ष्यति ।
त्यज्—त्यक्ष्यति ।
यज्—यक्ष्यति ।
ब्रू (वच्)—वक्ष्यति ।
सृज्—स्रक्ष्यति ।
दृश्—द्रक्ष्यति ।
स्पृश्—स्प्रक्ष्यति ।
प्रच्छ्—प्रक्ष्यति ।
अद्—अत्स्यति ।
रुध्—रोत्स्यति ।
युज्—योक्ष्यति ।
भुज्—भोक्ष्यति ।
वेट्-नश्-नंक्ष्यति, नशिष्यति ।

शब्द कोष

(कं) अन्यथा (अ०) नहीं तो
अम्भोनिधि समुद्र
या (धा०) जाना
ब्रू (धा०) बोलना
स्तु (धा०) स्तुति करना
श्वः (आ०) कल (आगामी)
गणित हिसाब
नश् (धा०) नष्ट होना
श्रेणी जमात
विस्मित (वि०) हैरान
प्रिय भलाई
सकाश ओर
नैषध निषिध का राजा (नल)
भद्र भला (वि०)
भैमी भीमकी लड़की (दमयन्ती)
पाश जाल
छिद् (धा०) काटना
मिष्ट मिठाई
सिध् (धा०) सिद्ध होना

प्रावृष्	वर्षा ऋतु	नराधिप	राजा
सरित्	नदी	सौहार्द	मैत्री
कुमुदिनी	कमलनी	त्वत्तः	तुझसे
विकस् (धा०)	फूलना	प्र+हा	दूर होना
प्रति+ज्ञा (धा०)	प्रतिज्ञा करना		

(ख) साथ	सह (अ०)	कुतिया	शुनी
खरीदना	क्री (धा०)	बच्चा	शावक
आप	भवत्	गरमी	ग्रीष्म
मेला	मेलक	हाल	दशा
कब	कदा (अ०)	यत्न करना	यत् (धा०)
मेहनत	परिश्रम	करना	आ+चर् (धा०)
पास करना	उद्+तॄ (धा०)	छावनी	शिविर
निकलना	उद्+इ (धा०)	हवाईजहाज	व्योमयान
दुकान	हट्ट	उड़ना	डी (ड्य्) (धा०)
बीजना	वप् (धा०)		

अभ्यास १३

(क) अन्यथा मम मृत्युर्भविष्यति।
कथमम्भोनिधेः तटं यास्यति।
अथ तत्र गत्वा किं वक्ष्यसि।
भक्ताः ईश्वरं स्तोष्यन्ति।
श्वो गणितस्य परीक्षा भविष्यति।
पापी पापस्य फलेन नंक्ष्यति
श्रेण्यामहं पाठं मनसा पठिष्यामि।
यदि गुरुः प्रसादमेष्यति, पारितोषिकं दास्यति।
यदीमं द्रक्ष्यसि, विस्मितो भविष्यसि।

तदा ज्ञास्यन्ति महाराजाः ।
सोऽस्माकं पाशांश्छेत्स्यति ।
कथमावयोः प्रीतिर्भविष्यति ।
तस्य विवाहस्योपलक्ष्ये
जन्या मिष्टं खादिष्यंति ।
ईश्वरस्य प्रसादेन ते मनो-
रथः सेत्स्यति ।
प्रावृषि सरितः वर्धिष्यन्ते ।
ईश्वरोऽस्माकं कार्यं विधा-
स्यति ।
अहं मोहनमेव प्रश्नं प्रक्ष्यामि
यदा चन्द्रः प्रकाशिष्यते,
कुमुदिन्यः विकसिष्यन्ति
ये परेषामर्थं चोरयिष्यन्ति,
नृपः तानेव दण्डायि-
ष्यति ।

राजन्, करिष्यामि तव प्रियम् ।
दमयन्त्याः सकाशे त्वां कथयिष्यामि नैषध ।
तेन त्वं पूजितो राजन् सुखं वत्स्यसि नो गृहे ।
वस बाहुक भद्रं ते सर्वमेतत् करिष्यसि ।
आश्वास्यति पुनर्भैमी दमयन्ती स्वयंवरम् ।
प्रतिजानामि ते वाक्यं गमिष्यामि नराधिप ।
सौहार्दं चापि मे त्वत्तो न कदाचित् प्रहास्यति ।

(ख) सीता राम के साथ वन
को जायगी ।
मैं इनाम की चीज़ें कल
खरीदूंगा ।
आप वह मेला देखने कब
जावेंगे ।
मेहनत करोगे तो परीक्षा
पास करोगे ।
जब सूरज निकलेगा तो
कमल खिलेंगे ।
बच्चा जब जागेगा तो
दूध के लिए रोवेगा ।
चित्रकार की दुकान पर
हम चित्र देखेंगे ।
जो बीजोगे, वही पाओगे ।
पिता ने तुम्हारी दुर्दशा

देखी तो क्रोध करेगा।
जब यह कुतिया बच्चे
देगी तो उन में से एक
तुम्हें दूंगा।
भक्त जब उस महात्मा को
देखेंगे तो प्रसन्न होजावेंगे।
गरमी में नदियां सूखेंगी।
धर्म के कामों का फल
अच्छा होगा।
तुम्हारा भी वही हाल होगा
जो तुम्हारे पिता का हुआ है।
तुम हरिद्वार कब जाओगे?
सुखी वही होगा जो परि-
श्रम करेगा।
रामदेव का व्याख्यान
सुनेंगे तो लोग परोपकार
के लिए यत्न करेंगे।
पुण्य पाप को जीतेगा।
मैं पाप छोड़ूंगा और धर्म
करूंगा।
छावनी के पास हवाई
जहाज उड़ेगा।

प्रेरणार्थक क्रियाएं (Causatives)

१०० (क) प्रेरणा अर्थ में धातु से परे अय लग जाता है। और चुरादि के अय की नाईं यहाँ भी कार्य होता है। जैसे भिद् (रु० उ०) फोड़ना—भिद्+अय=भेद् अय (१।४क)=भेदय (फुड़वाना); मुद् (भ्वा० आ०) प्रसन्न होना-मुद्+अय=मोद् अय (१।४क)=मोदय (प्रसन्न करना): कृत् (तु० प०) काटना-कृत्+अय=कर्त् अय (१।४ क) =कर्तय (कटवाना); पठ्+अय=पाठ् अय (१।४ख)=पाठय (पढ़ाना)।

(ख) अय परे होने पर अन्त्य-स्वर की वृद्धि होती है। जैसे-नी+अय=ने अय=नाय् अय=नायय: स्तु+अय=स्तौ अय= स्ताव् अय=स्तावय। कृ+अय=कार् अय=कारय।

(ग) आ अन्तवाले धातुओं से अय से पूर्व प् लगकर प्+ अय=पय होजाता है। जैसे दा+अय=दा पय, स्था+अय=स्थापय। पय से पूर्व ज्ञा, ग्ला, म्ला, स्ना धातुओं का आ विकल्प से ह्रस्व भी होजाता है। ज्ञापय वा ज्ञपय। ग्लापय वा ग्लपय, म्लापय वा म्लपय, स्नापय वा स्नपय।

अपवाद-इन धातुओं के अन्त्य स्वर को आ हो जाता है। जि+अय=जा अय=जापय।

अधि+इ+अय=अधि आअय=अधि आपय=अध्यापय। विशेष-ऋ+अय=अर्पय। रुह्+अय=रोह+अय=रोहय वा रोपय।

धू (कांपना) का धूनय, प्री का प्रीणय।

(घ) जब प्रवर्तक से साक्षात् भय हो तो भी का भीषय (आत्मनेपद), किसी साधन से भय हो तो भाषय।

इसी प्रकार वि+स्मि का विस्मापय वा विस्मायय।

अय परे होने पर हन् को घात् होता है-हन्+अय=घात् अय=घातय।

ये धातु उभयपदी होते हैं। इनकी रूपावलि चुरादिगण के धातुओं की नाईं होती है।

कृ+अय=कारय

		परस्मैपद एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	आत्मनेपद एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	कारयति	कारयतः	कारयन्ति	कारयते	कारयेते	कारयन्ते
	म० ,,	कारयसि	कारयथः	कारयथ	कारयसे	कारयेथे	कारयध्वे
	उ० ,,	कारयामि	कारयावः	कारयामः	कारये	कारयावहे	कारयामहे
लङ्	प्र० पु०	अकारयत्	अकारयताम्	अकारयन्	अकारयत	अकारयेताम्	अकारयन्त
	म० ,,	अकारयः	अकारयतम्	अकारयत	अकारयथाः	अकारयेथाम्	अकारयध्वम्
	उ० ,,	अकारयम्	अकारयाव	अकारयाम	अकारये	अकारयावहि	अकारयामहि
लोट्	प्र० पु	कारयतु	कारयताम्	कारयन्तु	कारयताम्	कारयेताम्	कारयन्ताम्
	म० ,,	कारय	कारयतम्	कारयत	कारयस्व	कारयेथाम्	कारयध्वम्
	उ० ,,	कारयाणि	कारयाव	कारयाम	कारयै	कारयावहै	कारयामहै
विधि-लिङ्	प्र० पु०	कारयेत्	कारयेताम्	कारयेयुः	कारयेत	कारयेयाताम्	कारयेरन्
	म० ,,	कारयेः	कारयेतम्	कारयेत	कारयेथाः	कारयेयाथाम्	कारयेध्वम्
	उ० ,,	कारयेयम्	कारयेव	कारयेम	कारयेय	कारयेवहि	कारयेमहि
लृट्	प्र० पु०	कारयिष्यति	कारयिष्यतः	कारयिष्यन्ति	कारयिष्यते	कारयिष्येते	कारयिष्यन्ते
	म० ,,	कारयिष्यसि	कारयिष्यथः	कारयिष्यथ	कारयिष्यसे	कारयिष्येथे	कारयिष्यध्वे
	उ० ,,	कारयिष्यामि	कारयिष्यावः	कारयिष्यामः	कारयिष्ये	कारयिष्यावहे	कारयिष्यामहे

पीछे कह आए हैं कि क्रिया दो प्रकार की होती है—सकर्मक और अकर्मक। सकर्मक क्रियाओं के साथ कर्म आता है और अकर्मक क्रियाओं के साथ नहीं आता। देवदत्तः ओदनं पचति—इस में 'पचति' सकर्मक क्रिया है, और शिशुः शेते—इस में 'शेते' अकर्मक क्रिया है।

१—जब सकर्मक क्रिया का प्रेरणा अर्थ में प्रयोग होता है तो उस समय क्रिया की पूर्ति के लिये एक काम करने वाला, दूसरा प्रेरक और तीसरा कर्म चाहिये।

ऐसे वाक्य में प्रेरक प्रथमान्त होता है, जिस से प्रेरक काम करवाता है, उस का द्योतक शब्द तृतीयान्त होता है, और कर्म द्वितीयान्त होता है। क्रिया का पुरुष, वचन प्रेरक के अनुसार होता है। जैसे—कुम्भकारः घटं करोति—इस वाक्य में कर्त्ता कुम्भकार है और क्रिया करोति। किन्तु इसी वाक्य में साधारण क्रिया को बदल कर यदि उस की प्रेरणार्थक क्रिया (कारयति) रक्खी जाय, तो 'करोति' क्रिया का कर्त्ता कुम्भकारः तृतीया में बदल जाएगा। अब यह वाक्य होगा, 'कुम्भकारेण घटं कारयति' (कुम्भकार से घड़ा बनवाता है। इस वाक्य में 'कारयति' (बनवाता है) का एक कर्त्ता चाहिए। वही प्रेरक है। रामदत्तः कुम्भकारेण घटं कारयति। इसी तरह देवदत्तः सूदेन ओदनं पाचयति, इत्यादि रूप हैं।

अपवाद—जिन क्रियाओं का अर्थ 'जाना' 'खाना' या 'जानना' हो, उन का कर्त्ता प्रेरणा अर्थ में तृतीयान्त नहीं होगा, द्वितीयान्त होगा। अर्थात् वहां दो कर्म हो जायँगे।

दासः गृहम् अगच्छत्—यहां दासं गृहं अगमयत् होगा, दासेन न होगा।

याचकः भोजनम् अश्नाति—इसमें याचकं भोजनम् आशयति होगा, 'याचकेन' न होगा।

शिष्याः वेदार्थं विदन्ति—इसमें शिष्यान् वेदार्थं वेदयति होगा।

२—जब क्रिया अकर्मक हो तो वह प्रेरणा अर्थ में सकर्मक हो जाती है। जैसे—शिशुः शेते—इस वाक्य में 'शेते' (सोता है) क्रिया अकर्मक है, पर जब यह प्रेरणार्थक 'शाययति' (सुलाता है) हो जाती है तो शिशुः 'कर्त्ता' शिशुं 'कर्म' (द्वितीयान्त) हो जायगा। शिशुं शाययति (बच्चे को सुलाता है) 'शाययति' का कर्त्ता (प्रेरक) कोई चाहिए। यदि कोई माता शिशुं शाययति तो वाक्य पूर्ण होगा।

छात्रः जागर्ति	(गुरुः) छात्रं जागरयति
वृक्षः वर्धते	(मालाकारः) वृक्षं वर्धयते
शत्रुः म्रियते	(नृपः) शत्रुं मारयति

शब्दकोष।

(क) मकर	मगर	भार	बोझ
निज	अपना	वाहक	मज़दूर
दयिता	भार्या	रञ्ज् (धा०)	प्रसन्न करना
सम्+आ+ज्ञा (धा०)	आज्ञा देना	श्रम	थकावट
नि+विद्(धा०)	निवेदन करना	वि+द्युत्(धा०)	चमकना
भिक्षुक	भिखारी	तृप् (धा०)	तृप्त होना
परिवार	कुटुम्ब	पार्थिव	राजा
विक्रम	बल	सम	साथ
अनभिमत	अनिष्ट	सख्य	मैत्री
भारतीय	भारतसम्बन्धी	क्लिद् (धा०)	भीगना
		मारुत	वायु

(ख) कोचवान	सारथि	रुपया	रूप्य-मुद्रा
ठहरना	स्था (धा०)	पीटना	तड् (धा०)
उत्पन्न होना	जन् (धा०)	हाज़िर होना	उप+स्था (धा०)
आज	अद्य (अ०)	किसान	कृषक
ही	एव (अ०)	खेत	क्षेत्र
काटना	छिद् (धा०)	सींचना	सिञ्च् (धा०)
चिट्ठी	पत्र	गर्जना	गर्जन
कुम्हार	कुम्भकार		

अभ्यास १४

(क) मकरोऽपि फलानि निज-दयिताया अर्पयति ।

सेनापतिः करटकः समाज्ञापयति ।

नलाय सर्वं न्यवेदयत् ।

इयं व्याघ्री भाद्रपदे मासे शावकं जनयिष्यते ।

स्वामी भृत्येन कार्यं कारयति ।

देवः भृत्यैर्भिक्षुकेभ्यः भोजनं दापयति ।

गुरुः शिष्यान् रामायणं पाठयतु ।

स सूदेनान्नं न पाचयति, स्वयमेव पचति ।

आत्मानं विस्मितमिवाऽदर्शयत् ।

सञ्जीवकमेव हत्वा स्वपरिवारं तर्पयामि ।

तदा त्वमपि स्वविक्रमं दर्शयिष्यसि ।

न जाने किमनभिमतं दर्शयिष्यति ।

व्याघ्रो हस्तं दर्शयति ।

देवदत्तः विप्रान् भोजनं भक्षयति ।

आचार्यः यजमानान् भारतीयां कथां श्रावयति ।

नृपः सारथिना रथमवाहयत् ।

भारं वाहकेन मदीयं गृहं प्रापय ।

कथं जनस्तं परितोषयिष्यति ?
अरञ्जयत् प्रजा वीरो धर्मेण परिपालयन् ;
वने घोरे महाराज नाशयिष्याम्यहं क्रमम् ।
मां खादय मृगश्रेष्ठ दुःखादस्माद्विमोचय ।
तादृग्रूपश्च पश्यामि विद्योतयति मे गृहम् ।
अनर्पयत् सुदेवश्च गोसहस्रेण पार्थिवः ।
दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिश्चापि न कारयेत् ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।

(ख) कोचवान, रथ ठहराओ।
कौशल्या ने राम को उत्पन्न किया।
मैं आज तुम से यही काम कराऊंगा।
मुझे कालीदास की शकुन्तला पढ़ाओ।
मैं अभी आप को मेले का वर्णन सुनाता हूं।
क्षत्रिय युद्ध में सिर भी काट देते हैं।
उस ने उस वृक्ष को कटवा दिया।
मैं तुम से एक चिट्ठी लिखवाऊंगा।
राम ने कुम्हार से एक सुन्दर घड़ा बनवाया।
राम मोहन से भीख मंगवाता है।
तुम्हारा सन्देश मैं उस दास से कहलवा दूंगा।
इन भिखारियों को एक २ रुपया दिलवा दो।
इन चोरों को खूब पिटवायो।
वाल्मीकि ने रामयण कुश से गवाई।
इन पापियों को बंधवादो।
राजन्, आज्ञा दीजिये।
जाओ, और उस दुष्ट को हाज़िर करो।
किसान कूओं से पानी निकलवाते हैं और खेतों को सिंचवाते हैं।
सच्चा गुरु शिष्यों को सुमार्ग दिखाता है।
शेर का गर्जन मेरे दिल को कम्पाता है।

कर्मवाच्य और भाववाच्य

१०१–वाक्य में क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से हो सकता है। जब क्रिया का कर्ता से सीधा सम्बन्ध हो, तो क्रिया कर्तृवाच्य कहलाती है। जैसे–'देवदत्तः ओदनं पचति'। यहां पचति का सीधा सम्बन्ध देवदत्त (कर्ता) से है।

अतः यहां क्रिया कर्तृवाच्य है।

कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है, और क्रिया के पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं। जैसा ऊपर के वाक्य में कर्ता (देवदत्तः) प्रथम पुरुष एकवचन है, तो क्रिया पद (पचति) भी प्रथम पुरुष एकवचन है।

१०२–जब क्रिया का कर्म से सीधा सम्बन्ध हो तो क्रिया कर्मवाच्य कहलाती है। जैसे 'देवदत्तेनौदनः पच्यते' यहां 'पच्यते' क्रिया का सम्बन्ध 'ओदनः' कर्म से है।

कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है और क्रिया के पुरुष वचन कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे—'पच्यते' प्रथम पुरुष एकवचन में है और ओदनः भी।

१०३—जब क्रिया का सम्बन्ध न कर्ता से हो और न कर्म से हो तो क्रिया भाववाच्य कहलाती है। जैसे—'तेन स्थीयते' यहां 'स्थीयते' का सम्बन्ध किसी से नहीं।

१०४—(क) कर्मवाच्य और भाववाच्य में हर एक धातु से परे आत्मनेपद प्रत्यय ही आते हैं।

(ख) सार्वधातुक प्रत्यय परे होने पर कर्मवाच्य और भाववाच्य में सब धातुओं से परे य विकरण आता है। जैसे ज्ञा+ते=ज्ञायते भू+ते=भूयते।

(ग) इस य से पूर्व इ, उ दीर्घ होजाते हैं। जैसे इ (जाना)–

इ+ते=इयते=ईयते । इसी प्रकार चि से चीयते । श्रु से श्रूयते ।

(घ) (१)–कृ (ह्रस्व) को रि होता है। जैसे कृ+ते=कृयते=क्रियते।

(२) ऋ से पूर्व संयोग हो, तो उस ऋ को गुण (अर्) होता है । जैसे स्मृ+ते=स्मृयते=स्मर्यते ।

(ङ) (दीर्घ) ऋ को ईर् होता है । जैसे कॄ+ते=कॄयते=कीर्यते=कीर्यते । इसी प्रकार स्तॄ का स्तीर्यते ।

(च) ऋ से पूर्व यदि ओष्ठ्य वर्ण हो तो ऊर् होता है । पॄ+य+ते=पूर्यते ।

(छ) धातु का अनुनासिक वर्ण यदि एक ही व्यञ्जन से पूर्व हो तो उसका लोप हो जाता है । भञ्ज् य ते=भज्यते ।

(ज) सम्प्रसारण के योग्य धातुओं को सम्प्रसारण होता है । जैसे+यज्+य+ते=इज्यते । वच्+य+ते=उच्यते । स्वप्+य+ते=सुप्यते । ग्रह्+य+ते=गृह्यते ।

(झ) चुरादि और प्रेरणार्थक क्रियाओं के अय का लोप होता है, पर उन के गुण वृद्धि बने रहते हैं । जैसे चोर्यते । कार्य+ते=कारयते=कार्यते ।

कर्मवाच्य 'पच्' धातु (सार्वधातुक में 'पच्य')

आत्मनेपद

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लट्	प्र० पु०	पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
	म० ,,	पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
	उ० ,,	पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे
लङ्	प्र० पु०	अपच्यत	अपच्येताम्	अपच्यन्त
	म० ,,	अपच्यथाः	अपच्येथाम्	अपच्यध्वम्
	उ० ,,	अपच्ये	अपच्यावहि	अपच्यामहि
लोट्	प्र० पु०	पच्यताम्	पच्येताम्	पच्यन्ताम्
	म० ,,	पच्यस्व	पच्येथाम्	पच्यध्वम्
	उ० ,,	पच्यै	पच्यावहै	पच्यामहै

विधि-लिङ्	प्र० पु०	पचेत	पचेयाताम्	पचेरन्
	म० पु०	पचेथाः	पचेयाथाम्	पचेध्वम्
	उ० पु०	पचेय	पचेवहि	पचेमहि

य आर्धधातुक में नहीं आता।

आर्धधातुक में कर्मवाच्य के रूप भी वैसे ही होते हैं, जैसे कि कर्तृवाच्य के, किन्तु होता आत्मनेपद ही है। जैसे पच् का—पक्ष्यते, भू का—भविष्यते।

पीछे कहा गया है कि कर्तृवाच्य क्रिया का कर्त्ता प्रथमान्त होता है, और कर्म द्वितीयान्त और क्रिया का पुरुष वचन कर्त्ता (प्रथमान्त) के अनुसार होते हैं। और कर्मवाच्य क्रिया का कर्त्ता तृतीयान्त, कर्म प्रथमान्त और क्रिया का सम्बन्ध कर्म (प्रथमान्त) से रहता है।

अतः जिस वाक्य में क्रिया कर्तृवाच्य हो तो उसे कर्मवाच्य बदलने में कर्तृवाच्य क्रिया के कर्त्ता और कर्म की भी विभक्तियां बदल जाती हैं। जैसे—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
विप्रः भोजनम् भक्षयति	विप्रेण भोजनं भक्ष्यते
रामः अरीन् हन्ति	रामेण अरयः हन्यन्ते
त्वं माम् आह्वयसि	त्वया अहम् आह्वये

यदि क्रिया अकर्मक हो तो कर्त्ता तृतीयान्त हो जाता है और कर्म के अभाव में क्रिया का सम्बन्ध किसी शब्द से नहीं रहता। वह सदा प्रथम पुरुष के एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। ऐसी क्रिया को भाववाच्य क्रिया कहते हैं।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
त्वं तिष्ठसि	त्वया स्थीयते
युवां तिष्ठथः	युवाभ्यां स्थीयते
वयं तिष्ठामः	अस्माभिः स्थीयते

शब्दकोष

(क) **व्याघ्रमारी** शेरमारनेवाली
जम्बुक गीदड़
प्रज्ञा बुद्धि
वचस् वचन
कः+चित् कोई
व्यक्ति शकल
नियोग काम
चर्चा जिकर
विपद् विपत्ति
परि+नी(धा०) विवाहना
हन्यमान(वि०)मारजाता हुआ
विन्दु बूंद
निपात गिरना
क्रमशः एक एक कर
विदर्भ देशका नाम
सम्+उप+दिश् (धा०) दिखाना
अधिकार पद
नि+युज्(धा०) लगाना
प्रतीकार उपाय
एकत्र (अ०) एक जगह
सुखिन् (वि०) सुखी
स्व+इच्छा अपनी इच्छा
उदक+आदि पानी आदि
आहार भोजन
सत्वरम् (अ०) जल्दी
प्र+मृज् (धा०) पोंछना
अश्रु आंसु
किम्+अर्थम् किसलिए
कृषीवल किसान
चतुर्वर्ग चारोंका समूह
दम्भ ठगी
विधु चांद
विधि भाग्य
ग्रस् (धा०) पकड़ना
राहु एक नक्षत्र
जाति+मात्र केवल जाति
पर्जन्य बादल

(ख) **पहलवान** मल्ल
दूध दुग्ध
अभी अधुना+एव(अ०)
कञ्जूस कृपण (वि०)
जानवर प्राणिन्
विचारा निस्सहाय(वि०)
बच्चा बालक
धान धान्य
कड़ा विषम (वि०)
सहना सह् (धा०)

अभ्यास १५

(क) यत्रास्ते धूर्तो तत्र गम्यताम्।
व्याघ्रात् सा कथं मुच्यताम् ?
व्याघ्रमार्या भयात् जम्बुकः व्याघ्रेण नीयते।
प्रज्ञया विहीनस्य बलं परेषां कार्याय दृश्यते।
भो भोः, श्रूयतां मे वचः।
कश्चिदस्ति परं व्यक्तया न ज्ञायते।
स्वनियोगस्यैव चर्चा क्रियताम्।
विपदि स्वजनैरपि नरास्त्यज्यन्ते।
रामेण सीता पर्यणीयत।
उच्यता मात्मनोऽभिप्रेतम्।
संजीवको भोजनस्याधिकारे नियुज्यताम्।
धैर्येण प्रतीकारश्चिन्त्यताम्।
सर्वैरेकत्र सुखिभिःस्थीयताम्
स्वेच्छयोदकादेराहारोऽनुभूयताम्।
सत्वर मागम्यतां देवेन।
किं रुद्यते, प्रमृज्यतामश्रु।
भगवन्नभिषिच्यतां नगा।
किमर्थं बालकेनाद्य न रुद्यते।
परीक्षाया दिनेषु छात्रैर्रात्रिष्वपि जागर्यते।
कृषीवलेन क्षेत्रे बीजमुप्यते।

न हन्यते हन्यमाने शरीरे।
जलबिन्दोः निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
तत्किमर्थं विदर्भाणां पन्थाः समुपदिश्यते।
तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो दम्भार्थमपि सेव्यते।
विधुरपि विधियोगाद् ग्रस्यते राहुणासौ।
जातिमात्रेण किं कश्चिद्धन्यते पूज्यते क्वचित्।
विकलेऽपि हि पर्जन्ये जीव्यते न तु भूपतौ।

(ख) सुना गया है कि देव से मोहन पहलवान जीता गया।

दो घड़े दूध से भर जायँ।

इन भिखारियों को भोजन अभी दिया गया।

राम से रावण जीता गया।

कञ्जूसों का धन चोरों से चुराया जाता है।

मुझसे आज गरमी के कारण न सोया गया।

कुम्हारों से घड़े बनाये जाते हैं।

मुझ से यह खाना न खाया जायगा।

बिचारे जानवर व्याधों से पकड़े जाते हैं।

बच्चों से यह गीत अच्छी तरह गाया गया।

इस दशा में ध्यान से काम नहीं किया जायगा।

साँप से वे दोनों आदमी काटे गये।

राम से हरि की स्तुति की जारही है।

खेतों में धान बोया जारहा है।

बालक से यह कड़ा काम कैसे होगा?

तुम कल अध्यापक से बुलाये जाओगे।

लड़के दण्डसे सिखाये जाते हैं।

मुझसे पाँव से नहीं चला जाता।

धर्मसे स्वर्ग पाया जाता है।

मुझसे उसका दुराचार नहीं सहा जाता।

कृदन्त-प्रकरणम् (Verbal Derivatives)

१०५—धातु से नाम और अव्यय बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें कृत् कहते हैं और कृत् जिन के अन्त में हों, उन्हें कृदन्त। कृत और कृत्वा दोनों कृदन्त शब्द हैं। दोनों कृ धातु से बने हैं। पहला त प्रत्यय और दूसरा त्वा प्रत्यय लगने से, पहला नाम है, दूसरा अव्यय।

अव्यय तो जैसे के वैसे वाक्य में जोड़े जाते हैं। जैसे 'कटं कृत्वा विक्रीणीते' चटाई बना कर बेचता है, पर नाम विभक्त्यन्त हो कर ही वाक्य में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—कटः कृतः=चटाई बनाई गई है।

कर्तृवाच्य कृत् (Active participles)

अत्, आन।

१०६—वर्तमान काल के कर्तृवाच्य कृत् प्रत्यय दो हैं—अत् और आन। अत् परस्मैपदी और आन आत्मनेपदी है।

ये दोनों प्रत्यय सार्वधातुक स्वरादि हैं, इसलिए स्वरादि सार्वधातुक (अन्ति) परे होने पर जो कार्य होते हैं, वे सारे इनके परे होने पर होते हैं। जैसे भू+अन्ति=भू अ अन्ति=भो अ अन्ति=भो अन्ति=भवन्ति और क्री+अन्ति=क्री ना अन्ति=क्रीनू अन्ति=क्रीण् अन्ति=क्रीणन्ति। इसी प्रकार भू+अत=भू अ अत्=भो अ अत्=भो अत्=भवत् और क्री+आन=क्रीना आन=क्रीनू आन=क्रीण् आन=क्रीणान।

अत् प्रत्ययान्त शब्द बनाने का सीधा मार्ग यह है, कि अन्ति प्रत्यय परे होने पर धातु का जो रूप बनता है, उस में अन्ति के न्ति के स्थान केवल त् रख दो, वही अत् प्रत्ययान्त रूप

होगा। जैसे रूपावलि में दिये रूपों के अनुसार—बोधन्ति—बोधत्, भवन्ति—भवत्। मुञ्चन्ति—मुञ्चत्, इच्छन्ति—इच्छत्, दीव्यन्ति—दीव्यत्, चोरयन्ति—चोरयत्, सुन्वन्ति—सुन्वत्, शक्नुवन्ति—शक्नुवत्, रुन्धन्ति—रुन्धत्, तन्वन्ति—तन्वत्, कुर्वन्ति—कुर्वत्, क्रीणन्ति—क्रीणत् । जानन्ति—जानत्, गृह्णन्ति—गृह्णत् ।

१०७-(क) अत् प्रत्ययवालों का न् वाला प्रबल प्रयोग उन्हीं का होता है, जिन के अन्ति के प्रयोग में न् पाया जाता है, जैसे भवन्ति के अन्ति में न् है तो भवत् के प्रबल प्रयोग-भवन् भवन्तौ-इत्यादि में भी न् है। जहां अन्ति के प्रयोग में न् नहीं पाया जाता, उन के न् वाले रूप नहीं होंगे-जैसे जक्षति, जुह्वति, ददति में न् नहीं, इन के अत् अन्त वाले जक्षत्, जुह्वत्, ददत् के प्रबलरूप जक्षतौ, जुह्वतौ, ददतौ इत्यादि होंगे।

(ख) विकरण के ह्रस्व अ से परे आन से पूर्व म् लग कर आन को मान हो जाता है। जैसे वृध् अ आन=वृध्अ मान=वर्ध-अमान=वर्धमान।

वृत् (भ्वा० आ) वर्तमान	तन् (त० उ) तन्वान
मुच् (तु०उ) मुञ्चमान	रुध् (रु०उ०) रुन्धान
विद् (दि०आ) विद्यमान	क्री (क्र्या०उ) क्रीणान
चुर् (चु०उ) चोरयमाण	द्विष् (अ०उ) द्विषाण
सु (स्वा०उ) सुन्वान	भृ (जु०उ) बिभ्राण

विशेष-आस्+आन=आस्ईन=आसीन।

वर्तमान कर्मवाच्य (Present Passive Participle)

१०८—(क) कर्मवाच्य में नियमतः आत्मनेपद होता है, इस लिए कर्मवाच्य में नियमतः आन आता है।

(ख) कर्मवाच्य में धातु से य लग जाता है, इसलिए अन्त में अ होजाने पर आन के स्थान मान हो जाता है। जैसे पच्य+आन=पच्यमान। गम+य+मान=गम्यमान।

कुछ धातुओं के शत्रन्त रूप।

धातु	शत्रन्त	धातु	शत्रन्त
भू	भवत्	वन्द्	वन्दमान
वस्	वसत्	यत्	यतमान
पत्	पतत्	शङ्क्	शङ्कमान
दा	यच्छत्	वृध्	वर्धमान
पा	पिबत्	श्लाघ्	श्लाघमान
गम्	गच्छत्	कम्प्	कम्पमान
शुच्	शोचत्	सह्	सहमान
पठ्	पठत्	मुद्	मोदमान
क्षि	क्षयत्	शुभ्	शोभमान
जि	जयत्	रुच्	रोचमान
स्मृ	स्मरत्	भाष्	भाषमाण
सृ	सरत्	सेव्	सेवमान
त्यज्	त्यजत्	रभ्	रभमाण
दृश्	पश्यत्	लभ्	लभमान
रक्ष्	रक्षत्	बुध्	बोधत्-बोधमान
वद्	वदत्	याच्	याचत्-याचमान
नम्	नमत्	नी	नयत्-नयमान
स्था	तिष्ठत्	हृ	हरत्-हरमाण
पच्	पचत्	नश्	नश्यत्
शिक्ष्	शिक्षमाण	क्रुध्	क्रुध्यत्
ईक्ष	ईक्षमाण	शुष्	शुष्यत्

तुष्	तुष्यत्
अस् (दि०)	अस्यत्
नृत्	नृत्यत्
पुष्	पुष्यत्
दिव्	दीव्यत्
युध	युध्यमान
जन्	जायमान
विद् (होना)	विद्यमान
इष्	इच्छत्
क्षिप्	क्षिपत्
प्रच्छ्	पृच्छत्
सृज्	सृजत्
स्पृश्	स्पृशत्
मृ	म्रियमाण
मुच्	मुञ्चत्-मुञ्चमान
सिच्	सिञ्चत्-सिञ्चमान
चुर्	चोरयत्-चोरयमाण
ताड्	ताडयत्-ताडयमान
भूष्	भूषयत्-भूषयमाण
भक्ष्	भक्षयत्-भक्षयमाण
दण्ड्	दण्डयत्-दण्डयमान
तुल्	तोलयत्-तोलयमान
स्पृह्	स्पृहयत्-स्पृहयमान
अद्	अदत्

इ	यत्
हन्	घ्नत्
अस् (अदादि)	सत्
विद् (जानना)	विदत्
रुद्	रुदत्
जागृ	जाग्रत्
पा	पात्
या	यात्
स्वप्	स्वपत्
शी	शयान
ब्रू	ब्रुवत्-ब्रुवाण
भी	बिभ्यत्
शक्	शक्नुवत्
आप्	आप्नुवत्
हि	हिन्वत्
श्रु	शृण्वत्
दा	ददत्-ददान
धा	दधत्-दधान
रुध्	रुन्धत्-रुन्धान
युज्	युञ्जत्-युञ्जान
भुज्	भुञ्जत्-भुञ्जान
भिद्	भिन्दत्-भिन्दान
तन्	तन्वत्-तन्वान
कृ	कुर्वत्-कुर्वाण

मुष्	मुष्णत्	ज्ञा	जानत्-जानान
बन्ध	बध्नत्	ग्रह	गृह्णत्-गृह्णान
क्री	क्रीणत्-क्रीणान		

—:०:—

अभ्यास १६

(क) स पुस्तकं पठन् भोजनं भुङ्क्ते ।

मया तत्र लम्बमानः एकः सर्पोऽदृश्यत ।

तयोः वर्धमानः स्नेहः दैवेनानाश्यत ।

किञ्चित् कुर्वन्तो गुरुं निष्ठ्य ।

शयानो न पठेत्, भुञ्जानश्च न विवदेत ।

क्रीडन् स बालकः गृहस्य शिखरादपतत्

सर्वेषु तत्रासीनेषु एकोऽवदत् ।

वातेन कम्पमानायाः लतायाः पुष्पाण्यपतन् ।

म्रियमाणस्य शुकशावकस्य मुखे जलस्य बिन्दून् पातय ।

बालकमेवं भणन् न लज्जसे ।

यः शूद्राणां कर्माणि करोति स जीवन्नेव शूद्रः जायते ।

युध्यमानयोः नृपयोर्मध्यात् एकोऽवश्यं मरिष्यति ।

(ख) मोहन भागता २ गुरु के पास गया ।

वह खेल देखता हुआ लिख रहा है ।

गाड़ी से गिरती हुई उस स्त्री का हाथ मैंने पकड़ा ।

वह आप की प्रशंसा करता नहीं थकता ।

जमात में बहुत बोलता हुआ अध्यापक से पीटा जायगा ।

कई धन जमा करते २ ही

मर जाते हैं।
जल पीता हुआ बैल गर्जा।
बढ़ते हुए शत्रु को मारदेना चाहिए।
दूसरों को बुराई की ओर ले जाता हुआ नरक में जाता है।
दौड़ता २ बैल कुएँ में गिर पड़ा।
खाना पकाती हुई स्त्री के कपड़े जल गये।
सांप सरकता हुआ एक बिल में घुस गया।

भविष्यत्-वाच्य कृत (Future Participles)

वर्तमान से स्य लगा देने से 'भविष्यत्' कृत् बन जाते हैं—अर्थात् भविष्यत् कृत् परस्मैपदी स्यत् और आत्मनेपदी स्यमान है। जिस धातु का जो रूप लृट् का स्य वा ष्य तक है, उस के परे त् लगा देने से स्यत् के रूप और मान लगा देने से स्यमान के रूप बन जाएंगे जैसे—

भविष्यति–भविष्यत्।
वर्धिष्यते–वर्धिष्यमाण।
यक्ष्यति–यक्ष्यत्
यक्ष्यते–यक्ष्यमाण
देविष्यति–देविष्यत्
चोरयिष्यते–चोरयिष्यमाण
दास्यति–दास्यत्
सोष्यति—सोष्यत्
सोष्यते—सोष्यमाण
तनिष्यति—तनिष्यत्
तनिष्यते—तनिष्यमाण
रोत्स्यति—रोत्स्यत्
क्रेष्यति—क्रेष्यत्
क्रेष्यते—क्रेष्यमाण
द्वेक्ष्यति—द्वेक्ष्यत्
द्वेक्ष्यते—द्वेक्ष्यमाण

कर्म-वाच्य में स्यमान ही आता है। होष्यते–होष्यमाण, (जो पदार्थ हवन किया जायगा)।

त, तवत्, त्वा

इन प्रत्ययों के अर्थ तो एक दूसरे से अलग हैं, किन्तु इन की प्रयोग-सिद्धि प्रायः एक जैसी है, इस लिये इन्हें इकट्ठे दिखलाते हैं।

१०९-इन में से 'त' प्रायः कर्मवाच्य भूतकाल में आता है। त-अन्त रूप को (Past Passive Participle) क्त-अन्त कहते हैं। तवत् कर्तृवाच्य भूतकाल में आता है और तवत्-अन्त रूप को क्तवत्वन्त (Past Active Participle) कहते हैं। त्वा अन्त वाले को क्त्वान्त (Gerund) कहते हैं। जैसे हरिणा कटः कृतः (त) (हरि से चटाई बनाई गई है), हरिः कटं कृतवान् (तवत्) (हरि ने चटाई बना ली है), हरिः कटं कृत्वा गृहं गतः (हरि चटाई बना कर घर गया है)।

११०-(क) त, तवत्, त्वा के परे होते धातु को गुण नहीं होता। जैसे कृ में कृत, कृतवत्, कृत्वा। सेट् धातुओं से इन प्रत्ययों से पूर्व इ आ जाता है, अनिट् से नहीं आता, वेट् से विकल्प से आता है, पर इन प्रत्ययों में इन नियमों का कहीं २ अपवाद भी है। जैसे भू सेट् है, पर यहां भूत, भूतवत्, भूत्वा ही बनते हैं।

(ख) चुरादि और प्रेरणार्थक धातुओं के प्रयोगों में यह विशेषता है कि त, तवत् परे होने पर अय का लोप हो जाता है किन्तु अय से पूर्व जो गुण वा वृद्धि हुए हों वे बने रहते हैं:—

त्वा के पूर्व लोप नहीं होता।

धातु	त	तवत्	त्वा
चोरय	चोरित	चोरितवत्	चोरयित्वा
कारय	कारित	कारितवत्	कारयित्वा

(ग) कुछ धातु ऐसे भी हैं जिनसे परे त,तवत् के स्थान में न, नवत् होजाते हैं। उनसे परे त्वा अपने रूप में रहता है। ऐसे वे अनिट् धातु हैं जिनके अन्त में ऋ के स्थान ईर् वा ऊर् हुआ है।

जैसे स्तृ+त=स्तीर्+त=स्तीर्न=स्तीर्ण। पृ+त=पूर्+त=पूर्न=पूर्ण।

(घ) अन्त में दीर्घ आ हो और आ से पूर्व व्यञ्जन से संयुक्त अर्धस्वर हो तो भी त, तवत् के त को न होजाता है। जैसे म्ला+त=म्लान। परन्तु ज्ञा+त=ज्ञात।

(ङ) धातु के अन्त में दृ हो तो यह दृ और त, तवत् का त भी न् बन जाता है। जैसे भिद्+त=भिन्+न=भिन्न।

धातु	त	तवत्	त्वा
स्तृ	स्तीर्ण	स्तीर्णवत्	स्तीर्त्वा
म्ला	म्लान	म्लानवत्	म्लात्वा
भिद्	भिन्न	भिन्नवत्	भित्त्वा
छिद्	छिन्न	छिन्नवत्	छित्त्वा
विशेष धातु			
भञ्ज्	भग्न	भग्नवत्	भङ्क्त्वा

(च) त तवत् त्वा, परे होने पर अनिट् न म वालों के न म का लोप होता है। जैसे—

धातु	त	तवत्	त्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा
मन्	मत	मतवत्	मत्वा
गम्	गत	गतवत्	गत्वा
नम्	नत	नतवत्	नत्वा

त्वा के स्थान य और त्य।

१११—(क) समास में त्वा के स्थान य हो जाता है। और यदि अन्त में ह्रस्व स्वर हो, तो त्य हो जाता है। न के साथ समास में त्वा को त्य वा य नहीं होते।

धातु	त्वा	य	त्य	न के साथ समास
भू	भूत्वा	सम्भूय		अभूत्वा

धातु	त्वा	य	त्य	न के साथ समास
तॄ	तीर्त्वा	अवतीर्य		अतीर्त्वा
जि	जित्वा	विजित्य		अजित्वा
हृ	हृत्वा	विहृत्य		अहृत्वा

(ख)-त्वा परे होने पर अनिट् नम् वालों के नम् का लोप होता है। जैसे—हन्-हत्वा, गम्-गत्वा। समास में म् लोप विकल्प से होता है। अ लोप वाले रूप से य और लोप वाले से त्य लग कर दो २ रूप बनते हैं।

धातु	त्वा	य	त्य
हन्	हत्वा		आहत्य
मन्	मत्वा		अवमत्य
गम्	गत्वा	आगम्य	आगत्य
नम्	नत्वा	प्रणम्य	प्रणत्य

कुछ धातुओं के रूप।

धातु	त-अन्त	तवत्-अन्त	त्वा-अन्त
भू	भूत	भूतवत्	भूत्वा
जि	जित	जितवत्	जित्वा
स्मृ	स्मृत	स्मृतवत्	स्मृत्वा
नी	नीत	नीतवत्	नीत्वा
नृत्	नृत्त	नृत्तवत्	नर्तित्वा
हृ	हृत	हृतवत्	हृत्वा
अस् (दिवा०)	अस्त	अस्तवत्	अस्त्वा-असित्वा
क्षिप्	क्षिप्त	क्षिप्तवत्	क्षिप्त्वा
मृ	मृत	मृतवत	मृत्वा

इ	इत	इतवत्	इत्वा
पा (पीना)	पीत	पीतवत्	पीत्वा
पा (रक्षा करना)	पात	पातवत्	पात्वा
या	यात	यातवत्	यात्वा
भी	भीत	भीतवत्	भीत्वा
शक	शक्त	शक्तवत्	शक्त्वा
आप्	आप्त	आप्तवत्	आप्त्वा
श्रु	श्रुत	श्रुतवत्	श्रुत्वा
कृ	कृत	कृतवत्	कृत्वा
क्री	क्रीत	क्रीतवत्	क्रीत्वा
क्षि	क्षित-क्षीण	क्षितवत् क्षीणवत्	क्षित्वा
गम्	गत	गतवत्	गत्वा
नम्	नत	नतवत्	नत्वा
हन्	हत	हतवत्	हत्वा
तन्	तत	ततवत्	तत्वा-ततित्वा
जन्	जात	जातवत्	जनित्वा
मुच्	मुक्त	मुक्तवत्	मुक्त्वा
सिच्	सिक्त	सिक्तवत्	सिक्त्वा
ब्रू (वच)	उक्त	उक्तवत्	उक्त्वा
त्यज्	त्यक्त	त्यक्तवत्	त्यक्त्वा
युज्	युक्त	युक्तवत्	युक्त्वा
भुज्	भुक्त	भुक्तवत्	भुक्त्वा
पच्	पक्व	पक्ववत्	पक्त्वा
सृज्	सृष्ट	सृष्टवत्	सृष्ट्वा
दृश्	दृष्ट	दृष्टवत्	दृष्ट्वा

नश्	नष्ट	नष्टवत्	नष्ट्वा-नष्ट्वा-नशित्वा
पुष्	पुष्ट	पुष्टवत्	पुष्ट्वा
इष्	इष्ट	इष्टवत्	इष्ट्वा
शुष्	शुष्क	शुष्कवत्	शुष्ट्वा
प्रच्छ्	पृष्ट	पृष्टवत्	पृष्ट्वा
वृध्	वृद्ध	वृद्धवत्	वृद्ध्वा-वर्धित्वा
बुध्	बुद्ध	बुद्धवत्	बुद्ध्वा
क्रुध्	क्रुद्ध	क्रुद्धवत्	क्रुद्ध्वा
युध्	युद्ध	युद्धवत्	युद्ध्वा
रुध्	रुद्ध	रुद्धवत्	रुद्ध्वा
बन्ध्	बद्ध	बद्धवत्	बद्ध्वा
रभ	रब्ध	रब्धवत्	रब्ध्वा
लभ्	लब्ध	लब्धवत्	लब्ध्वा
भिद्	भिन्न	भिन्नवत्	भित्त्वा
अद्	जग्ध	जग्धवत्	जग्ध्वा
दा	दत्त	दत्तवत्	दत्त्वा
स्था	स्थित	स्थितवत्	स्थित्वा
धा	हित	हितवत्	हित्वा
अस् (होना)	भूत	भूतवत्	भूत्वा
सह	सोढ	सोढवत्	सोढ्वा-सहित्वा
स्वप्	सुप्त	सुप्तवत्	सुप्त्वा
पत्	पतित	पतितवत्	पतित्वा
पठ्	पठित	पठितवत्	पठित्वा
रक्ष्	रक्षित	रक्षितवत्	रक्षित्वा
यत	यत्त	यत्तवत	यतित्वा

शक्	शङ्कित	शङ्कितवत्	शङ्कित्वा
कम्प्	कम्पित	कम्पितवत्	कम्पित्वा
भक्ष्	भक्षित	भक्षितवत्	भक्षयित्वा
दण्ड्	दण्डित	दण्डितवत्	दण्डयित्वा
वद्	उदित	उदितवत्	उदित्वा
वस्	उषित	उषितवत्	उषित्वा
श्लाघ	श्लाघित	श्लाघितवत्	श्लाघित्वा
भाष्	भाषित	भाषितवत्	भाषित्वा
याच्	याचित	याचितवत्	याचित्वा
शिक्ष	शिक्षित	शिक्षितवत्	शिक्षित्वा
विद् (जानना)	विदित	विदितवत्	विदित्वा
ईक्ष्	ईक्षित	ईक्षितवत्	ईक्षित्वा
मुष्	मुषित	मुषितवत्	मुषित्वा
रुद्	रुदित	रुदितवत्	रुदित्वा
शुच्	शु (शो) चित	शु (शो) चितवत्	शु (शो)चित्वा
मुदित	मु (मो) दित	मु (मो) दितवत्	मु (मो) दित्वा
शुभ्	शु (शो) भित	शु (शो) भितवत्	शु (शो) भित्वा
रुच्	रु (रो) चित	रु (रो) चितवत्	रु (रो) चित्वा
चुर्	चोरित	चोरितवत्	चोरयित्वा
तुल्	तोलित	तोलितवत्	तोलयित्वा
भूष्	भूषित	भूषितवत्	भूषयित्वा
ताड्	ताडित	ताडितवत्	ताडयित्वा
स्पृह्	स्पृहित	स्पृहितवत्	स्पृहयित्वा
ग्रह्	गृहीत	गृहीतवत्	गृहीत्वा
सेव्	सेवित	सेवितवत्	सेवित्वा

शी	शायित	शायितवत्	शायित्वा
जागृ	जागरित	जागरितवत्	जागरित्वा

अभ्यास १७

(क) गतोऽसौ विदेहान् प्रति ।
त्वयाद्यं खादितव्या वा ।
तेन नाविकेन बाहुभ्यामेव गङ्गा तीर्णा ।
महान् कालो यातः,
अधुनापि त्वया स्वप्रतिज्ञा न पूरिता ।
तेन व्याख्यात्रा रामायणस्य सर्वमेव कथाजातं वर्णितम् ।
स चौरः पलायितः ।
पाण्डवानां निवासाय मयेन सभागृहं निर्मितम् ।
यत् भवता आज्ञप्तम् तन्मया अनुष्ठितम् ।
त्वया मदीयस्य पत्रस्य किमुत्तरं दत्तम् ।
अध्यापकेन यथादिष्टं युष्माभिः तथा समाचरितव्यं वा ।
भवतः सन्देशोऽधिगतः ।
सैनिकैः सर्वे जनाः निस्सारिताः ।
त्वयाऽन्यदेव विचारितमन्यदेव जातम् ।
भरतेन रामस्य पादुके सिंहासने स्थापिते ।
भवतो मैत्र्या मया प्रभूतं यशः लब्धम् ।
रामेण रावणस्य शिरः छिन्नम् ।

(ख) मुझ से तुम्हारा क्रोध न सहा गया ।
आपका काम होगया ।
ज्यों ही मैं सोया, पिता से जगाया गया ।
मुझ से आपका नाम भूल गया ।
उस स्त्री से उस लता के

फूल चुने गये ।
पांडवों से कुरुक्षेत्रका युद्ध जीता गया ।
मुझ से यह खाना नहीं खाया गया ।
मुझ से उन पहलवानों का दङ्गल देखा गया ।
वह भारी पत्थर मज़दूरों से उठाया गया ।
मैं उस चांडाल से छुआ गया ।
राम से प्रतिज्ञा की गई ।

अभ्यास १८

(क) असौ बालः गृहात् पतितवान् ।
रामलक्ष्मणौ अयोध्यायाः प्रस्थितवन्तौ ।
गङ्गाधरशास्त्री व्याकरणमध्यापितवान् ।
युवां मे वचनं श्रुतवन्तौ न वा ?
राजपुरुषात् स चौरः पलायितवान् ।
यदेव भवान् आज्ञापितवान् अहमनुष्ठितवान् ।
वृक्षाणां शाखा अधो नतवत्यः ललने कूपात् जलमानीतवत्यौ ।
स यदेव दृष्टवान् वर्णितवान् ।
असौ व्याधः शरस्य प्रहारेण पक्षिणोक्षि विद्धवान् ।
अहमिदं वस्त्रं बहुमूल्येन क्रीतवान् ।
त्वमेव मे पूर्वां दशां ज्ञातवान् ।
वसिष्ठः राममभिषिक्तवान् ।
असौ व्याधः तत्र वने भ्रान्तवान् ।
वसन्तस्यागमने पुष्पाणि

विकसितवन्ति ।
लोहकारोऽसाविमं कटाहं

निर्मितवान् ।

(ख) थोड़े ही समय में वह विद्वान् होगया ।

आज सभा में बहुत लोग बैठे थे ।

उस स्त्री ने मुझे जल पिलाया ।

वह उदर के शूल से मर गया ।

गत वर्ष वह स्त्री भी परीक्षा में बैठी ।

वह अपने गांव से लौट गया ।

राम ने लङ्का में रावण से युद्ध किया ।

शेर के गर्जन से वह डर गया ।

राजा ने चोर को कचहरी में दण्ड दिया ।

बिच्छू ने मेरा पाँव काट दिया ।

पुत्र के वियोग से दशरथ ने प्राण त्याग दिये ।

विवाह के अवसर पर राम ने अपना घर सजाया ।

उस वणियें ने बेचने के लिए चावल तोले ।

राम ने यत्न से पिता की सेवा की ।

भात बनाती हुई उस स्त्री का बच्चा जाग पड़ा ।

आग ने उस शहर को जला दिया ।

—:०:—

अभ्यास १९.

(क) गृहं गत्वा भोजनमद्धि ।
रज्जुमपि सर्पं मत्वा, भीत्वा च बालोऽपतत् ।

धनं प्राप्य को न मोदते ।
आचार्यमुपगम्य छात्रोऽवदत् ।

गुरुं नत्वा पाठमारभस्व।
शत्रून् विजित्यैव सुखमाप्स्यसि।
लगुडेन प्रहृत्य स सर्पमहन्।
शिशुना जागरित्वा रुद्यते।
जलं पीत्वा यात्रां न कुरु।
गृहस्थ भित्तिं भित्त्वा चौरोऽविशत्।
सर्व एव धनमाप्त्वा गर्वं कुर्वन्ति।
स्वामिनमुपसृत्य सेवकोऽनमत्।
पूर्वमपरञ्च समीक्ष्य कार्यं कुरु।

(ख) तालाब में न्हा कर कपड़े पहनो।
कंस ने वसुदेव को बाँध कर जेल में डाल दिया।
यह स्थान छोड़ मैं वहां जाऊँ।
तुम्हें देख कर उसे क्रोध होगा।
उस ने बैल बेच कर घोड़ा खरीदा।
उस मन्दिर को देख कर मैं सुध बुध भूल गया।
दूत को सन्देश दे कर लाहौर भेजा।
बाज़ार से चावल लाकर भात बनाओ।
कुछ पढ़ कर काम करोगे, तो अधिक सुख पाओगे।
आप निर्णय कर अपनी सम्मति दें।
देवदत्त को मिल कर मैं राम के घर जाऊँगा।
अपना धर्म छोड़ जो प्रसन्न होते हैं वे मूढ़ हैं।

य, अनीय, तव्य और तुम्

११२—इन में से पहले तीन प्रत्यय तो कर्मवाच्य भविष्यत् (Potential passive Participle) में आते हैं और तुम् क्रिया के लिए जो क्रिया हो उसका बोधक (Infinitive) है।

पहले तीन नाम बनते हैं, जैसा अव्यय। तव्य और तुम् की प्रयोग सिद्धि एक समान है इस लिए इसे तव्य के साथ रक्खा है।

इन प्रत्ययों के परे होने पर अन्त्य स्वर को गुण होता है। जैसे नी+य=नेय। नी+अनीय=ने अनीय=न् अय अनीय=नयनीय। नी+तव्य=नेतव्य। नी+तुम=नेतुं।

११३—सेट धातुओं से परे तव्य, तुम् से पूर्व इ आजाता है। पठ्+तव्य=पठितव्य। पठ्+तुम=पठितुम्।

धातु	य	अनीय	तव्य	तुम
भिद्	भेद्य	भेदनीय	भेत्तव्य	भेत्तुम्
जि	जेय	जयनीय	जेतव्य	जेतुम्
चर्	चर्य	चरणीय	चरितव्य	चरितुम्

११४—(क)—य परे होने पर धातु के अन्त्य आ को ए हो जाता है। जैसे—दा य=देय।

(ख)—कृ को वृद्धि होती है। कृ+य=कार्य=कार्य।

(ग)—यदि धातु के अन्त में एक ही व्यञ्जन हो और उस से पूर्व अ हो, तो वह दीर्घ हो जाता है। जैसे पठ्+य=पाठ्य। कहीं २ और भी विशेष कार्य्य होते हैं। जैसे शास्+य=शिस् य=शिष्य। भृ+य=भृत्य।

कुछ धातुओं के तुम्-अन्त रूप

धातु	तुम्-अन्त	धातु	तुम्-अन्त
आप्	आप्तुम्	श्रु	श्रोतुम्
दा	दातुम्	स्मृ	स्मर्तुम्
धा	धातुम्	सृ	सर्तुम्
पा	पातुम्	शुष्	शोष्टुम्
स्था	स्थातुम्	तुष्	तोष्टुम्
शक्	शक्तुम्	पुष्	पोष्टुम्
या	यातुम्	सृज्	स्रष्टुम्
स्वप्	स्वप्तुम्	स्पृश्	स्प्रष्टुम्
वस्	वस्तुम्	दृश्	द्रष्टुम्
गम्	गन्तुम्	प्रच्छ्	प्रष्टुम्
नम्	नन्तुम्	रभ्	रब्धुम्
हन्	हन्तुम्	लभ्	लब्धुम्
पच्	पक्तुम्	अद्	अत्तुम्
ब्रू (वच्)	वक्तुम्	बन्ध	बन्द्धुम्
त्यज्	त्यक्तुम्	भिद्	भेत्तुम्
मृ	मर्तुम्	क्षिप्	क्षेप्तुम्
हृ	हर्तुम्	सिच्	सेक्तुम्
कृ	कर्तुम्	युध्	योद्धुम्
हि	हेतुम्	बुध् (दिवा०)	बोद्धुम्
क्षि	क्षेतुम्	क्रुध्	क्रोद्धुम्
जि	जेतुम्	रुध्	रोद्धुम्
इ	एतुम्	युज्	योक्तुम्
नी	नेतुम्	भुज्	भोक्तुम्
भी	भेतुम्		
क्री	क्रेतुम्		

शुच्	शोचितुम	पत्	पतितुम
नश्	नशितुम-नंष्टुम	पठ्	पठितुम
सह्	सहितुम-सोढुम	रक्ष्	रक्षितुम
विद् (जानना)	वेदितुम	वद्	वदितुम
दिव्	देवितुम	यत्	यतितुम
अस्	असितुम	रुद्	रोदितुम
शङ्क्	शङ्कितुम	मुष्	मोषितुम
कम्प्	कम्पितुम	अङ्क्	अङ्कितुम
जन्	जनितुम	वृध्	वर्धितुम
तन्	तनितुम	ग्रह्	ग्रहीतुम
वन्द्	वन्दितुम	शी	शयितुम
श्लाघ्	श्लाघितुम	जागृ	जागरितुम
भाष्	भषितुम	दण्ड्	दण्डयितुम
याच्	याचितुम	भक्ष्	भक्षयितुम
शिक्ष्	शिक्षितुम	ताड्	ताडयितुम
इष्	एषितुम-एष्टुम	चुर्	चोरयितुम
मुद्	मोदितुम	तुल्	तोलयितुम
शुभ्	शोभितुम	भूष्	भूषयितुम
रुच्	रोचितुम	स्पृह्	स्पृहयितुम

अभ्यास २०

(क) किं कर्तुं द्रुतं गम्यते ?
भोजनमत्तुं सत्वरं धावामि।
ललनाः प्रायः स्नातुं नदीं यान्ति।

अस्माकं छात्रावासं द्रष्टुं परीक्षकः समाच्छत्।
छात्रान् अष्टाध्यायीं पाठयितुम् आचार्यःसमाया-

स्यति ।
धनिनो धनं चोरयितुं तस्करः गृहं प्राविशत् ।
पुष्पाण्यानेतुं मोहनः गच्छेत् ।
भो ईश्वर, त्वमेव नः परित्रातुमलम् ।
अद्यारभ्याहं प्रातः उत्थातुं यतिष्ये ।
गदा-युद्धे दुर्योधनं विजेतुं न कोपि समर्थः ।

कः धनमाप्तुं नेहते ।
यो वृक्षमिमं छेत्तुमुत्सहिष्यते स एव दण्डमाप्स्यति ।
अग्निं ज्वालयितुमिन्धनमानय ।
दशरथः राममाह्वातुं सुमन्त्रं प्राहिणोत् ।
त्वां श्लाघितुं मे जिह्वा न क्षमा ।

(ख) बीमार को नहलाने के लिए गरम जल लाओ।
बड़ा बनना सब चाहते हैं, पर काम करना कोई नहीं चाहता ।
रामायण की कथा सुनने को बहुत लोग जमा हुए।
वह लोगों को मना कर धन बटोरना चाहता है।
दुष्ट बुराई करना ही जानते हैं, भलाई करना नहीं ।
बच्चे को बहलाना कोई ही जानता है ।
वृक्ष काटने के लिए कुल्हाड़ी लाओ ।

वह मेला देखने को किस का जी नहीं चाहता ।
घोड़े पर चढ़ने के लिए मेरा दिल तो चाहता है पर हौसला नहीं होता ।
इन बैलों को गाड़ी में जोतने को ले जाओ ।
विश्वामित्र ने कड़ा तप तपने के लिये प्रण किया।
देवघर को पकड़ने के लिए सिपाही आयेंगे ।
पक्षी विना परों के उड़ना नहीं जानता ।

कुछ धातुओं के तव्य और अनीय के रूप ।

धातु	तव्य-अन्त	अनीय-अन्त
आप्	आप्तव्य	आपनीय
दा	दातव्य	दानीय
पा	पातव्य	पानीय
स्था	स्थातव्य	स्थानीय
या	यातव्य	यानीय
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञानीय
गम्	गन्तव्य	गमनीय
हन्	हन्तव्य	हननीय
अद्	अत्तव्य	अदनीय
पच्	पक्तव्य	पचनीय
ब्रू (वच्)	वक्तव्य	वचनीय
त्यज्	त्यक्तव्य	त्यजनीय
सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय
स्पृश्	स्पष्टव्य	स्पर्शनीय
प्रच्छ्	प्रष्टव्य	प्रच्छनीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय
रभ्	रब्धव्य	रम्भणीय
लभ्	लब्धव्य	लम्भनीय
भिद्	भेत्तव्य	भेदनीय
युध्	योद्धव्य	योधनीय
जि	जेतव्य	जयनीय
नी	नेतव्य	नयनीय
भी	भेतव्य	भयनीय

क्री	क्रेतव्य	क्रयणीय
शी	शेतव्य	शयनीय
श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय
स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय
हृ	हर्तव्य	हरणीय
मृ	मर्तव्य	मरणीय
कृ	कर्तव्य	करणीय
सह्	सहितव्य-सोढव्य	सहनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय
रक्ष्	रक्षितव्य	रक्षणीय
स्वप्	स्वप्तव्य	स्वपनीय
विद्	वेदितव्य	वेदनीय
भू	भवितव्य	भवनीय
ग्रह्	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
चुर्	चोरयितव्य	चोरणीय

अभ्यास २१

(क) दिवा न शयितव्यम्।
आतपे न चलितव्यम्।
अपक्वमन्नं न भोक्तव्यम्।
छात्रैः स्वपाठः पठितव्यः।
नरेण तदेवा नुष्ठातव्यम्
यस्मिन् स विश्वसिति।
अस्य वृक्षस्य पुष्पाणि
चेतव्यानि।
अस्य कूपस्य स्वच्छं जलं
पातव्यम्।
शूरेण बलवन्तोऽप्यरयः
जेतव्याः।

सर्वैः वृद्धानामाज्ञा मानयितव्या।
त्वयाद्य रम्यं गीतं गानीयम्।
प्रातः उत्थाय स्नानीयम्।
त्वया मद्वचनात् पिता कथनीयः।
राज्ञा प्रजा रक्षणीयाः,
प्रजाभिश्च राज्ञः शासने वर्तितव्यम्।
चेयानीमानि कुसुमानि।
कार्यमिदं कर्म।
भगवन्, अद्य रामायणस्य कथा श्रावयितव्या।
धीरेण नरेण कष्टानि सोढव्यानि।
दानं दीनेभ्य एव दातव्यम्
दरिद्रेभ्य एवान्नं देयम्।
हेयो दुश्चरितानां सङ्गः।

(ख)अतिसञ्चय न करना चाहिए।
यह दुष्ट अवश्य मारे जाने चाहियें।
यह वृक्ष काटा जाना चाहिये।
छोटी २ बातों पर क्रोध न करना चाहिये।
अपने से किये अपराध पर न रोना चाहिए।
कभी भी किसी से न डरना चाहिए।
यह चोर दण्ड दिया जाना चाहिए।
गुज़री बात का शोक न करना चाहिए।
लाहौर को दूत भेजा जाना चाहिए।
आप से यह मेला अवश्य देखा जाना चाहिए।
अब तो बच्चा जगाया जाना चाहिए।
ये फटे वस्त्र गरीबों को दिये जाने चाहियें।

शब्दकोष

(क) अन्यदा (अ०) दूसरे समय में
सार्धम् (अ०) साथ
कलह — झगड़ा
विधाय — वि+धा+त्वा (य) करके
सपुत्रा (वि०) पुत्रों के साथ
आहत्य — आ+हन्+त्वा (ल्य) प्रहार कर
श्रेष्ठिन् — सेठ
गुहा — गुफा
आच्छाद्य — आ+छद् (प्रेरणा)+त्वा (य) छिपाकर
निर्द्रव्या — धन-हीन
मेदिनी — पृथ्वी
विदधान — वि+धा+आन करता हुआ
निषिद्ध — (नि+सिध्+त) रोका हुआ
परावृत्य — परा+वृ+त्वा (त्य) लौट कर
तूष्णीम् (अ०) चुप
स्थानान्तर — दूसरा स्थान
तण्डुलकण — चावलोंका दाना

विकीर्य — वि+कॄ+त्वा (य) बिखेर कर
विस्तीर्ण — (वि+स्तॄ+त) बिछाया
कौतुक — अचम्भा
त्वदीय (वि०) तुम्हारा
वेला — समय
मृगधूर्त — गीदड़
अस्मदीय (वि०) हमारा
गृहोपचार — आतिथ्य
विश्वास्य — वि+श्वस् (प्रेरणा)+त्वा (य) विश्वास कराकर
आरोप्य — आ+रुह् (प्रेरणा)+त्वा (य) चढ़ाकर
खलु (अ०) निश्चय से
अपहृत — (अप+हृ+त) चुराया हुआ
अभिहित — (अभि+धा+त) कहा हुआ
सम्मत — (सम्+मन्+त) इष्ट

अवधीरित (अव+धीर्+त) तिरस्कार किया हुआ
रहस् एकान्त
दारुण (वि०) कठोर
अनुष्ठातव्य (अनु+स्था+ तव्य) किया जाना चाहिए
समादिष्ट (सम्+आ+ दिश्+त) आज्ञा किया गया
अन्वेष्टुम (अनु+इष्+ तुम्) ढूंढने के लिये
बाष्प आंसू
उत्सृष्टवत् (उद्+सृज्+ तवत्) त्याग दिया
पर (वि०) बहुत
आविष्ट (आ+विश्+ त) युक्त
विषीदत् (वि+सीद्+ अत्) दुःखित होता हुआ
दयित (वि०) प्रिय
मनोजव मन की तरह शीघ्र गति वाला
मिथुन जोड़ा (नलका लड़का और लड़की)
कृच्छ्र कष्ट
बहुशः (अ०) बहुत बार

(ख) पीया जाना चाहिए पा (तव्य, अनीय)
खुद स्वयम् (अ०)
लाया गया आ+नी (त)
खाने के लिये अद् (तुम्)
चावल तण्डुल
लाये जाने चाहिए आ+नी (तव्य, अनीय)
पूछा पृच्छ् (तवत्)
देखा जाना चाहिए दृश् (तव्य अनीय)
तरह तरह के विविध (वि०)
जाकर गम् (त्वा)
दिया गया दा (त)
तैय्यार कियागया प्र+स्तु(त)

दौड़ते धाव् (अत्)
उठाने के लिये उद्+स्था (प्रेरणा+तुम्)
लौटा प्रति+नि+वृत् (त)
उन्नति करता हुआ उद्+स्था (आत्मने० मान)
उपेक्षा किया जाना चाहिए उप+ईक्ष् (तव्य, अनीय)
नहीं तो अन्यथा (अ०)
चलता हुआ चल् (अत्)
भाई को भ्रातृ (तृती०)
लड़ना चाहिये युध् (तव्य, अनीय)
देखते दृश् (अत्)
थक गई श्रम (त)
जा गम् (त्वा)
दे दा (त्वा)
पूरा कर देना चाहिये सम+आप् (तव्य)
सुनाता हुआ श्रु (प्रेरणा-अत्)
हौसला देना हुआ सम्+आ+श्वस् (प्रेरणा-अत्)
बोलने को (भाष्—तुम्)
बोले जाने चाहिएँ ब्रू (वच्)(तव्य, अनीय)
करनी चाहिये (सन्ध्या) उप+आस् (तव्य, अनीय)
दिया गया है दा (त)

(मिश्रित) अभ्यास २२

(क) अन्यदा सा भर्त्रा सार्धं कलहं विधाय पितृगृहं प्रति चलिता।
व्याघ्रस्तां सपुत्रां दृष्ट्वा पुच्छेन भूमिमाहत्य धावितः।
स देशान्तरं भ्रान्त्वा पुनस्तदेव स्वपुरमागत्य श्रेष्ठिनमुक्तवान्।
स वणिक् स्नात्वा, तं शिशुं गुहायां प्रक्षिप्य, तद्द्वारं च

शिलयाच्छाद्य गृहमागतः ।
स च राजा धर्मनाशं कुर्वन् निर्द्रव्यां च मेदिनीं विदधानो निषिद्धो मन्त्रिणा ।
तच्छ्रुत्वाऽसौ पानीयमपीत्वा, परावृत्य किमिदमित्यालोच्य, तूष्णीं स्थितः ।
राज्यसुखं परित्यज्य, स्थानान्तरं गन्तुं मां सम्भाषते ।
तेन व्याधेन तण्डुलकणान् विकीर्य जालं विस्तीर्णम् ।
त्वया महत्कौतुकमावेदितम् ।
तदा मम त्वदीया वेला स्मरणीया ।
तया चिन्तितं—यदयं मृगधूर्तोऽतीतः ।
अस्मदीयो गृहोपचारो विलोकनीयः ।
इत्युक्त्वा विश्वास्य पृष्ठे चारोप्य चलितः ।
वानरस्तं गच्छन्तं शङ्कितः प्राह ।
इत्याकर्ण्य मकरेण चिन्तितम् ।
मित्र ! किं न श्रुतं त्वया ?
सा खलु मूषिकैर्भक्षिता ।
मम शिशुरनेन चौरेणापहृतः ।
न सत्यमभिहितं भवता ।
एतत् ज्ञात्वा समागन्तव्यम् ।
मम सम्मतेनास्य सेवैव न कर्तव्या ।
तस्य प्राणिनो बलेनापि सुमहता भवितव्यम् ।
यावदहं जीवामि तावद्भय न कर्तव्यम्
महाबलोऽसौ देवं द्रष्टुमिच्छति ।
न भेतव्यम् ।
कथमेतावन्मांसं ताभ्यां खादितम् ?
खादितं व्यथितमवधारितञ्च ।
अथ भवान् किं वक्तुमिच्छति ?
राजाविश्वासोऽन्यस्मै न कथनीयः ।
पिङ्गलको रहस्येवमुक्तवान् ।

तत्संग्रामे मृत्युरेवाश्रयणीयः।
किं मया दारुणं कर्म कृतम्।
सर्वमेतद् गुप्तमनुष्ठातव्यम्।
अविचारितं कर्म न कर्तव्यम्।
तद् यथा भवितव्यं तद् भवतु।
समादिष्टोऽहमार्येण।
किमपि किं न सन्दिष्टम्।

गच्छ,न युक्तं परिलम्बितुम्।
त्वामेवान्वेष्टुमुपागतः।
किं समर्था पथि परिभ्रमितुम् ?
भवद्भ्यां सत्कर्तव्यो महाराजः, कुशलं च परिप्रष्टव्यम्।
कथमहं श्रोतुमिच्छामि।

राजत्वा तु पुष्करं राजा प्रहर्षादिदमब्रवीत्।
अतो दृष्ट्वा नलस्य बाष्पमुत्सृष्टवानहम्।
कृतया परस्याविष्टो विरोदन्निदमब्रवीत्,
यद्राज्य-सुख-लोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यतः॥
अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
नलस्य दान्तिनामश्वान् योजयित्वा मनोजवान्,
इदमारोप्य मिथुनं कुण्डिनं गन्तुमर्हसि।
कथं चेदं महत् कृच्छ्रं प्राप्तवत्यसि भामिनि।
स शिशिरश्वसन् बहुशो रुदित्वा च पुनः पुनः,
कुशलं चैव मां पृष्ट्वा पश्चादिदमभाषत॥

(ख) राम से रावण मारा गया और कृष्ण से कंस।
यह जल तुझ से पीया जाना चाहिये क्योंकि
यह मुझ से खुद कुए पर जाकर लाया गया है।
खाने के लिए चावल और पीने के लिए दूध

बाज़ार से लाये जाने चाहिएँ।

मैंने मोहन से पूछा यह पत्र किससे लिखा गया।

वह मेला हम सब से अवश्य देखा जाना चाहिए, क्योंकि उसे देखने को तरह तरह के लोग जमा होंगे।

घर में जाकर उसने पूछा तो स्त्री से उत्तर दिया गया कि खाने के लिए भोजन अभी तैयार नहीं किया गया।

दौड़ते दौड़ते गोपाल की किताबें गिर गईं और उन्हें उठाने को वह फिर लौटा।

उन्नति करते हुए शत्रु की उपेक्षा न करनी चाहिए।

वह धूर्त पकड़ा जाना चाहिये नहीं तो अनर्थ कर डालेगा।

पूछा जाना चाहिए कि कल व्याख्यान किन २ से दिये गये।

चलते हुए आदमी से कुछ भी न खाया जाना चाहिये।

भाई को भाई से न लड़ना चाहिये।

देखते २ मेरी आंखें भी थक गईं पर आप लौट कर न आये।

वहां जा, मोहन को सन्देश दे और घर आकर अपना काम पूरा कर देना चाहिए।

देवधर उन लड़कों को तरह २ की बातें सुनाता हुआ और हौसला देता हुआ वहां पहुंचाआया।

जिह्वा तो बोलने को है, पर इससे मीठे वचन बोले जाने चाहिएं।

घर के छोटे भी काम करने में लज्जा न करनी चाहिये।

संध्या के समय एक जगह बैठ कर संध्या करनी

चाहिये।

ईश्वर से ही यह बालक दिया गया है, उसी से इस की रक्षा की जानी चाहिये।

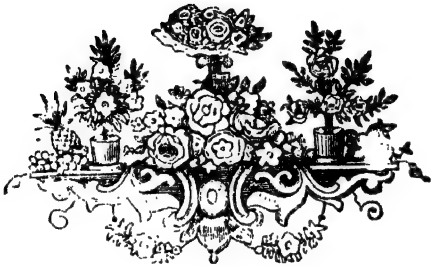

समास (Compounds)

११५—परस्पर सम्बद्ध अर्थ वाले दो वा अधिक शब्द मिल कर जब एक सम्बद्ध अर्थ प्रकट करते हैं, तो उन मिले शब्दों को समास कहते हैं। भाषा में जैसे-घुड़सवार, दोरंगा-इन में दो दो पद मिलकर एक २ पद बने हैं और यह परस्पर सम्बद्ध अर्थको प्रकट करते हैं। इन दो २ पदोंका समास है। इसी प्रकार संस्कृत में रामदास, पीताम्बर-में दो २ पद मिलकर एक पद हैं और परस्पर सम्बद्ध अर्थ को प्रकट करते हैं। इनका अर्थ है रामदास–राम का दास, पीताम्बर–पीलेवस्त्रों वाला (पुरुष)।

११६—समास में सारे पद मिलकर एक पद बन जाते हैं, इसलिये विभक्ति केवल एक अन्त्य पद के साथ ही लगती है पूर्व पदों के साथ नहीं।

भाषा में जैसे घुड़सवार के अर्थ-प्रकार (घोड़े का सवार) से दोरंगा का अर्थ-प्रकार (दो रंगों वाला) निराला है। इसी प्रकार संस्कृत में रामदास के अर्थ-प्रकार (राम का दास) से पीताम्बर का अर्थ-प्रकार (पीले वस्त्रों वाला) विलक्षण है। इस अर्थ-भेद को दिखलाने के लिए घुड़सवार वा रामदास के प्रकार के समासों का नाम दोरंगा वा पीताम्बर के ढंग के समासों से अलग रखना होगा। अत एव पहले प्रकार को तत्पुरुष और दूसरे प्रकार के समासों को बहुव्रीहि कहते हैं। सब मिला कर समास छह प्रकार के हैं–द्वन्द्व, तत्पुरुष कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि और अव्ययीभाव।

द्वन्द्व (Co-ordinative compund)

११७–समास अनेक पदों का मेल है। उस मेल में जब सारे पदों का अर्थ प्रधान बना रहे, तो उसे द्वन्द्व कहते हैं। भाषा में जैसे 'मुंह-हाथ धो' वाक्य में मुंह-हाथ समास है। इस में मुंह और हाथ दोनों प्रधान हैं। धो क्रिया के साथ दोनों का प्रधान सम्बन्ध है, मुंह धो, हाथ धो। इसी प्रकार 'बहु-बेटियां रथ में बैठ कर जाएं' में बहु-बेटियां दो पदों का समास है। 'रथ में बैठकर जाएं' के साथ दोनों का एक जैसा सम्बन्ध है, बहुएं रथ में बैठकर जाएं। बेटियां रथ में बैठकर जाएं। इसी प्रकार संस्कृत में जहां सारे पदों का एक क्रिया आदि के साथ एक जैसा सम्बन्ध हो, वहां द्वन्द्व होगा। जैसे–गजाश्वौ चरतः (हाथी और घोड़ा चर रहे हैं)। दमनक-करटकौ मन्त्रयतः (दमनक और करटक विचारते हैं)। प्रथम वाक्य में गज और अश्व का चरण क्रिया के साथ, द्वितीय वाक्य में 'दमनक' और 'करटक' का मन्त्रण के साथ एक जैसा सम्बन्ध है, इस लिये गजाश्वौ दमनककरटकौ दोनों द्वन्द्व समास हैं।

११८–इस बराबरी को प्रकट करने के लिये द्वन्द्व समासका विग्रह करने में भाषा में और लगाया जाता है। जैसे–बहु बेटियां=बहु और बेटियां। और की जगह संस्कृत में च लगाया जाता है। गजश्च अश्वश्च=गजाश्वौ, दमनकश्च करटकश्च=दमनककरटकौ।

११९–द्वन्द्व में लिङ्ग अन्त्य शब्द के अनुसार और वचन सब की संख्या के अनुसार होता है। मयूरीकुक्कुटौ (पुं० द्वि०), कुक्कुट-मयूर्यौ (स्त्री० द्वि०)।

गजाश्वौ (पुं० द्वि०), गजाश्वाः (पुं० बहु०)। 'गजाश्वौ' का अर्थ

होगा एक हाथी और एक घोड़ा और विग्रह होगा गजश्च अश्वश्च= गजाश्वौ। और 'गजाश्वाः' का अर्थ होगा बहुत से हाथी और बहुत से घोड़े और विग्रह होगा—गजाश्च अश्वाश्च=गजाश्वाः।

दो से अधिक पदों का द्वन्द्व, जैसे-देव-गन्धर्व-राक्षसाः, देव-गन्धर्व-मानुषोरग-राक्षसाः=देव, गन्धर्व, मनुष्य, नाग और राक्षस।

१२०—समाहार—द्वन्द्व के अवयव मिलकर जब एक समुदाय को बतलायें, न कि अलग अलग व्यक्तियों को, तब उसका प्रयोग नपुंसक एकवचन में होता है, अर्थात् वह गणनाम (Collective name) हो जाता है। जैसे पाणिपादम्=हाथ पाँव, काकोलूकम्=कौए और उल्लू, गवाश्वम्=गौएं और घोड़े। ऐसे समास को समाहारद्वन्द्व कहते हैं।

१२१ एकशेष—कुछ थोड़े से द्वन्द्व ऐसे भी हैं जिन में दो पदों में से एक शेष रहता है और वही दोनों का अर्थ देता है। जैसे—हंसी च हंसश्च=हंसौ (हंसी और हंस), भ्राता च स्वसा च=भ्रातरौ (बहिन भाई), पुत्रश्च दुहिता च=पुत्रौ (पुत्र कन्या), श्वश्रूश्च श्वशुरश्च=श्वशुरौ (सास ससुर), श्वश्रू-श्वशुरौ भी होता है। माता च पिता च=पितरौ (माता पिता), मातापितरौ और मातरपितरौ भी होता है।

तत्पुरुष

१२२—जब पूर्व पद में प्रथमा से भिन्न किसी विभक्ति का अर्थ पाया जाय और उत्तर पद प्रधान हो, तब तत्पुरुष होता है। भाषा में जैसे 'घुड़-सवार' का अर्थ है 'घोड़े का सवार', यहां

पूर्व पद घुड़ में तो षष्ठी विभक्ति का अर्थ है–'का' (घोड़े का)और उत्तर पद प्रधान है, क्योंकि नाम 'सवार' का है । इसी प्रकार 'आपबीती' आप पर बीती, यहां पूर्व पद में सप्तमी का अर्थ है—'पर' और उत्तर पद प्रधान है, नाम 'बीती' का है । इसी प्रकार संस्कृत में 'जलमार्ग' का अर्थ है-जल का मार्ग । यहां पूर्व पद में षष्ठी का अर्थ है और उत्तर पद प्रधान है, नाम मार्ग का है । इस में पूर्व पद में षष्ठी का अर्थ है, इस लिए इसे षष्ठीतत्पुरुष कहते हैं । जलस्य मार्गः=जलमार्गः । षष्ठी की नाईं प्रथमा को छोड़ दूसरी सारी विभक्तियों के तत्पुरुष होते हैं । जैसे—

१–द्वितीयातत्पुरुष—गृहं गतः=गृहगतः (घर पहुंचा हुआ), जयं प्रेप्सुः=जयप्रेप्सुः (जय पाने की इच्छा वाला), कृष्णं श्रितः =कृष्णश्रितः (कृष्ण के आश्रित हुआ), शरणमागतः=शरणागतः ।

२—तृतीयातत्पुरुष—पित्रा सदृशः=पितृसदृशः (पिता जैसा), पिपासयाआकुलितः=पिपासाकुलितः (प्यास से व्याकुल हुआ), बुद्धया हीनः=बुद्धिहीनः ।

३—चतुर्थीतत्पुरुष—यूपाय दारु=यूपदारु (यज्ञ के खम्भे के लिये लकड़ी), विष्णवे बलिः=विष्णुबलिः (विष्णु के लिए बलि), गोभ्यो हितम्=गोहितम् (गौ के लिये भला) ।

४—पंचमीतत्पुरुष—स्वर्गात् पतितः=स्वर्गपतितः (स्वर्ग से गिरा हुआ), धर्माद् भ्रष्टः=धर्मभ्रष्टः (धर्म से फिसला हुआ), चौरेभ्यो भयम्=चौरभयम् (चोरों से भय) ।

५—षष्ठीतत्पुरुष—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः (राजा का पुरुष), हिमस्यालयः=हिमालयः (हिम का घर), कुरोः क्षेत्रम्= कुरुक्षेत्रम् (राजा कुरु का क्षेत्र),देशस्याभिमानः=देशाभिमानः, (देश का अभिमान ।

६—सप्तमीतत्पुरुष—गृहे जातः=गृहजातः (घर में जन्मा), वाचि पटुः=वाक्पटुः (बोलने में निपुण), आतपे शुष्कः=आतपशुष्कः (धूप में सूखा हुआ), पूर्वाह्णे कृतम्=पूर्वाह्णकृतम् (दिन के पूर्व भाग में किया)।

इन सब में षष्ठीतत्पुरुष ही प्रधान है। उसका प्रयोग-विषय बहुत बड़ा है, अतएव तस्य पुरुषः=तत्पुरुषः, यह नाम भी षष्ठी समास से लिया गया है। षष्ठी से उतर कर तृतीया तत्पुरुष है, अन्य सब के गिनती के प्रयोग हैं।

१२३—नञ्तत्पुरुष—न के साथ समास नञ्तत्पुरुष कहलाता है। न को समास में व्यञ्जन से पूर्व अ और स्वर से पूर्व अन् होजाता है। न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः। न अश्वः=अनश्वः।

कुछ तत्पुरुष ऐसे भी हैं, जिन में पूर्वपद की विभक्ति लुप्त नहीं होती। जैसे धनञ्जयः, जन्मान्धः (जन्म से अन्धा), परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्, दूरादागतः, वाचस्पतिः, युधिष्ठिरः। ऐसे समासों को अलुक् तत्पुरुष कहते हैं।

कर्मधारय (Appositional Compound)

१२४—जब पहला पद दूसरे का वर्णनमात्र हो, अर्थात् दूसरे पद का विशेषण हो, वा पदवी वाचक हो, अथवा उपमान हो, तब कर्मधारय होता है। कर्मधारय के विग्रह में दोनों पद प्रथमान्त होते हैं।

(१) विशेषण का—नीलम् उत्पलम्=नीलोत्पलम् (नीला कमल), महान् देवः=महादेवः। सन् वैद्यः=सद्वैद्यः (अच्छा वैद्य)।

(२) पदवीवाचक का—अमात्यो राक्षसः=अमात्यराक्षसः (मन्त्री राक्षस), प्रधानो मन्त्री=प्रधानमन्त्री;

(३) उपमान का—घन इव श्यामः=घनश्यामः (मेघ की नाईं श्याम)।

१२५—कर्मधारय में पूर्वपद स्त्रीशब्द पुँवत् हो जाता है। जैसे—कृष्णा चतुर्दशी=कृष्णचतुर्दशी । पाचिका स्त्री= पाचकस्त्री।

विशेष—अन्य के अर्थ में अन्तर शब्द नपुंसक होकर समास के अन्त में आता है। अन्यो राजा=राजान्तरम्।

द्विगु समास (Numeral compound).

१२६—संख्यावाचक विशेषण के साथ नाम का समास द्विगु कहलाता है। भाषा में जैसे, दुअन्नी, अठन्नी, शब्द हैं, संस्कृत में इसी प्रकार त्रिभुवनम् (तीनों भुवन), चतुर्युगम्, इत्यादि हैं, ये द्विगु समास हैं। द्विगु में अर्थ समाहार, (Collectively) पाया जाता है, इसलिए नपुंसक हो जाता है और विग्रह इस प्रकार होता है। त्रयाणां भुवनानाम् समाहारः=त्रिभुवनम् (three worlds collectively) चतुर्णां युगानां समाहारः= चतुर्युगम्। चतुर्णां वर्णानां समाहारः=चतुर्वर्णम्।

१२७—अकारान्त द्विगु कभी २ स्त्रीलिङ्गी होता है। त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी। शतस्याब्दानां समाहारः शताब्दी। सप्तानां पदानां समाहारः=सप्तपदी।

बहुव्रीहि (Possessive compound)

१२८—बहु का अर्थ है बहुत, व्रीहि का धान (rice), पर बहुव्रीहि का अर्थ बहुत धान नहीं, किन्तु बहुत धान वाला (Possessing much rice) (कोई) है। इस प्रकार यह शब्द 'बहु' वा

'व्रीहि' इन दोनों में किसी का काचक नहीं रहा, किन्तु यह अब उसका विशेषण (Adjective) हो गया है, जिस के पास बहुत धान है। विग्रह में इस अर्थ को स्पष्ट करने के लिये 'यत्'शब्द का प्रयोग साथ देना पड़ता है। बहवः व्रीहयःयस्य सः बहुव्रीहिः। इसी प्रकार शोभनं शीलं यस्य सः सुशीलः,पीतानि अम्बराणि यस्य सः पीताम्बरः, क्षुद्रं हृदयं यस्य सः क्षुद्र-हृदयः। शोभना मतिर्यस्य स सुमतिः। सप्त पुत्रा यस्य सः सप्तपुत्रः । बहुव्रीहि अधिकतर 'यस्य' इस प्रकार षष्ठी वाले ही हैं, पर कहीं और विभक्तियां भी होती हैं, यथा (द्वितीया) प्राप्तम् दकं यं सः प्राप्तोदकः (ग्रामः), (तृतीया) कृतं कृत्यं येन स कृतकृत्यः। लब्धं धनं येन सः लब्धधनः। (तृतीया विभक्ति के प्रयोग भी बहुत हैं), (चतुर्थी) उपहृताः पशवो यस्मै सः उपहृतपशुः, (पञ्चमी) उद्धृतं जलं यस्मात् तत् उद्धृतजलं (पात्रम्),वीराः पुरुषा यस्मिन् सः वीरपुरुषो(ग्रामः)।

१२६–इव के प्रयोग के बिना इव का अर्थ देने वाला बहुव्रीहि इवार्थबहुव्रीहि कहा जाता है। जैसे–चन्द्रस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्य स चन्द्रकान्तिः । (चन्द्र की सी कान्ति वाला)।

हाथ के अर्थ वाले शब्द बहुव्रीहि के अन्त में लगते हैं और विग्रह में हाथ-वाचक शब्दों में सप्तमी विभक्ति लगाई जाती है। दण्डः हस्ते यस्य सः दण्डहस्तः। चक्रं पाणौ यस्य स चक्रपाणिः।

कई शब्दों का अर्थ केवल "यस्य" इत्यादि लगा देने से स्पष्ट नहीं होता, उनका अर्थ स्पष्ट रखने के लिए विग्रह में और पद भी लगाये जाते हैं। जैसे—"अपुत्रः" का विग्रह "न पुत्रो यस्य" न होकर "अविद्यमानः पुत्रो यस्य सः" अपुत्रः-होगा। इसी प्रकार "भार्यया सह वर्तते" सभार्यः इत्यादि।

१३०–जिनके अन्त में ऋ हो वा ई स्त्री प्रत्यय हो, बहुव्रीहि में उन से परे क लग जाता है। जैसे—मृतः भर्ता यस्याः स मृत-भर्तृका। पत्न्या सह वर्तते सः सपत्नीकः।

विशेषण होने के कारण बहुव्रीहि पदों के लिङ्ग और वचन विशेष्य के अधीन होते हैं। सुशीलः पुरुषः। सुशीला स्त्री। सुशीलं कुलम्। सुशीलानि कुलानि।

अव्ययीभाव (Adverbial compounds)

१३१—यह समास अव्ययों के साथ होता है। अव्यय पूर्व प्रयुक्त होता है। समस्तपद क्रिया-विशेषण होने से नपुंसक में एक वचन होता है। जैसे—यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), सविनयम् (विनय सहित), प्रतिदिनम् (हर एक दिन)।

इन का विग्रह इस प्रकार होगा—शक्तिमनतिक्रम्य= यथाशक्ति, (शक्ति को न उलांघ कर-अर्थात् शक्ति के अनुसार)। मयापि वेदाध्ययने यथाशक्ति क्रियत एव यत्नः। रथस्य पश्चात्= अनुरथम्। अनुरथं पादातम्।

समस्त पदों का फिर भी समास होजाता है। जैसे—तुलाशिशुप्रदानम्. इसमें तुला शिशु का पहले द्वन्द्व होगा–तुला च शिशुश्च=तुलाशिशू, फिर समस्त का प्रदान के साथ षष्ठी-तत्पुरुष होगा। तुलाशिशवोः प्रदानम्=तुलाशिशुप्रदानम्।

अवधीरित-सुहृद्वाक्यः। सुहृदो वाक्यं सुहृद्वाक्यम्, (षष्ठी-तत्पुरुष)। अवधीरितं सुहृद्वाक्यं येन सः=अवधीरितसुहृद्वाक्यः, (बहुव्रीहि)।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः। कार्पण्यस्य दोषः=कार्पण्यदोषः, (षष्ठीतत्पुरुष)। कार्पण्यदोषेण उपहतः (तृतीया तत्पुरुष) स्वभावो यस्य सः (बहुव्रीहि)=कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः।

अभ्यास २३

(क) रामलक्ष्मणौ वनं गतौ ।
कृष्णार्जुनयोः साहाय्येन पाण्डव-विजयोऽभवत् ।
जगतः पितरौ पार्वती-परमेश्वरौ वन्दे ।
तौ-स्त्रीपुरुषौ सदा परस्परं कलहं कुरुतः ।
रामलक्ष्मणाभ्यां सुग्रीवहनुमतोः मैत्र्या रावणकुम्भकर्णौ जितौ ।
रथिकाश्वारोहं युद्धाङ्गम् ।
एतद्राज्ये चौरभयं नास्ति ।
इमं सारमेयं लगुडप्रहारः व्यापादयत ।
शरणागतानां रक्षणं महात्मनां कर्म ।
परपरिभयात् नराणां बुद्धिः नश्यति ।
पङ्क्तिलिप्तमिदमुत्तरीयमतो न धारयितव्यम् ।
अद्विजानां न वेदपठनाधिकारः इति केचित् ।
आतपशुष्काणि वस्त्राणि परिधेहि ।
मह्यं श्वेतवस्त्राणि रोचन्ते, न कृष्णवस्त्राणि ।
शिशोः मुखकमलमवलोक्य विपद्ग्रस्ता अपि नराः प्रसीदन्ति ।
व्याघ्रशूरस्य अर्जुनस्य पुरतः न कौरवशृगालाः स्थातुं समर्थाः ।
भोः, मदीय वस्त्राणि क्षालयित्वा कर्पूरगौराणि कुरु ।
वैशाखस्य प्रथमदिने जनाः नवान्नं स्वदन्ते ।
बहुकासारः काश्मीरदेशः निर्जलश्च मरुप्रदेशः ।
विशालभवनां कलिकाता नगरीं दृष्ट्वा जना विस्मयन्ते ।
जितारयः पाण्डवा राज्यं प्राप्यामोदन्त ।
प्रस्फुटित-कलिकेषु वृक्षेषु पिका रुवन्ति ।
नास्तिका इदं जगत् ईश्वर-कर्तृकं न मन्यन्ते

अपठितपुस्तकाः छात्राः परीक्षां सुखेन न लङ्घन्ते ।
अपुत्रस्यामित्रस्य च गृहं शून्यं विद्यते ।
त्रिभुवनस्येश्वरं नमामि ।
सत्यं, द्वापरस्त्रेता कलियुगं चेति चतुर्युगम् ।
मथुरायां महर्षेर्दयानन्दस्य शताब्दीमहोत्सवः महासमारोहेणाजायत ।
त्रिलोक्यां तत्समः नकोऽपि ।
यथाशक्त्यत्र यत्नः क्रियते ।
आकुमारं पाणिनेः यशः ख्यातम् ।
उपशूरं न ते वृत्तम् ।
स धार्मिक आमरणं धर्ममसेवत ।

(ख) भरत और शत्रुघ्न **राम के पीछे बन गये ।**
भाई और बहन में **बहुत प्यार होता है ।**
गोविन्द, देवदत्त और कृष्णदत्त **कभी नहीं पढ़ते ।**
सांपों के हाथ पांव **नहीं होते ।**
इस स्कूल में लड़के लड़कियां **एक जगह पढ़ती हैं ।**
प्रयाग में गंगा और यमुना का **संगम है ।**
तीर से बींधा हुआ **यह मृग मर गया ।**
महल की चोटी से गिरे हुए **बालक को हस्पताल ले जाओ**
ईश्वर की भक्ति से **मनुष्य को मोक्ष मिलता है ।**
ब्रह्मचारियो, यज्ञ की सामग्री **लाओ ।**
विवाह के अवसर पर **मोहन ने गरीबों को भोजन बांटा ।**
रामायण के पाठ से **मन को शान्ति मिलती है ।**
आप के दर्शन से मेरा चित्त **प्रसन्न हो गया ।**
खेल के समय **खेलो और** पढ़ने के समय **पढ़ो ।**
ब्रह्मचारी पीले वस्त्र **पहनते हैं ।**
ज्योंही आपके कमल समा-

न चरणों का प्रवेश हुआ यहां आनन्द हो गया।
राम का भाई सब में श्रेष्ठ है।
बुरे लोग अच्छे पुरुषों को भी बुरे मार्ग पर लेजाते हैं।
जयद्रथ टूटी हुई तलवार को लेकर युद्ध करता रहा।
काले कपड़ों वाला यह सिपाही राम को पकड़ ले गया।
चमकते हुए चांद वाली रात में मैं बाहर सोऊंगा।
जिसके हाथ में तलवार हो उससे सभी डरते हैं।
रोग से सूखे कंठ वाला यह दूध भी नहीं पी सकता।

कटे हुऐ नाक वाली शूर्पणखा रावण के पास गई।
राम जिसने प्रतिज्ञा पूरी करली है अयोध्या को आ रहा है।
तीनों लोकों में उसी का नाम है।
इस चौराहे में मत खड़े हो।
कई शताब्दियां पहले मुसलमान भारत में आये।
नदी के तट के पास कपड़े उतारो।
मैंने पूरी ताकत लगा कर काम पूरा किया।
वितस्ता के साथ २ जेलहम का शहर है।

अभ्यास समास (२) २४

तस्य भार्या कलहप्रियेति विश्रुता।
सा पुत्रद्वयेन सहिता पितृगृहं प्रति चलिता।
सा कोपवशात् गता मलयपार्श्वस्थं महाकाननम्।
व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।
गृहीतकरजीवितः तदग्रतो नष्टः।
जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् सा कथं मुच्यताम्?

तं व्याघ्रं बहूनपि कानन-
विषमदेशपर्वतान् सत्व-
रमुल्लङ्घयन्तं दृष्ट्वा हसितः
किं जीवितनिर्विण्णस्त्वं
यदद्य भूतले समागतः ।
स तस्मै अमृतसदृशानि
पक्वफलानि यच्छति ।
तस्य गृहे लोहभारघटिता
पूर्वपुरुषोपार्जिता तुला-
सीत् ।
मया सह शिशुमेनं स्नानो-
पकरणहस्तं प्रेषय ।
तस्मिन्वने पिङ्गलकनामा
सिंहः स्वभुजोपार्जित-
राज्यसुखमनुभवन्नास्ते ।
स्वामिचेष्टानिरूपणं सेवकैः
कर्तव्यम् ।
आपत्प्रतीकाराय दुर्लभः
पुरुषसमवायः ।
किं शक्यप्रतीकारोऽयं
भयहेतुरशक्यप्रतीकारो
वा ?
दमनककरटकौ सञ्जीवक-
समीप गतौ ।
सन्धिविग्रहकार्याधिका-
रिणाविमावर्थाधिकारे
न नियोक्तव्यौ ।
असौ स्तब्धकर्णः समुद्धत-
लाङ्गूलः उन्नतचरणो
विवृतास्यस्त्वां पश्यति।
तेन क्षेत्रपतिना हर्षोत्फुल्ल-
लोचनेन तथाविधो मृग
आलोकितः ।
पुण्यकर्मणां धुरीणः, दया-
दाक्षिण्याकरो हिरण्य-
कनामायं भूपिकराजः ।
नानादेशाश्रमवासिनो-
वसिष्ठात्रेयप्रभृतयो-
महामुनयः समागताः ।
एष आर्यःकश्यपः प्रस्थान-
घोषणानन्तरं गृहीत-
यज्ञोपकरणोऽग्रतः प्रस्थितः।
एष भगवान् राघवकुल-
पितामहः सहस्ररश्मिः।

परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ।
कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति ॥
वाष्पपर्याकुलमुखीमनाथां शोकविक्लवाम् ।
उद्वहन्तीं च गर्भेण पुण्यां राघवसन्ततिम् ॥
शोकारातिभयत्राणं प्रीतिविश्रम्भभाजनम् ।
केन रत्नमिदं सृष्टं मित्रमित्यक्षरद्वयम् ॥
नारिकेलसमाकारा दृश्यन्ते हि सुहृज्जनाः ।
रोगशोकपरीतापबन्धनव्यसनानि च ॥
आत्मापराधवृक्षाणां फलान्येतानि देहिनाम् ।
बन्धुस्त्रीभृत्यवर्गस्य बुद्धेः सत्त्वस्य चात्मनः ॥
आपत्सिकषपाषाणे नरो जानाति सारताम् ।
अबन्ध्यं दिवसं कुर्याद्दानाध्ययनकर्मसु ॥
प्रज्ञागुप्तशरीरस्य किं करिष्यन्ति संहताः ।
हस्तोपगृहीतच्छत्रस्य वारिधारा इवारयः ॥
बलं प्रज्ञाविहीनस्य परकार्याय केवलम् ।
गिरिकूटोपमाङ्गस्य कुञ्जरस्येव दृश्यते ॥

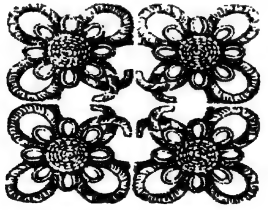

स्त्रीप्रत्यय (Feminine Affixes)

१३२—पुरुष-वाचक शब्द को स्त्री-वाचक बनाने के लिए जो प्रत्यय आते हैं, वे स्त्रीप्रत्यय कहलाते हैं—आ ई ऊ ति ये चार स्त्रीप्रत्यय हैं।

१३३—आ—अकारान्तों से परे आ आता है। जैसे—कान्त-कान्ता। कुर्वाण-कुर्वाणा। सर्व-सर्वा। दक्षिण-दक्षिणा। उत्तर-उत्तरा। द्वितीय-द्वितीया। तृतीय-तृतीया। अजा। अश्वा। चटका। बलाका। बाला। वत्सा। मध्यमा। कनिष्ठा।

१३४—ई आता है—

(क) जाति वाचकों से—जैसे—ब्राह्मण-ब्राह्मणी। मृग-मृगी। सिंह-सिंही। कुक्कुट-कुक्कुटी। काक-काकी।

अपवाद—अज-अजा (बकरी)। अश्व-अश्वा (घोड़ी)। चटक-चटका (चिड़ी)। शूद्रा इत्यादि।

(ख) अकारान्तों से—

पुरुष के सम्बन्ध से, जैसे—गोपस्य स्त्री (गोप की स्त्री) गोपी। शूद्रस्य स्त्री=शूद्री।

अपवाद—कतिपय शब्दों से आनी भी होता है—इन्द्रस्य स्त्री=इन्द्राणी। भवस्य स्त्री=भवानी। रुद्रस्य स्त्री=रुद्राणी। मातुलस्य स्त्री=मातुलानी इत्यादि।

(ग) बाल्यावस्था वाचकों से, जैसे—कुमार-कुमारी। किशोर-किशोरी।

अपवाद—बाला, कन्या।

(घ) नकारान्तों से, राजन् ई=राज्ञ् ई=राज्ञी-

ई=राज्ञी, गुणिन्-गुणिनी। मनस्विन्-मनस्विनी। यशस्विन्-यशस्विनी।

(ङ) ऋकारान्तों से जैसे—कर्तृ-कर्त्री। दातृ-दात्री।

अपवाद—स्वसृ (बहिन), दुहितृ (कन्या), मातृ (माता), ननान्द (ननद), यातृ (देवरानी, जेठानी), तिसृ (तीन), चतसृ (चार)—ये ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग हैं।

(च) अत्, वत्, मत्, वस्-प्रत्यय जिनके अन्त में हैं, उन से ई—

और नपुंसक ई प्रत्यय परे होने पर इन का जो रूप बनता है, वही स्त्रीप्रत्यय ई परे होने पर बनता है (देखो पृष्ठ ८२ टिप्पणी)।

अत्—पठत्-पठन्ती। तुदत्-तुदन्ती (वा) तुदती। दीव्यत्-दीव्यन्ती। चोरयत्-चोरयन्ती। अदत्-अदती। ददत्-ददती। महत्-महती। दास्यत्-दास्यन्ती।

वत्—धनवत्-धनवती। गुणवत्-गुणवती।

मत्—बुद्धिमत्-बुद्धिमती। श्रीमत्-श्रीमती।

वस्—विद्वस्-विदुषी।

आ और ई ये दो ही स्त्रीप्रत्यय प्रसिद्ध हैं।

ऊ श्वशुर से श्वश्रू और कुरु से कुरू-इत्यादि में हैं।

ति का एक ही उदाहरण है—युवन्+ति=युवति।

अभ्यास २५

(क) शुनीयं व्याघ्र्या भीत्वा पलायिता ।
अजायास्तस्याश्शावकोविडाल्या युध्यते ।
गच्छन्त्यास्तस्या युवत्यागतिः कान्ता ।
वृक्षाणां छाया दिनारम्भे गुर्वी दिनान्ते च लघ्वी ।
महत्यां जनसंसदि विदुष्या तया नार्या व्याख्यानं कृतम् ।
व्याधशरविद्धा सा कुरङ्गी भूमावपतत् ।
महिष्या जन्मोपलक्ष्ये श्वः पाठशालायामनध्यायो भविष्यति ।
रामस्य जनयित्री कौशल्या जानक्याः श्वश्रूः ।
शरच्चन्द्रिकाऽतीव मनोहारिणी ।
स्वकुट्यां निषीदन्तीं सीतां रावणो हृतवान् ।
दशरथस्य कन्यकां शान्तामृष्यश्रृङ्गः पर्यणयत् ।

(ख) तुम्हारी बहू घर के काम काज में चतुर है ।
इन्द्र की स्त्री का नाम शची है।
यह हरिणी तेज़ दौड़ती है ।
उस युवा स्त्री के भाग्य में सुख नहीं ।
पति की सेवा पत्नी का धर्म है ।
यवनों के जुलमों से सताई हुई कई राजपूतनियों ने प्राण त्याग दिये ।
उस पाठशाला की उस्तानियां बड़ी लायक हैं ।
मैं आप से उस शूर स्त्री की कहानी सुनाता हूं ।
लाहौर के चिड़ियाघर में कई मोरनियां और हंसनियां हैं ।
कोयल कव्वी से अपने बच्चे पलवाती है ।
वह सेठानी बड़ी धर्मात्मा और दान करने वाली है ।
लिखती हुई उस स्त्री की कलम टूट गई ।

तद्धित प्रत्यय (Nominal affixes)

१३५–किसी प्रसिद्ध सम्बन्ध को लेकर नाम से परे जो प्रत्यय लगते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

ये सम्बन्ध और प्रत्यय बहुत हैं। उन में कुछ प्रसिद्ध प्रसिद्ध आगे दिये जायेंगे। यहां पर केवल तारतम्य (Degrees of comparison) के बोधक प्रत्ययों का वर्णन किया जाता है।

तारतम्य बोधक प्रत्यय (Degrees of comparison)

१३६–तर, तम, तराम्, तमाम्–विशेषण शब्दों से परे तर लगता है, जब दो में से एक की उत्कृष्टता दिखानी हो। और तम लगता है, जब सब मे एक की उत्कृष्टता दिखानी हो। यथा—

इमौ द्वौ आढ्यौ, अयमनयोराढ्यतरः।
इमे सर्वे आढ्याः, अयमेषामाढ्यतमः।
इसी प्रकार—शुचि-शुचितर, शुचितम।
प्रिय-प्रियतर प्रियतम (हिं० भाषा प्रीतम)

स्त्रीलिङ्ग में आ आकार तर तमा बन जाता है। प्रियतरा, प्रियतमा इत्यादि।

१३७——(क) क्रियापदों मे परे तराम् और तमाम् होते हैं और ये अव्यय बन जाते हैं–पचतितराम्, पचतितमाम्।

(ख) अव्ययों से परे भी तराम्, तमाम् आते हैं और ये क्रिया-विशेषण होजाते हैं। जैसे-इमौ छात्रावुच्चैरधीयाते, अयमनयोरुच्चैस्तरामधीते। इमे छात्रा उच्चैरधीयते, अयमेषामुच्चैस्तमामधीते।

जब वे द्रव्य के विशेषण हों, तब तर, तम ही होते हैं। जैसे—उच्चैस्तरः तरुः, उच्चैस्तमः तरुः।

१३८–ईयस्, इष्ठ–तर के अर्थ में ईयस् और तमके अर्थ में इष्ठभी होना है। भेद इन में यह है, कि तर और तम हर एक विशेषण से परे लग जाते हैं, पर ईयस् और इष्ठ गुणवाचक विशेषणों से परे ही लगते हैं और किसी से नहीं। लघु गुणवाची है, इससे लघुतर, लघुतम की नाईं लघीयस् और लघिष्ठ भी बन जायेंगे, पर आढ्य गुण का नाम नहीं, इसलिए इसके आढ्यतर, आढ्यतम ही होंगे। आढ्यीयस्, आढ्यिष्ठ नहीं।

१३९–(क) ईयस्, इष्ठ परे होनेपर अन्त्य स्वर का लोप होता है और यदि उससे परे व्यञ्जन हो, तो वह भी साथ ही लुप्त हो जाता है। जैसे–लघु+ईयस्=लघ् ईयस्=लघीयस्, महत्+ईयस्= मह् ईयस्=महीयस्।

उदाहरण

पटु	पटुतर	पटुतम	पटीयस्	पटिष्ठ
लघु	लघुतर	लघुतम	लघीयस्	लघिष्ठ
महत्	महत्तर	महत्तम	महीयस्	महिष्ठ

(ख) ईयस्, इष्ठ परे होने पर प्रकृति के ऋ को प्रायः र हो जाता है। जैसे–मृदु–म्रदीयस्, म्रदिष्ठ। कृश–क्रशीयस्, क्रशिष्ठ दृढ–द्रढीयस्, द्रढिष्ठ।

कई शब्दों में और भी बहुत परिवर्तन हो जाते हैं— जैसे–स्थूल–स्थवीयस्, स्थविष्ठ।

गुरु–गरीयस्, गरिष्ठ।

युवन्–यवीयस् (वा कनीयस्) यविष्ठ (वा कनिष्ठ)।

वृद्ध–ज्यायस् ज्येष्ठ।

प्रशस्य–श्रेयस्, श्रेष्ठ।

बहु–भूयस्, भूयिष्ठ।

स्त्रीलिङ्ग–लघीयसी–लघिष्ठा, पटीयसी–पटिष्ठा–इत्यादि।

अभ्यास २६

(क) मोहनः पटुः परं तस्य कनीयान्भ्राता देवदत्तः पटीयान् ।

एषु वृक्षेष्वसौ वृक्षःद्राधिष्ठः ।

श्येन आकाशे उच्चैस्तरामुड्डीय पक्षिणो गृह्णाति ।

त्रयो मल्लयो बलीयान् देवधरो मल्लःपरं चन्द्रदत्तः सर्वेषु बलिष्ठः ।

दशरथस्य चत्वाराः पुत्राः तेषु रामः ज्येष्ठः शत्रुघ्नश्च कनिष्ठः ।

महती चिन्ता मां बाधते परं मत्तोऽपि महीयसी मे पितरम् ।

गुरुतमोऽयंपाषाणः,युष्मासु क एनमुत्थापयितुं क्षमः ?

क्षमा शूराणा मुत्तमं भूषणम् ।

विद्यैव जगति मूल्यवत्तमं वस्तु ।

नास्मात् कोऽपि निर्लज्जतरो यन्निराकृतोऽपि पुनरेव याचते ।

दर्शनीयतमेयं स्रक् कस्य चक्षुषी न तर्पयति ?

न वरीयानयं पन्था यस्त्वयां गृहीतः ।

(ख) यह सभी फल मीठे हैं,पर यह तो बहुत मीठा है ।

यह सड़क भी लम्बी है पर जिस पर कल गये थे वह इससे भी लम्बी है ।

इस जमात के सब लड़कों में हरिराम बहुत योग्य है ।

इस गाँव में यह घर सब से बड़ा है ।

यह चबूतरा बहुत चौड़ा है ।

रावण के बाण तेज़ चलते थे पर राम के उससे भी तेज़ चलते थे ।

और सब कपड़ों से रेशमी

कपड़े बहुत नरम होते हैं। घर के सब से ऊंचे शिखर पर चढ़ कर वह तुझे बुला रहा था।

पहले भी बड़े २ भयानक युद्ध हुए हैं, पर पिछला यूरोप का युद्ध सब से भीषण था।

इन दोनों में से रामदेव खूब जल्दी दौड़ता है। मेरा घर शहर के दरवाज़े के बहुत नज़दीक है।

तुम दोनों युद्ध करो, तुम में से जो अधिक बलवान् होगा उसे मैं इनाम दूंगा।

संख्या वाचक शब्द (Numerals)

१४०-संख्यावाचकों के दो भेद हैं-गुणसंख्यावाचक (Cardinals) और संख्या पूरण वाचक-(Ordinals) एक, दो, तीन इत्यादि के वाचक संख्या वाचक, और पहला, दूसरा, तीसरा इत्यादि के वाचक पूरण-वाचक कहलाते हैं।

पहले सभी संख्याएं और उनसे जो संख्यापूरण रूप बनते हैं, वे दिखलाते हैं, पीछे रूपावलिया दिखलाएंगे—

१	एक	
२	द्वि	२० विंशति
३	त्रि	३० त्रिंशत्
४	चतुर्	४० चत्वारिंशत्
५	पञ्चन्	५० पञ्चाशत्
६	षष्	६० षष्टि
७	सप्तन्	७० सप्तति
८	अष्टन्	८० अशीति
९	नवन्	९० नवति
१०	दशन्	१०० शतम्

१४१-'दशन्' से 'शत' पर्यन्त दो दशकों (दहाकों) के मध्य की संख्या बनाने में एक आदि शब्द पूर्व लग जाते हैं।

(ख) 'द्वि' को 'द्वा',

(ग) 'त्रि' को 'त्रयस्' और 'अष्टन्' को 'अष्टा' होजाता है। अशीति परे होने पर यह परिवर्तन नहीं होते, पर चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति, नवति परे होने पर विकल्प से होते हैं।

एक+दशन्=एकादश होता है,षट्+दशन्=षोडश होता है। अन्यत्र-षष् के ट् को प्राप्त सन्धि हो जाती है। जैसे-षट् नवति=षण्-णवति। १९ के लिए नवदश, ऊनविंशति, एकोनविंशति, एकान्नविंशति हैं।

२४२-संख्या-पूरण शब्द-एक का प्रथम,द्विका द्वितीय,त्रि का तृतीय, चतुर् का चतुर्थ, तुरीय, तुर्य, षट् का षष्ठ होता है। स्त्री-लिङ्ग में 'चतुर्थी, 'षष्ठी' ई अन्ते वाले और शेष आ अन्तवाले (प्रथमा, द्वितीया आदि) होते है।

१४३-'पञ्चन्' से लेकर 'दशन्' तक के प्रत्यय म (स्त्री-मी) हैं और न् का लोप होता है। पञ्चन्-पञ्चम (स्त्री-पञ्चमी)।

दशन् अन्तवालों से अ प्रत्यय (स्त्री-ई) और अन् का लोप होता है। जैसे एकादशन्+अ=एकादश (स्त्री-एकादशी)।

विंशति आदि अन्तवालों के दो दो रूप बनते हैं। एक तो अन्त में तम (स्त्री-तमी) प्रत्यय लग कर बनता है। जैसे विंशति-विंशतितम,(स्त्री-विंशतितमी)। त्रिंशत् त्रिंशत्तम,(स्त्री त्रिंशत्तमी), और दूसरा विंशति के 'ति' और त्रिंशत्-आदि के अन्त्य अक्षर त् का लोप होकर बनता है, जैसे—विंशति=विंश, स्त्री-विंशी। त्रिंश-त्रिंशी। षष्टि से लेकर पूरे दहाके में तम (व स्त्री-तमी,) लग कर एक ही रूप बनते हैं। जैसे षष्टितम, स्त्री-षष्टितमी, सप्तति-सप्ततितम। पर,एक आदि साथ जोड़ने में दो दो रूप होते हैं-एक तम (तमी) वाला, जैसे एकषष्टितम (स्त्री-एकषष्टितमी) और दूसरा अन्त्य इ के स्थान में अ करने से-जैसे एकषष्ट (स्त्री, एकषष्टी) इत्यादि।

गणना

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण	
		पुंलिङ्ग	स्त्री०
१	एक	प्रथम	प्रथमा
२	द्वि	द्वितीय	० या
३	त्रि	तृतीय	० या
४	चतुर्	चतुर्थ	० र्थी
		तुरीय	० या
		तुर्य	० र्या
५	पञ्चन्	पञ्चम	० मी
६	षष्	षष्ठ	० ष्ठी
७	सप्तन्	सप्तम	० मी
८	अष्टन्	अष्टम	० मी
९	नवन्	नवम	० मी
१०	दशन्	दशम	० मी
११	एकादशन्	एकादश	० शी
१२	द्वादशन्	द्वादश	० शी
१३	त्रयोदशन्	त्रयोदश	० शी
१४	चतुर्दशन्	चतुर्दश	० शी
१५	पञ्चदशन्	पञ्चदश	० शी
१६	षोडशन्	षोडश	० शी
१७	सप्तदशन्	सप्तदश	० शी
१८	अष्टादशन्	अष्टादश	० शी
१९	नवदशन्	नवदश	० शी
	एकोनविंशति*—	एकोनविंशतितम	० मी

* प्रयोग बहुधा एकोन (एककम) वाले शब्दों का ही मिलता है।

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण	
		पुंलिङ्ग	स्त्री०
		एकोनविंश	० शी
१९	ऊनविंशति—	ऊनविंशतितम	० मी
		ऊनविंश	० शी
,,	एकान्नविंशति	एकान्नविंशतितम	० मी
		एकान्नविंश	० शी
२०	विंशति	विंशतितम	० मी
		विंश	० शी
२२	द्वाविंशति	द्वाविंशतितम	० मी
		द्वाविंश	० शी
२३	त्रयोविंशति	त्रयोविंशतितम	० मी
		त्रयोविंश	० शी
२६	षड्विंशति	षड्विंशतितम	० मी
		षड्विंश	० शी
२८	अष्टाविंशति	अष्टाविंशतितम	० मी
		अष्टाविंश	० शी
३०	त्रिंशत्	त्रिंशत्तम	० मी
		त्रिंश	० शी
३२	द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशत्तम	० मी
		द्वात्रिंश	० शी
३३	त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंशत्तम	० मी
		त्रयस्त्रिंश	० शी

जो संख्या छोड़ी गई है, उनमें कोई विशेषता नहीं, केवल दो संख्याओं का योग कर देना है, जैसे—एकविंशति, चतुर्विंशति, इत्यादि ।

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण पुंलिङ्ग	स्त्री०
३६	षट् त्रिंशत्	षट्त्रिंशत्तम	०मी
		षट्त्रिंश	०शी
३८	अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंशत्तम	०मी
		अष्टात्रिंश	०शी
४०	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्तम	०मी
		चत्वारिंश	०शी
४२	द्वाचत्वारिंशत्	द्वाचत्वारिंशत्तम	०मी
		द्वाचत्वारिंश	०शी
	द्विचत्वारिंशत्	द्विचत्वारिंशत्तम	०मी
		द्विचत्वारिंश	०शी
४३	त्रयश्चत्वारिंशत्	त्रयश्चत्वारिंश	०शी
	त्रिचत्वारिंशत्		
४६	षट् चत्वारिंशत्		
४८	अष्टाचत्वारिंशत्		
	अष्टचत्वारिंशत्		
५०	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्तम	०मी
		पञ्चाश	०शी
५२	द्वापञ्चाशत्		
	द्विपञ्चाशत्		
५३	त्रयः पञ्चाशत्		
	त्रिपञ्चाशत्		
५४	चतुष्पञ्चाशत्		

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण पुलिङ्ग	स्त्री०
५६	षट् पञ्चाशत्		
५८	अष्टापञ्चाशत्		
	अष्टपञ्चाशत्		
६०	षष्टि	षष्टितम	० मी
६१	एकषष्टि	एकषष्टितम	० मी
		एकषष्ट	० ष्टी
६२	द्वाषष्टि		
	द्विषष्टि		
६३	त्रयः षष्टि		
	त्रिषष्टि		
६६	षट् षष्टि		
६८	अष्टषष्टि		
	अष्टाषष्टि		
७०	सप्तति	सप्ततितम	० मी
७१	एकसप्तति	एकसप्ततितम	० मी
		एकसप्तत	०प्तती
७२	द्वा सप्तति		
	द्वि सप्तति		
७३	त्रयः सप्तति		
	त्रि सप्तति		
७६	षट् सप्तति		
७८	अष्टा सप्तति		
	अष्ट सप्तति		

अङ्क	संख्यावाचक	पूरण	
		पुंलिङ्ग	स्त्री०
८०	अशीति	अशीतितम	०मा
८१	एकाशीति	एकाशीतितम	०मी
		एकाशीत	०ती
८२	द्व्यशीति		
८३	त्र्यशीति		
८६	षडशीति		
८८	अष्टाशीति		
९०	नवति	नवतितम	०मी
९१	एकनवति	एकनवतितम	०मी
		एकनवत	०ती
९२	द्वा नवति		
	द्विनवति		
९३	त्रयोनवति		
	त्रिनवति		
९६	षण्णवति		
९८	अष्टानवति		
	अष्टनवति		
१००	शत	शततम	०मी
१०००	सहस्र		
१००००	अयुत		
१०००००	लक्ष		

बड़ी संख्या।

यदि सौ से आगे की संख्या बनानी हो तो सौ से कम संख्या पहले रखकर उसके पश्चात् सैकडे, फिर हज़ार, फिर लक्ष आदि क्रमशः रखना। जैसे—५२७ की संख्या को, यदि संस्कृत में लिखना हो तो उसे इस प्रकार रक्खेंगे—७ (सप्त)+ २० (विंशति)+५०० (पञ्चशत) । फिर प्रत्येक संख्या के बाद अधिक वा उत्तर शब्द जोड़े जायँगे। जैसे—सप्तोत्तर विंशत्युत्तरपञ्चशतानि।

इसी प्रकार–१०१ के लिए एकोत्तरशतं वा एकाधिकशतम्।

९९५=पञ्चनवत्यधिकनवशतानि।

७३५२=द्वापञ्चाशदुत्तरत्रिशतोत्तरसप्तसहस्राणि।

५७३२५५=पञ्चपञ्चाशदुत्तरद्विशतोत्तरत्रयस्सप्ततिसहस्रोत्तरपञ्चलक्षाणि।

संख्या वाचकों और संख्या पूरणों की रूपावलि।

'एक' शब्द सर्वादिगण में है, इसकी तीनों लिङ्गों म रूपावलि सर्ववत् होगी। संख्या-वाचक होकर एक एकवचन ही रहेगा। अन्य, मुख्य वा केवल अर्थ में द्विवचन बहुवचन भी होगा जैसे—एके विद्वांसो वदन्ति।

१४४ (क)–द्वि शब्द द्विवचनान्त है, इसके स्थान द्व होकर तीनों लिङ्गों में सर्ववत्। पुँलिङ्ग-द्वौ, द्वौ इत्यादि। स्त्री-द्वे, द्वे इत्यादि।

(ख)–त्रि बहुवचन है। पुंलिङ्ग में हरिवत्-त्रयः, त्रीन् इत्यादि। षष्ठी का बहुवचन त्रयाणाम् होगा। नपुंसक में प्रथमा, द्वितीया में वारिवत्—त्रीणि, त्रीणि-इत्यादि, शेष पुँवत्। स्त्रीलिङ्ग में त्रि के स्थान तिस्र होकर—तिस्रः। तिस्रः। तिसृभिः। तिसृभ्यः। तिसृभ्यः। तिसृणाम्। तिसृषु।

१४५ (क)–चतुर् बहुवचनान्त—पुँलिङ्ग में—चत्वारः । चतुरः । चतुर्भिः । चतुर्भ्यः । चतुर्भ्यः । चतुर्णाम् । चतुर्षु ।

नपुंसक में चत्वारि । चत्वारि । शेष पुंलिङ्गवत् ।

(ख)–स्त्रीलिङ्ग में चतस् होकर(तिसृवत्)चतस्रः । चतस्रः । चतसृभिः । चतसृभ्यः । चतसृभ्यः । चतसृणाम् । चतसृषु ।

१४६ (क)–पञ्चन्–(बहुवचनान्त) तीनों लिङ्गों में एक जैसा रहता है । पञ्च । पञ्च । पञ्चभिः । पञ्चभ्यः । पञ्चभ्यः । पञ्चानाम् । पञ्चसु ।

(ख)–अष्टन्–को छोड़ शेष सारे नकारान्त संख्यावाचक (सप्तन्, नवन्, षोडशन् आदि) पञ्चन् की नाईं होते हैं ।

अष्टन् के षष्ठी-बहुवचन को छोड़कर अन्यत्र दो दो रूप हैं ।

प्रथमा-द्वितीया बहु०	तृतीया बहु०	चतुर्थी-पञ्चमी बहु०
अष्टौ, अष्ट	अष्टाभिः-	अष्टाभ्यः-
	अष्टभिः	अष्टभ्यः
षष्ठी बहु०	सप्तमी बहु०	
अष्टानाम्	अष्टासु	
	अष्टसु	

इन के अतिरिक्त शेष सारे संख्या–वाचक शब्दों की रूपावलि उनके लिङ्ग और अन्त्य वर्ण के अनुसार होती है । जैसे—विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति नवति-शब्द स्त्रीलिङ्ग इ-अन्त वाले हैं । इनके रूप मति की नाईं होते है । त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्-शब्द तकारान्त स्त्रीलिङ्गी हैं इनके रूप सरित् की नाईं होते हैं । शत, सहस्र आदि शब्द अ अन्त वाले नपुँसकलिङ्गी हैं । इनके रूप नपुंसक के फल शब्द की नाईं होते हैं ।

१४७ (क)–त्रि से नवदशन् तक सारे संख्यावाचक बहुवचनान्त हैं। विंशति-आदि सारे संख्यावाचक शब्द एकवचनान्त हैं। इनके विशेष्य बहुवचन में आते हैं, और ये एकवचन में आते हैं। जैसे—विंशतिः पुरुषाः, पञ्चाशत् स्त्रियः। सहस्रं फलानि।

हाँ, जब इन्हीं संख्याओं को दुगुना, तिगुना आदि करके कहना अभिप्रेत हो, तब द्विवचन, बहुवचन भी होते हैं। जैसे–द्वे विंशती=दो बीसे। द्वेशते=दो सौ। तिस्रो विंशतयः=तीन बीसे। सप्त सहस्राणि=सात हज़ार।

संख्या-पूरण आ अन्त वाले लता की नाईं और ई अन्त वाले नदी की नाईं होते हैं।

अभ्यास २७

(क) अयं धनिकः पञ्चाशते विप्रेभ्यः प्रत्यहमन्नं ददाति।

चत्वारः, षट् च घटाः दश घटाः संपद्यन्ते।

चत्वारो वेदाः, षट् च शास्त्राणि।

शतस्याब्दानामन्तेऽस्य देशस्य दशा परिवर्त्स्यति।

चतुर्दशोत्तर नवशतोत्तर सहस्रतमे विक्रमीय-संवत्सरे यूरोपीय-महायुद्ध मभवत्।

रक्षसां सहस्राणि रामेण रणे पराजितानि।

एके वदन्ति संसारोऽयमनित्योऽपरे कथयन्ति यन्नित्योऽयम्।

एष्वशीतौ विप्रेष्विमाः षोडश मुद्रा विभजस्व।

सूर्यः सप्ताश्वः कथ्यते।

आश्विनस्याष्टम्यां दुर्गायामहोत्सवः जायते।

त्रयोदश्यां तिथौ कथेयं

समाप्स्यते ।
अद्यतः तृतीयस्मिन् दिवसे मामत्र प्रतिपालय ।
चतुर्णां वेदानां बह्व्यः शाखा वर्तन्ते ।
ऋग्वेदस्य पञ्च शाखाः, यजुर्वेदस्य षडशीतिः, सामवेदस्य सप्ताथर्ववेदस्य नवेति ।
स एव वर्षे वर्षे शतसहस्रं ब्राह्मणानभोजयत् ।

(ख) ये तीन फल इन तीन बालकों को देदो ।
रामदेव के व्याख्यान पर कोई पांच सौ आदमी जमा थे ।
रस नव और गुण चौबीस होते हैं ।
इस पाठशाला में पचपन लड़के और बत्तीस लड़कियां पढ़ती हैं ।
आज से बारहवें दिन मुझे यहीं मिलना ।
वैशाख के पहले दिन सौर वर्ष शुरू होता है ।
इस जमात में पांचवां, बीसवां और पच्चीसवां छात्र चतुर हैं ।
मेरी परीक्षा उन्नीस सौ चौबीसवें साल हुई थी ।
उन्नीस वस्तुओं को यदि छः लड़कों में बांटदें तो हरएकको तीन २ मिलेंगी और एक बच जायगी ।
उस मेले में हज़ारों नर थे, सैकड़ों का क्या कहना !
यह भूषण मैंने सात सौ रुपयों से खरीदा है ।
दो दो छात्रों को एक एक पंक्ति में खड़ा करो ।
इस पुस्तक के सात सौ पच्चीस श्लोक हैं ।

कारक-प्रकरण

१४८—नामों से परे जो विभक्तियां आती हैं, वे दो प्रकार की हैं—कारक विभक्ति और उपपद विभक्ति। क्रिया के सम्बन्ध से जो विभक्ति आती है, उसे कारक विभक्ति कहते हैं और समीप-स्थित किसी पद के प्रभाव से जो विभक्ति आती है, उसे उपपदविभक्ति कहते हैं।

(ख)—संस्कृत में कारक छः हैं—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। विभक्तियां सात हैं। षष्ठी प्रायः किसी कारक के सम्बन्धी को जितलाती है। जैसे—हरेर्भ्राताऽधीते=हरि का भाई पढ़ता है। यहाँ षष्ठी का सीधा सम्बन्ध भाई के साथ है, न कि क्रिया के साथ, इसलिए सम्बन्ध को कारक नहीं माना है।

विभक्तियों के क्रम से उनके प्रयोग दिखलाते हैं।

प्रथमा (The Nominative)

१४९ (क)—क्रियावाच्य में प्रथमा होती है। जैसे—'रामो रावणं जयति' यहां 'जयति' कर्तृवाच्य क्रिया है, इसलिए कर्ता (राम) में प्रथमा आई। रामेण रावणो जीयते=राम से रावण जीता जा रहा है, यहां 'जीयते' कर्मवाच्य क्रिया है, इसलिए कर्म (रावण) में प्रथमा हुई। 'रामो रावणं हतवान्'=राम ने रावण को मारा। यहां तवत् कर्तृवाच्य में है, इसलिए कर्ता में प्रथमा हुई। 'रामेण रावणो हतः' यहां त (कृत्) कर्मवाच्य में है इसलिए कर्म (रावण) में प्रथमा हुई।

(ख) जहां नाम के अर्थ से अधिक कहना कुछ भी अभिप्रेत न हो, वहां प्रथमा होती है। जैसे—घटः, पटः।

(ग)—सम्बोधन में प्रथमा होती है—देव ! आगच्छ।

द्वितीया (The Accusative)

१५०—क्रिया का फल जिस में हो, उसे कर्म कहते हैं।

१५२ (क)–अनुक्त कर्म में द्वितीया होती है।

'पाचकः तण्डुलान् पचति' यहां पकाने वाला पाचक है, उसके काम का फल (पकना) तण्डुलों पर हुआ है, इस से तण्डुल कर्म हुए। कर्म होने से द्वितीया हुई। इसी प्रकार राम-श्चन्द्रं पश्यति' में राम के देखने का फल चन्द्र पर हुआ है। 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुंक्ते' यहां खाने का फल ओदन पर और वैसे ही विष पर भी हुआ है।

(ख)—कुछ ऐसे धातु भी हैं जिन के दो कर्म हैं। जैसे—

'माणवकं पन्थानं पृच्छति' यहां पृच्छ् धातु द्विकर्मक है। इन के द्विकर्मक होने में हेतु यह है कि अलग २ बोलने में दोनों कर्म बन जाते हैं। जैसे—माणवकं पृच्छति। पन्थानं पृच्छति। इकट्ठा बोलने में भी उसी चाल पर 'माणवकं पन्थानं पृच्छति' कहा गया है। इसी प्रकार 'अजां ग्रामं नयति', 'माणवकं धर्मं ब्रूते-शास्ति', 'भिक्षुकः धनिकमन्नं याचते', 'तण्डुलानोदनं पचति इत्यादि द्विकर्मक हैं।

(ग)–गत्यर्थ धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी दोनों होती हैं। 'ग्रामं गच्छति' 'ग्रामाय गच्छति'।

उपपद विभक्ति (द्वितीया)—

(घ)–उभयतः (दोनों ओर से), सर्वतः (सब ओर से), धिक् (धिक्कार), उपर्युपरि, अधोऽधः, अध्यधि, अन्तरा, अन्तरेण के योग में द्वितीया होती है—उभयतो नदीं वृक्षा वर्तन्ते। सर्वतो ग्रामं

शस्यानि । धिङ्नास्तिकम् । उपर्युपरि पर्वतं मेघाः । अधोऽधो मेघान् विमानम् । अध्यधि लोकं हरिः । अन्तरा त्वां मां हरिः । अन्तरेण धर्मं न सुखम् ।

तृतीया (The Instrumental)

१५२ (क)–अनुक्त कर्ता में तृतीया होती है । 'देवदत्तेन कटःक्रियते' यहां क्रिया के कर्मवाच्य होने से कर्ता अनुक्त है ।

यह स्मरण रहे जहां कर्ता में प्रथमा,वहां कर्म में द्वितीया और जहां कर्ता में तृतीया वहां कर्म में प्रथमा होती है । जैसा कि ऊपर के सारे उदाहरणों से स्पष्ट है ।

(ख)–करण (साधन) में भी तृतीया होती है 'रामो बाणेन रावणमहन्' बाण मारने का साधन है, इसलिये उसमें तृतीया हुई ।

जहां क्रियावाच्य कर्ता हो, वहां तृतीया करण में ही होगी, पर जहां क्रिया का वाच्य कर्म हो,वहां कर्ता,करण दोनों में तृतीया होगी—रामेण बाणेन हतो बाली ।

उपपद विभक्ति (तृतीया)

(ग)–सहार्थ,ऊनार्थ और हीनार्थों के योग में तृतीया होती है । जैसे—पुत्रेण सह (साकं, सार्धं वा) गतः पिता । एकेन ऊना विंशतिः । धनेन हीनः । धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ।

(घ)–निषेधार्थक अलम् के साथ तृतीया आती है । अलं बहुभाषणेन ।

चतुर्थी (The Dative)

१५३(क)–क्रिया जिसके लिये की जाय,उसमें चतुर्थी होती है । जैसे याचकायान्नं यच्छति । अन्न देना याचक के लिए है, इसलिए याचक में चतुर्थी हुई ।

जैसे—यज्ञाय सम्भारान् सम्भरति।

(ख)–जिसके प्रति कुछ कहना हो, उसमें चतुर्थी होता है। जैसे—कथयामि ते भूतार्थम्।

(ग)—तय्यारी अर्थ में चतुर्थी होती है—युद्धाय संनह्यते।

(घ)–प्रयोजन अर्थ में ,, आर्त्तत्राणाय वः शस्त्रम्।

(ङ)—तुम् के अर्थ में ,, पुष्पेभ्यो व्रजति—

पुष्पाण्याहर्तुं व्रजति इत्यर्थः।

(च)–रुचि अर्थ वालों के योग में चतुर्थी होती है–मोहनाया-ध्ययनं रोचते। बालायापूपः स्वदते।

(छ)–क्रुध्, द्रुह्,ईर्ष्या,असूया-अर्थ वालों के योग में जिस पर क्रोध आदि हो, उस में चतुर्थी होती है—भृत्याय क्रुध्यति। नृपाय द्रुह्यति। मल्लः प्रतिमल्लायेर्ष्यति–असूयति।

उपपद विभक्ति (चतुर्थी)।

(ज)–नमः, स्वस्ति, स्वधा, अलम, वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी होती है—नमो गुरुभ्यः। नमस्ते। स्वस्ति ब्राह्मणेभ्यः। इन्द्राय स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। अलं मल्लो मल्लाय। वषट् देवेभ्यः।

पञ्चमी (The Oblative)

१५४ (क)—पञ्चमी होती है, अपादान से।

जब दो वस्तु वा व्यक्ति परस्पर अलग हों तो जिससे एक अलग होगा, उसे अपादान कहते हैं। जैसे—प्रासादा गच्छति। तेभ्यो लब्धम्। अश्वात् पतति।

(ख)—जिससे किसी की उत्पत्ति हो, उस में—हिमवतो गङ्गा प्रभवति, गोमयाद् वृश्चिका जायन्ते।

(ग)—जिस से भय हो वा जिससे रक्षा अभिप्रेत हो, उसमें—चौराद् बिभेति। पाहि मां नरकात्।

(घ)—जिससे छिपना अभिप्रेत हो, उस में—मातुर्निलीयते।

(ङ)—जिससे दूसरे की उत्कृष्टता दिखलानी अभिप्रेत हो उसमें—मतिरेव बलाद् गरीयसी। सम्भावितस्य चाकीर्ति र्मरणाद् अतिरिच्यते।

उपपद विभक्ति (पञ्चमी)

(च)—पृथक् बिना के योग में द्वितीया, तृतीया वा पञ्चमी आती है। विना ज्ञानं न सुखम्। विना श्रमात् न विद्या। पृथक् धर्मात् न मुक्तिः।

(छ)—अन्यार्थकों के योग में—

मित्रादन्यः (इतरः भिन्नः वा) को मां त्रातुं समर्थः?

(ज)—प्रभृति, आरभ्य, बहिः, अन्तरम्, ऊर्ध्वम्-आदि के योग में—जन्मनः प्रभृति-आरभ्य वा (जन्म से लेकर)। बहिर्ग्रामात्, वर्षादनन्तरम्, ऊर्ध्वम् वा।

षष्ठी (The Genitive

१५५ (क)–एक का दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध बतलाने में षष्ठी होती है। पितुः पुत्रः। राज्ञो भृत्यः। हरेः पुस्तकम्। पशोः पादः।

(ख)–भाव कृदन्त के योग में कर्ता में और कर्मवाच्य कृदन्त के योग में कर्म में षष्ठी होती है—(भाव–) भवतः आगमनम्, (आपका आना),(कर्म-) अपां स्रष्टा (जलों का रचने वाला)।

(ग) तुल्यार्थक शब्दों के योग में षष्ठी वा तृतीया होती है। रामः

कृष्णस्य कृष्णेन वा तुल्यः–सदृशः ।

(घ)—दोनों के मध्य में भेदबोधन में षष्ठी होती है—एतावानेवायुष्मतः शतक्रतोश्च विशेषः ।

सप्तमी (Locative)

१५६–में, पर, ऊपर (in, at, on) इन अर्थों के बोधन में सप्तमी होती है—तिलेषु तैलम् (तिलों में तेल) । चरणयोर्निपेततुः (वे दोनों चरणों पर गिर पड़े) । कट आस्ते (चटाई के ऊपर बैठता है) । मयि विश्वासः (मेरे ऊपर विश्वास) । सुहृज्जने प्रेम (सुहृज्जन पर प्रेम) । तस्मिन् काले (उस काल में) ।

उपपद विभक्ति ।

१५७–जिस क्रिया से किसी दूसरी क्रिया का समय प्रतीत हो, उसमें सप्तमी होती है—गोषु दुह्यमानासु गतः—दुग्धास्यागतः,(गौएं जब दुही जारही थीं, तब गया, जब दुही जाचुकीं, तब आया) ।

१५८–में से, (चुनाव अर्थ के बोधन में षष्ठी, सप्तमी दोनों होती हैं–नृणां नृषु वा (मनुष्यों में से) ब्राह्मणः श्रेष्ठः । गवां गोषु वा कृष्णा सम्पन्नक्षीरा । गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्शीघ्रः । छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः ।

अभ्यास २८

(क) रामः देवः मोहन इति त्रयः पुत्रा जगदीशस्य ।
चत्वारः पुरुषाः तिस्रो नार्यः इति सप्त प्राणिनः तत्रावर्तन्त ।
विश्वामित्रो राममनयत् ।
कालिदासेनायं ग्रन्थो-रचितः ।
कृतम् मयेदं कार्यम् ।
यदा भरतोऽयोध्यामविशत्

रामं तत्राऽदृष्ट्वाऽचिन्तयत्।

स फलानि भुक्त्वा कार्य-मारभते।

आचार्यो यज्ञदत्तं त्रीन् प्रश्नानपृच्छत्।

गोपो गां दुग्धं दोग्धि।

भिक्षुकः धनिकं भिक्षां याचते।

रामेश्वरेण स्वपाठो ना-रभ्यते।

जनैर्नेतारोऽनुगम्यन्ते।

लेखिन्या पत्रं लिख्यते।

यवनेनानेनासिना तस्य शिरश्छिन्नम्।

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यः।

भिक्षुकेभ्योऽन्नं दातव्यम्।

भूषणेभ्यस्सुवर्णंक्रीणाति।

यन्मया तुभ्यमकथ्यत तन्नानृतम्।

ब्रूहि मे आत्मनोऽभिप्रेतम्।

वत्साः, पठनायोद्योगो-विधेयः।

सा जलाय नदीं गच्छति।

स वस्त्रेभ्योऽद्य गृहं यास्याति।

बालकायास्मै क्रीडनं न तथा रोचते यथाऽध्य-यनम्।

दीनेभ्योमा क्रुध्यत।

ये नृपेभ्यो द्रुह्यन्ति ते प्राण-दण्ड माप्नुवन्ति।

ग्रामादागच्छन्तमिमं नरं मार्गे सर्पोऽदशत्।

अश्वात् पतित्वा सोऽचे-तनो जातः।

कामात् क्रोधोऽभिजायते।

नद्यो भूभृद्भ्यः प्रभवन्ति।

शूरो न कस्माच्चिदपि बिभेति।

अध्यापकान्निलीयतेऽयम-पठितपाठः छात्रः।

अश्लीलं वचो भाषमाणोऽयं वृद्धेभ्योऽपि न लज्जते।

रावणात् रामो बलवत्तरः।

मतिरेव बलाद् गरीयसी।

न तस्य तुल्यः कश्चिदपि जगति।

पितुः पुत्रे महान्स्नेहः स्वाभाविकः।

चौरेणामुना हरेः पुस्तकानि चोरितानि।

श्रीमतामागमनेनास्माकं गृहशोभा द्विगुणा जाता।
कस्यास्मिन् विश्वासः।
दुर्जनेषु न कोऽपि विश्वसिति।
पात्रेऽस्मिन् जलमानीय गुरोः पादौ क्षालयस्व।
परमा भक्तिरस्यास्मिन् यतौ।
पुरा गुरवश्शिष्येष्वेवमस्निह्यन् यथा पिता पुत्रेषु स्निह्यति।

उपपद विभक्ति।

(ख) अभितो ग्रामं वर्षाजलं वर्तते।
धिक्तं दुराचारं यः गुरुद्रव्यमप्यपहरति।
त्वामन्तरेण कः क्षमस्तद्विपदं निवारयितुम्।
आत्मानं सर्वतो वह्निं प्रज्वाल्यासौ तापसस्तपस्तपति।
विधुना सह याति चन्द्रिका।
धर्म्मेण विहीनस्य सर्वाः क्रिया निष्फलाः।
अतःपरं मया सार्धं कलहो न विधेयः।
एकेनोना विंशतिरूनविंशतिः।
अलं बहुविवादेन।
अलं महीपाल! तव श्रमेण।
नमस्तस्मै प्रभवे येनेदं कृत्स्नं जगत्सृष्टम्।
स्वस्ति भूपायेत्युक्त्वा स ब्राह्मणो निष्क्रान्तः।
अलमहमस्मै क्षुद्राय।
अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा।
रामादन्यः न कोपि रावणं हन्तुं क्षमः।
कृष्णादितरः कः पाण्डवान् विजापयितुं शक्तः।
रविवासरात्प्रभृति शनिवासरं यावन्महानुत्सवो भविष्यति।
एतस्मात्स्थानादारभ्य तत् स्थानं यावत् कियदन्तरम्?
ग्रामाद् बहिरेकं रम्यं मन्दिरम्।

वर्षादूर्ध्वं स गृहं प्रति निवृत्तः ।
मालवीयभाषणादनन्तरं मोतीलालो व्याख्यानमारप्स्यते ।
वस्त्रेषूत्तमं कौशेयवस्त्रम् ।
नरेषूत्तमो रामः ।
द्विजानां ब्राह्मणः वरिष्ठः ।
गच्छन्तु धावन्तु शीघ्रः ।

सर्वेषूपस्थितेषु सोऽवदत् ।
गृहमागते मयि सर्वे परां मुदमाप्नुवन् ।
सायंकाले जाते विहगा-रुवन्ति ।
रावणे मृते को नामोदत ?
युधिष्ठिरे राज्यं शासति प्रजाः सानन्दमवर्तन्त ।

(ग) राजा के आने पर सब नगरवासी सड़क के दोनों ओर खड़े होगये ।
भाई, इस बेचारे बीमार से क्यों गुस्से होते हो ?
आज कल तो भाई से भाई को ईर्ष्या होती है ।
राम के बन जाने पर सीता भी उनके साथ गई ।
आप सुख से रहें, मेरी आपको क्या परवाह ?
स्वर्ग, मर्त्य, पाताल ये तीन लोक हैं ।
छोटा सा साहसी बालक भी एक कायर पुरुष के लिये काफी है ।

इस पहाड़ के चारों ओर एक सुहावना जंगल है।
जो पुत्र पिताके पीछे चलता है, वह आज्ञाकारी है ।
घर से बाहर निकलते ही उससे एक भिखारी ने पैसा मांगा ।
मुझ से यह बात न पूछो ।
राजा ने उस बेचारे को चार महीनों के जेल का दण्ड दिया ।
धन से हीन का कोई आदर नहीं करते ।
मंगलवार से लेकर मैं रोज़ बाहर जाकर व्यायाम करता हूं ।

लिखना बस करो अब समय नहीं रहा।
पिता के मरने के बाद वह घर छोड़ चला गया।
प्राण शरीर से अलग जैसे नहीं रहते वैसे भर्ता से अलग स्त्री नहीं रह सकती।
धिक्कार उन्हें जो निस्सहायों को सताते हैं।
धर्म के बिना कमाया धन सुख नहीं देता।
आप और मेरे बीच में धर्म साक्षी है।
घरके लिए लकड़ी खरीदो।
स्त्रियां पानी के लिए नदी पर जाती हैं।
मुझ से वह क्षण में ही मारा गया।
यह दूर से आया है, इस लिए इसको वापस न भेजो।
मल से कीड़े निकलते हैं।
प्रकाश सूर्य के साथ जाता है।
तारे पृथ्वी के ऊपर हैं।
श्रम के बिना विद्या नहीं आती।
तू बड़ा निर्लज्ज है, तुझे किसी की शरम नहीं।
अपराधी डर से कांपता है।
मुझे मृत्यु का भय नहीं, बदनामी से डरता हूँ।
बीमारों को औषध अच्छी नहीं लगती।
अध्यापक के आते ही सब छात्र उठ खड़े हुए।
प्रातःकाल होते ही मैं स्नान करता हूं।
मुझे देखते ही वह भाग जाता है।
मुझे पढ़ने को पुस्तक दो।
युधिष्ठिर जैसा सत्यवादी संसार में नहीं।
माता का अपनी सन्तान पर बड़ा स्नेह होता है।
प्रयाग में गङ्गा और यमुना का संगम है।

APPENDIX. 1.

EXAMINATION-PAPERS 1917.

I. Introduce Sandhi-changes in the following and state the rules that you apply :—

तद्+हितम्, शम्भुः+राजते ।

II. Write out the declensions, in all cases and numbers, of राजन्, पितृ and इदम् (पुंलिङ्ग) ।

III. Give the feminine forms of विद्वस्, इन्द्र, राजन् and अन्त ।

IV. Write out the comparative and superlative forms of लघु and दूर ।

V. Expond, name and define the following compounds :—पितृसमः and मुखकमलम ।

VI. Conjugate, in all persons and numbers, the root दृश् in the Present Tense (लट्), वृध् in the imperative (लोट्), कृ (परस्मैपदी) in the Second preterite (लिट्) and वच् in the Aorist (लुङ्) ।

VII. Turn the following Active into Passive, and vice versa :—

(a) अहं ग्रन्थं पठामि । (b) बुद्धेः शास्त्रैः संस्क्रियते ॥

VIII. Write out the Sanskrit words for 6, 45, 70, 6th, 33rd and 84th.

IX. Give the Present Participle (शत्रन्त) and the Past Passive Participle (क्तान्त) of गम्, धा, रुध् and कृ ।

X. Translate into Sanskrit :—

(a) Victory, intellect, battlefield, mockery, death, and wakefulness.

(b) यह सुन कर वह वृद्धा बोली, मेरा तो और कोई नहीं है, केवल एक पुत्र है, किन्तु वह मूर्ख बेटा भी प्रायः बारह वर्ष से इस बूढ़ी दरिद्रा माता को छोड़ कर न जाने कहां चला गया। अब सुना है कि जयपुर के महाराज रामसिंह के पहाड़ी किले में वह मेरा पुत्र कुछ काम करता है। परन्तु मेरे भरण-पोषण का कोई उपाय नहीं है। पथिक लोग यहां आकर पानी पीते हैं और मुझे कुछ देना चाहते हैं, किन्तु पानी पिला कर मैं किसी से कुछ नहीं लेती, क्योंकि मैं यह जानती हूं कि तृषार्त्त को जल पिलाकर और क्षुधित को भोजन खिलाकर उस के बदले में कुछ लेना भारी पाप है। जंगल की लकड़ी, मृगचर्म और वनौषधि आदि बेच कर किसी प्रकार मैं पेट भर लेती हूं। परन्तु अब अत्यन्त वृद्धा होने के कारण मुझ से परिश्रम नहीं हो सकता, तथापि और क्या करूं ? वृद्धावस्था में ऐसा निर्वाह बड़ा कष्टदायक है। मैं अपने जीवन का शेष समय बड़े ही दुःख से बिता रही हूं। इस अवस्था में पुत्र का वियोग तो मुझे एक प्रकार से मार ही डाले है। यह कह रोने लगी।

(c) सदा सत्यपथ का अनुसरण करो और अध्यवसाय-पूर्वक काम में लगे रहो। संसार के बहुत बड़े विद्वान् दार्शनिक, वैज्ञानिक, आविष्कर्ता या करोड़पति नहीं बन सकते। पर हां सभी लोग अपने जीवन को प्रतिष्ठा और सुख से पूर्ण अवश्य बना सकते हैं। इस के अतिरिक्त यह बात भी ध्यान में रखने के योग्य है कि अप्रतिष्ठा और निष्फलता उन कामों में नहीं जिन

को लोग छोटा अथवा तुच्छ समझते हैं, किन्तु उन कामों को अपनी पूर्ण शक्ति से न करने में है। जूता सीना निन्दनीय नहीं है। निन्दनीय है ओर्चा होकर खराब जूता सीना।

1918.

I. Which Sandhi-changes have taken place in **महच्छत्रम्** and **कस्मिंश्चित्** ? Give rules.

II. Write out the declension, in all cases and numbers, of **युष्मद्, गुरु, नदी,** and **विद्वस्।**

III. Give the Comparative and Superlative forms of **दीर्घ** and **युवन्।**

IV. Expound, name, and define the compounds **हिमशिशिरम्** and **चक्रपाणिः।**

V. What cases do **सह** and **ऋते** govern ? Give examples.

VI. Conjugate, in all persons and numbers, the root **शक्** in the Present Tense (**लट्**), **कृ** (**परस्मैपदी**) in the Potential (**विधिलिङ्**), **सेव्** in the Second Future (**लृट्**) and **पृच्छ्** in the (**लुङ्**).

VII. Form the Present Tense (**लट्**) third person, singular from the Causal (**णिजन्त**) and the Indeclinable Past Participle (**क्त्वान्त**) from the roots **हन्, दृश्, दा** and **चुर्।**

IX. Change the voice in—**प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।**

X. Translate into Sanskrit :—

(a) Loyalty, traveller, shoe, disease, harmful, and crow.

(b) उस पर्वत की कन्दरा में एक सिंह रहता था। उसी कन्दरा में एक बिल था जिस में एक मूषक रहता था। जब सिंह सोता तो मूषक बाहर आकर सिंह के केश काटने लगता। जब सिंह जागता तो मूषक शीघ्र बिल में प्रवेश करता। सिंह ने विचार किया कि इस क्षुद्र मूषक को मारने से मेरे यश की हानि होगी। अतः इसी जैसा एक शत्रु लाकर इस का नाश करना चाहिए। यह विचार वह सिंह एक दिन ग्राम में गया और वहां से बिडाल लाया। सिंह के सोने पर वह बिडाल कन्दरा के द्वार पर बैठ कर रक्षा करता। एक दिन बिड़ाल ने मूषक को मार दिया, तब सिंह ने विचारा कि जिस काम के लिये मैं इस को लाया था वह तो सिद्ध हो गया, अब इस को यहां रखना आवश्यक नहीं।

(c) बोपदेव बाल्यावस्था में बहुत मन्दबुद्धि था, पुनः पुनः अभ्यास से भी अपना पाठ स्मरण न कर सकता था। उस ने बड़े परिश्रम से व्याकरण के अनेक ग्रन्थ पढ़े परन्तु ज्ञान प्राप्त न हुआ। एक दिन निराश हुआ और पाठशाला त्याग कर एक सरोवर के तट पर जा बैठा और विचार में मग्न हो गया। कुछ काल के पीछे उसने एक युवती को देखा जिसने घट जल से पूर्ण कर एक पाषाण पर रखा और स्नान करने लगी। स्नान के पीछे घड़ा उठाकर, वह घर को चली गई। प्रतिदिन घटके घर्षण से उस पाषाण के मध्य में एक गर्त हो गया था। वह देख कर बोपदेव के हृदय में एक नवीन भाव उदित हुआ और वह प्रसन्न

चित्त हो गुरु के निकट गया और बोला गुरु जी यदि प्रति दिन घट के घर्षण से पाषाण में भी गर्त होगया है तो अवश्य निरन्तर परिश्रम से मेरी बुद्धि भी तीक्ष्ण हो जायगी।

1919.

I. Introduce Sandhi-changes in तत्+श्रुत्वा, धावन्+अश्वः and state the rules.

II. Write out the declensions, in all cases and numbers, of पति, इदम् (पुंलिङ्ग) and राजन्।

III. Give the Comparative and Superlative forms of दूर and मृदु।

IV. Expound, name and define the compounds मुखकमलम् and शोकातीतः।

V. What cases do अलम् and आरभ्य govern? Give examples.

VI. Conjugate in all persons and numbers, the root स्था in the imperative (लोट्), दा (परस्मैपदी) in the Potential (विधिलिङ्), युध् in the Perfect (लिट्) and कथ् in the Second Future (लृट्).

VII. Give the Present Tense (लट्) third person, singular, from the Causal (णिजन्त) of कृ.

VIII. Give the Past Passive Participle (क्तान्त) and the Potential Passive Participle (तव्यान्त) of जि, स्मृ and स्वप्।

IX. Correct and rewrite (क) श्रीमती सीता

भरतु रामाय सह वनस्य गच्छन्ते and (ख) एषस्य कर्मस्य फलं शुभी भवष्यिति ।

X. Translate into Sanskrit—

(*a*) Deer, treasure, death, obedient, donkey, and barber.

(*b*) उस वन में वृद्ध हस्ती रहता था. उसको देखकर शृगालों ने विचार किया यदि इस गज को किसी प्रकार मार डालें तो चिरकाल तक भोजन की चिन्ता न होगी। एक वृद्ध शृगाल जो सभा में उपस्थित था कहने लगा—'भ्रातृगण ! आप निश्चिन्त रहें, मैं बुद्धिबल से उसे अवश्य मार दूंगा।' एक दिन वही शृगाल उस हस्ती के समीप जाकर बोला—"महाराज, प्रणाम करता हूं और आप की प्रसन्नता का अभिलाषी हूं।" यह सुन कर गज ने पूछा—रे तू कौन है ? कहां से आया है ? क्या चाहता है ? शृगालने उत्तर दिया, "महाराज ! इस वन में बसने वाले सब जीवों ने मुझे आप के चरणों में भेजा है। प्रार्थना यह है कि इस समय हम लोगों का कोई राजा नहीं, आप में सारे राजगुण विद्यमान हैं, क्योंकि राजा वही होना चाहिए जो आप की तरह कुलीन, सदाचारी, प्रतापी, धर्मात्मा और नीति कुशल हो। अतः आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार करें, क्योंकि राजा के बिना प्रजा दुःखित हो रही है, आप शीघ्र आइये, अच्छे कार्यों में विलम्ब करना उचित नहीं।" हस्ती यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और राज्यलोभ से मोहित हो, शृगाल के पीछे चल पड़ा।

(*c*) बहुत लोग कहते हैं कि उद्यम व्यर्थ है। क्योंकि प्रत्येक प्राणी सुख की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करता है, परन्तु उसे दुःख की भी प्राप्ति होती है। इस से स्पष्ट है कि ईश्वर जिसे चाहे

उसे सुख का वा दुःख का पात्र बनादे। सकल संसार के प्राणी ईश्वर के वश में होकर सुख वा दुःख का अनुभव करते हैं। और विद्या से अविद्या का नाश होता है, प्रयत्न से विद्या की प्राप्ति होती है। इस कारण समस्त दुःखों का नाश प्रयत्नों से होता है। यदि इस जगत् में सारे अनर्थों का मूल आलस्य न होता तो कौन धनवान् अथवा बलवान् न होता ?

1920.

I. Introduce Sandhi-changes in **षष्+थः** and **प्रभो+अनुगृहाण** and state rules.

II. Write out the declensions, in all cases and numbers of **पितृ**, **अदस्** (**स्त्रीलिङ्ग**) and **युवन्**।

III. Give the Compartive and Superlative forms of **बहु** and **क्षुद्र**।

IV. Expound, name and define the compounds **चोरभीतः** and **त्रिलोकी**।

V. What cases are used with **अधिशेते** and **कल्पते** ? Give examples with meanings.

VI. Conjugate, in all persons and numbers, of the root **शिक्ष्** in the Imperative (**लोट्**), **मुच्** (**परस्मै०**) in Imperfect (**लङ्**), **हन्** in the Present tense (**लट्**) and **युज्** (**आत्मनेपद**) in the Second Future (**लृट्**)।

VII. Give the Present tense (**लट्**) third person Singular, from the Causal (**णिजन्त**) of **दा** and **गम्**।

VIII. Give the Present Active Participles of गम्, ईक्ष्, धा and मृ and the Infinitives (तुमुन्नन्त) of जि, स्मृ, युध् and भक्ष्।

XI. Correct and rewrite–(क) नमस्त्वां महाराजन्, (ख) क गन्तव्यमहमितिमो पृच्छामि।

(*b*) प्राचीन काल में सुदर्शन नाम एक राजा था। उसके कई पुत्र थे, परन्तु सब मूर्ख। वह न पढ़ सकते थे। न लिख सकते थे। राजा ने कई उपाय किए, परन्तु सफलता न हुई। एक दिन वह मन में विचारने लगा—"मैं इन मूर्ख पुत्रों को क्या करूं! जो पढ़े लिखेंगे नहीं तो यह राज्य कैसे करेंगे। जब मैं मर जाऊंगा तो इन की क्या गति होगी।" राजा को उदासीन देख कर एक पण्डित जिस का नाम विष्णुशर्मा था, बोला, 'महाराज, मैं राजकुमारों को छः मास के भीतर नीति निपुण बना दूंगा, मैं इन को पोथी न पढ़ाऊंगा किन्तु कथा सुनाऊंगा। गीदड़, हंस और अन्य वन के जन्तुओं की कहानियां बताऊंगा। कुछ जन्तु चतुर होते हैं, कुछ मूढ़, कुछ विश्वास के योग्य। कुछ धूर्त लोग भी ऐसे ही होते हैं। इस प्रकार मैं राजकुमारों को अवश्य बुद्धिमान् बना दूंगा।" राजा ने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा, इस उपकार से मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूंगा।" विष्णु शर्म्मा राजकुमारों को अपने घर ले गया। उन को मारा पीटा नहीं और न गाली दी। उस ने मीठी बातें कीं, अपने पास बिठाया और मनोहर कथा कहने लगा। अन्त में ऐसा ही हुआ जैसा उस ने कहा था।

(c) हम सब के लिए राम चरित एक निर्मल दर्पण है। इस में हम देख सकते हैं कि बालकों को माता पिता की आज्ञा

क्यों किर पालन करनी चाहिए, भाईयों को कैसा परस्पर प्रेम रखना चाहिये, पतिव्रता को अपने पति की सेवा कैसे करनी चाहिये, अभिमानी और हठशील पुरुषों को हठ का फल क्या मिलता है, सत्य के पालन से क्या लाभ और असत्य के आचरण से कैसी हानि होती है । प्यारे बालको, परम पवित्र रामायण को पढ़ना और उस के अनुसार सुनीति का वर्ताव करना तुम्हारे लिए परम हितकारी होगा और तुम अपनी संसारयात्रा का निर्वाह सुख से कर सकोगे ।

SANSRIKT PAPER (B) 1921

I. Introduce Sandhi-changes in **पितृ+आज्ञा, मनः+रञ्जनम्** and state the rules.

II. Write out the declensions, in all cases and numbers, of **कवि, नदी, इदम्** (**पुंलिङ्ग**)

III. What are the comparative and superlative forms **वृद्ध** and **स्थिर** by adding **ईयस्** and **इष्ठ** ?

IV. Expound, name and define the compounds **वाक्पटुः** ard **ईश्वरकर्तृकम.**

V. What cases are used with **अलम्** and **रोचते** ? Give examples with meanings.

VI. Conjugate, in all persons and numbers, of root **पट्** in the imperative (**लोट्**), **नश्** in the Potential (**विधिलिङ्**),**शी** in the Present (**लट्**) and **ग्रह्** (**परस्मै०**) in the Second Future (**लृट्**)

VII. Give the Past Passive Partiples (**क्त**)

of स्वप्, रम्, छिद्, कुप् and नश् and the infinitives (तुमुन्नन्त) of क्री, दण्ड्, भिद्, तॄ and युध्।

VIII. Correct and rewrite (क) रामो स्वमातॄन् प्रणमित्वा गृहेन निर्गतो। (ख) अहं मूलस्य विना त्वां पुस्तकं ददानि।

IX. Translate into Sanskrit :—

(a) Anxious, barber, firmness, frog, sister, and summer.

(b) सूर्य की किरणों से व्याकुल होकर दो कुत्ते एक वृक्ष की छाया में बैठ गए और वार्तालाप करने लगे। एक ने कहा, "भाई, संसार में मूर्ख लोग व्यर्थ ही लड़ते हैं और दुःखित होते हैं।" दूसरे ने उत्तर दिया, "मित्र, तुम सत्य कहते हो। कलह करना अनुचित है। सदा सब से प्रेम के साथ रहना चाहिये। इस प्रकार जगत् में आनन्द की वृद्धि होगी और दुःख का नाश होगा। आओ, हम दोनों प्रतिज्ञा करें कि परस्पर कलह कभी न करेंगे।" तब दोनों ने परमात्मा का ध्यान कर उक्त प्रकार से प्रतिज्ञा की। उसी क्षण में एक मांस का खण्ड ऊपर से उनके सन्मुख गिरा। दोनों कुत्ते उसको देख कर दौड़े। क्योंकि दोनों ही उस मांस को खाना चाहते थे, उनमें लड़ाई होने लगी यहां तक कि दोनों के शरीर रुधिर से लिप्त होगए। एक काक उनकी इस अवस्था को देख कर, वृक्ष से उड़ा और मांस खण्ड को चञ्चु से पकड़ कर लेगया। संसार में मित्रता उसी समय तक रहती है जब तक स्वार्थ नहीं होता। स्वार्थ होने पर स्नेह और मित्रता का नाश हो जाता है।

(c) जो धर्मात्मा हैं, वे शरणागत का त्याग नहीं करते।

विपत्ति में भी धर्म में दृढ़ रहते हैं । इसी कारण उनका यश वृद्धि पाता है । बड़ों का निरादर करने से मनुष्य नीच दशा को प्राप्त होता है और कष्ट भोगता है विद्वान् को अपनी विद्या का अहंकार कभी न करना चाहिए, पढ़ी हुई विद्या सफल हो अथवा निष्फल, अधर्माचरण तो कभी भी उचित नहीं ।

1922.

I. Introduce Sandhi-changes in विपद्+जालम् and प्रभो+अनुगृहाण and state rules.

II. Write out the declensions, in all cases and numbers, of पति, मातृ and अदस् (स्त्रीलिङ्ग) ।

III. What are the Comparative and Superlative forms of गुरु and बहु by ading ईयस् and इष्ठ ?

IV. Expound, name and define the compound घनश्यामः ।

V. Give the Feminine forms of व्याघ्र, विद्वस्, मनस्विन् and श्वन् ।

VI. Conjugate, in all persons aud numbers, the root लभ् in the Potential (विधि-लिङ्), मुच् (परस्मै०) in the Imperative (लोट्), इष् in the Imperfect (लङ्) and युज् (आत्मने०) in the Second Future (लृट्) ।

VII. Change the voice in :—

(a) पुरुषः स्तेनं प्रहरति and (b) आमिषं जले मत्स्यैः भक्ष्यते ।

(a) एक दिन एक राजा अपने सचिव और सेवक के

साथ भ्रमण करते करते एक वन में पहुंचा । राजा ने तृषा से दुःखित होकर सेवक को कहा,-"जल लाओ"। सम्मुख एक कुटी थी, वहां एक अन्ध तपस्वी कूप पर बैठा था। उस को देख कर सेवक बोला,-"अरे, अन्धे, हमें जल दो" । यह वचन सुनकर वह तापस बोला,—"यहां से दूर होजा। मैं नीच को जल नहीं दूंगा।" सेवक राजा के पास आया और बोला,—"अन्धा पानी नहीं देता।" तब सचिव ने जाकर कहा,—"भाई अन्धे, थोड़ा सा जल दो" उस तपस्वी ने उत्तर दिया,—"आप राजा के मन्त्री हैं तो मुझे क्या ? मैं जल नहीं देता" । मन्त्री के लौट आने पर राजा स्वयं गया और उस ने मधुर वचनों से प्रार्थना की,—"महात्मा जी, मुझे बहुत तृषा लगी है. कृपया थोड़ा सा जल दीजिये" । वह बोला,—राजन्, आप बैठ जाइए, मैं अभी जल देता हूं" । राजा ने आश्चर्य से कहा,—"महात्मा जी, जल तो मैं पीछे पान करूंगा. प्रथम यह बताइए कि आप देख तो सकते नहीं तब आप ने कैसे जान लिया कि प्रथम पुरुष सेवक था और दूसरा मन्त्री" । तापस ने उत्तर दिया,-"मैंने यह सब कुछ वाणी से जाना। केवल आप के ही वचन आदर और सत्कार से पूर्ण थे, जिन से आप की योग्यता और कुलीनता प्रकट होती थी"

(b) अपने कर्तव्य को प्रसन्नता से करो। उस के करने में उदास वा निराश मत हो ओ। अपने कार्य को मनोरञ्जक बनाओ, एवं वह कार्य सुख से सिद्ध होगा। कुछ न कुछ काम करते रहो, किसी उद्देश्य को हृदय में रक्खो इसी में जीवन का आनन्द है। अनेक मनुष्य अपने आनन्द के समय को भी मिथ्या भय और निर्मूल चिन्ताओं में व्यतीत करते हैं। मिथ्या कल्पनाओं से दूर रहो और सदैव शुभ कार्यों के करने में प्रवृत्त रहो । बुद्धिमान्

पुरुष के लिये प्रत्येक स्थान स्वदेश है और शान्तचित्त वाले के लिये प्रत्येक स्थान उस का प्रासाद है ॥

1923.

I. Combine the following pairs of words stating the Sandhi rules that you follow—

हरे+अत्र, लते+अमू, हरिः+रक्षति ।

II. Decline पति, सखि, चन्द्रमस्, अदस्, and पयोमुच् in Nom. Sing. (प्रथमा एकवचन) and Instrumental Plural (तृतीया बहुवचन), पितृ, दातृ, in Nom. Dual (प्रथमा द्विवचन) नदी and श्री in Acc. Plural (द्वितीया बहुवचन), आत्मन् and राजन् in Dative Sing. (चतुर्थी एकवचन), दिव् and विद्वस् in Genitive Plural (षष्ठी बहुवचन) and श्रेयस् and नस्थिवस् in Locative Sing. (सप्तमी एकवचन).

III. Give the Sanskrit words for 13, 15, 23 and 62nd.

IV. Name and dissolve the following compounds:—

रथिकाश्वारोहम्, करपल्लवः, सुप्तोत्थितः, पीताम्बरः, and उपगङ्गम् ।

V. Conjugate in all persons and numbers the root स्था and ज्ञा (परस्मै०) in the Present (लट्), क्रुध् and हन् in the Impertect (लङ्), इष् and अस् in the Imperative (लोट्), विश् and ब्रू in Potential (विधि-लिङ्) and गम् and सह् (आत्मने०) in the Second Future (लृट्) ।

IV. Give the Past Passive Participles (क्तान्त) of दा, स्था, पच् and लभ्, and the Infinitives (तुमुन्नन्त) of दृश्, प्रच्छ्, इ and नी।

VII. Translate into Sanskrit:—

किसी जंगल में एक व्याध ने पक्षियों को फांसने के लिए जाल फैलाकर चावल बखेर दिये। चावल चुगने को कितने ही कबूतर उस जाल के भीतर घुसे और फंस गये। जब उस में से निकलने का कोई उपाय न देखा तो वे कबूतर जाल को लेकर उड़े और उन का प्रधान चित्रग्रीव अपने आश्रितों को विपद से छुड़ाने की इच्छा से अपने मित्र हिरण्यक नाम चूहे के पास ले गया।

दोनों मित्रों में परस्पर प्रिय सम्भाषण होने के अनन्तर हिरण्यक चित्रग्रीव के सन्मुख आया और उसे जाल में फंसा देख कुछ देर विस्मित हो चुप रहा। फिर बोला कि "हे मित्र यह क्या?" चित्रग्रीव ने कहा "यह हम लोगों के विना विचारे काम करने का फल है।" यह सुन हिरण्यक चित्रग्रीव का बन्धन काटने को उद्यत हुआ। तब चित्रग्रीव ने कहा—"मित्र, ऐसा न करो, पहले इन आश्रितों का बन्धन काटो, इन की प्राण-रक्षा करो, पीछे मेरा बन्धन काटना।"

हिरण्यक ने उत्तर दिया—"मेरे दांत कोमल हैं, मुझ में इतनी शक्ति नहीं जो सब का बन्धन काट सकूं। अत एव मैं पहले तुम्हारा बन्धन काट कर यथासाध्य औरों के भी बन्धन काटूंगा। इन सब के बन्धन काटते काटते मेरे दांत टूट जायेंगे तो फिर तुम्हारा बन्धन कैसे काटूंगा।"

चित्रग्रीव ने कहा—"मित्र यह बात तुमने सच कही।

किन्तु पहले जहा तक तुम से हो सके इन्हीं का बन्धन काटो, मैं किसी प्रकार अपने आश्रितों का दुःख नहीं देख सकता। ये कबूतर बिना द्रव्य के मेरे आश्रित बने हैं। अतएव अपने प्राण गंवा कर भी इन की रक्षा करना मेरा धर्म है।

यह सुन हिरण्यक आनन्द से पुलकित हो बोला–"मित्र तुम धन्य हो। आश्रितों पर जैसा तुम्हारा प्रेम है उस गुण से तुम त्रिलोकी के प्रभुत्व के योग्य हो।" यह कह उस ने सारे कबूतरों के बन्धन काट डाले।

SANSKRIT PAPER A 1924.

I. Combine the following Pairs of words stating the Sandhi rules that you follow:—

अमी+अश्वाः, दूरात्+आगतः, धावन्+अश्वः, कस्मिन्+चित्

II. decline सुधी, नदी, स्त्री, श्री, वधू and धेनु in Nom. Sing. (प्रथमा एकवचन) and Nom. plural (प्रथमा बहुवचन), गो and दुहितृ in Acc. Plural (द्वितीया बहुवचन),युष्मद् and अस्मद् in Ablative Sing. (पञ्चमी एकवचन) and गिर् and धीमत् in Locative Sing. (सप्तमी एकवचन) and Instrumental Plural (तृतीया बहुवचन)

III. Give the Feminine forms of:—

सिंह, श्वन्, श्वशुर and कोकिल.

IV. Name and dissolve the following compounds:—

काकोलूकम्,युधिष्ठिरः, घनश्यामः,कर्तुकामः,and पितरौ।

V. Conjugate in all persons and numbers

the roots युध् and इष् in the Present (लट्), इ and विद् (अदादिगण) in theImperative (लोट्), श्री and दा in the Imperfect (लङ्), (आप्) and भू in the Potential (विधिलिङ्) and नी and पच् in the Second Future (लृट्)

VI. Give Present Participles (शत्रन्त) of नी, त्यज्, स्था, and तुप्, and the Indeclinable Past Participles (क्त्वान्त) of जि, कृ, हन् and नम् ।

VII. Translate into Sanskrit:—

अवधदेश में सरयू नदी के किनारे प्राचीन समय में अयोध्या नाम की एक नगरी थी । वह इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की राजधानी थी । इसी वंश में दशरथ नाम के बड़े प्रतापी और धर्मात्मा राजा हुए । उनके तीन रानियां थीं, कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा । परन्तु राजा के कोई सन्तान न थी और इसी कारण राजा उदास रहते थे । एक बार शृङ्गी ऋषि राजा के पास आये और उन्होंने कहा कि आप पुत्रेष्टि-यज्ञ कीजिए, आपके सन्तान होगी । राजा ने ऐसा ही किया और नियत समय पर उनके चार पुत्र हुए । बड़ी रानी कौशल्या के गर्भ से रामचन्द्र, सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण और शत्रुघ्न और कैकेयी के गर्भ से भरत हुए । जब बालक बड़े हुए तो अपने कुलगुरु वशिष्ठ मुनि के घर पढ़ने को जाने लगे । वे विलक्षण बुद्धि के बालक थे, इसलिये थोड़े ही दिनों में उन्होंने लिखना पढ़ना, तीर चलाना, घोड़े पर चढ़ना, शिकार खेलना आदि बातें सीख लीं । कुछ समय के पश्चात् विश्वामित्र ऋषि राजा दशरथ के पास आये और उन्होंने कहा कि राजन् ! राक्षस

लोग आकर हमारे यज्ञ में विघ्न डालते हैं। यदि आप अपने पुत्रों राम और लक्ष्मण को हमें दें तो बड़ी कृपा हो। राजा दशरथ पहले तो सोच-विचार करने लगे, परन्तु फिर वशिष्ठ जी के समझाने पर उन्हों ने मुनि से कहा कि आप इनको ले जाइए।

विश्वामित्र के आश्रम में पहुंच कर इन बालकों ने अपनी वीरता का परिचय दिया। ऋषि बहुत प्रसन्न हुए और उन्हों ने दोनों भाइयों को अच्छे अच्छे हथियार दिये। थोड़े दिन के पश्चात् समाचार मिला कि मिथिला के राजा अपनी कन्या सीता का विवाह करने के लिये स्वयम्बर रचने वाले हैं। विश्वामित्र के साथ दोनों वीर बालक मिथिलापुरी गये।

1925.

I. निम्नलिखित पदों में सन्धि करो और जिन नियमों के अनुसार सन्धि करो वह भी लिखो :—

तत्+हितम्, तत्+श्रुत्वा, भानुः+गच्छति, हरिः+रक्षति।

II. णत्वविधान और षत्वविधान के नियम उदाहरण सहित लिखो।

III. कवि और पति के तृतीया एकवचन और चतुर्थी एकवचन में, सर्व के पञ्चमी एकवचन (पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग) में, वीरुध् और चन्द्रमस् के तृतीया एकवचन में और द्विवचन में, मातृ और स्वसृ के प्रथमा द्विवचन में, गच्छत् और ददत् के प्रथमा एकवचन में, अदस् के तृतीया बहुवचन (पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग) में, और राजन्, श्वन्, पथिन् और विद्वस् के द्वितीया बहुवचन में रूप लिखो।

VI. नीचे लिखे समस्त पदों के विग्रह-वाक्य लिखो और बताओ कि इन पदों में कौन से समास हैं:—

पितृसमः, अब्राह्मणः, पुरुषव्याघ्रः, त्रिलोकी, चक्रपाणिः ।

V. स्था धातु और मृ धातु के लट् में, अद् और अस् (अदादिगण) के लङ् में, रुद् और जागृ के लोट् में, शी और ब्रू (परस्मैपद) के विधिलिङ् में, और भू तथा स्था के लट् में रूप लिखो ।

VI. त्यज्, सह, लभ् और इष् के क्तान्त रूप तथा गम् जि, कृ और दृश् के तुमुन्नन्त रूप लिखो ।

VII. नीचे लिखे गद्य का संस्कृत में अनुवाद करो—

राजा दशरथ अब वृद्ध होगये थे । राज्य का काम उनसे नहीं होता था । इस लिये उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र को युवराज बनाना चाहा । यह बात कैकेयी को बुरी लगी । उसने राजा से कहा कि आपने एक बार मुझे दो वर देने का वचन दिया था । वह आज तक पूरा नहीं किया । अब मैं अपने दोनों वर मांगती हूं । एक वर से तो रामचन्द्र को १४ वर्ष का बनवास दीजिए और दूसरे से भरत को राजगद्दी । राजा यह सुनते ही घबरा गये । नगरवासी उत्सव मना रहे थे । घर घर में आनन्द था । लोग हर्ष से फूले नहीं समाते थे । और राज-तिलक की शुभ घड़ी की बाट देख रहे थे । जब कैकेयी के वर मांगने की चर्चा नगर में फैली तो कोलाहल मच गया । लोग शोकाकुल होकर कहने लगे—हाय ! इस रानी ने क्या किया । परन्तु अब क्या हो सकता था । राजा तो वचन दे चुके थे । प्रतिज्ञा पूरी न करना उनके कुल की रीति के विरुद्ध था ।

राजा की बुरी दशा हुई । इधर तो सत्य का पालन और उधर पुत्र का प्रेम । रामचन्द्र जी को सब ने समझाया परन्तु उन्होंने एक न सुनी और बन जाने की तय्यारी करने लगे ।

सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ बन जाने को तय्यार हुए। रामचन्द्र जी ने सीता को बहुत समझाया और कहा कि वन में अनेक दुःख सहने पड़ेंगे। परन्तु उन्होंने न माना और कहा कि जब आप ही वन को जाते हैं तो मैं यहां रह कर क्या करूंगी। स्त्री के लिये अपने पति की सेवा करना ही परम धर्म है।

1926.

१—अनुनासिक वर्ण कौनसे हैं ? उपधा और सम्प्रसारण किसे कहते हैं ?

२—निम्नलिखित पदों में सन्धि करो और जिन नियमों के अनुसार सन्धि करो वह भी लिखोः—

महत्+चक्रम्, हरिम्+वन्दे, जगत्+नाथः, पूर्णः+चन्द्रः।

३—सुधी और खलपू के तृतीया एकवचन में, गो और नदी के द्वितीया बहुवचन में, अस्मद् और युष्मद् के चतुर्थी एकवचन और बहुवचन और सप्तमी द्विवचन में, स्वामिन्, राजन् और आत्मन् के द्वितीया और षष्ठी बहुवचन में, और त्रि और चतुर् के द्वितीया (पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग) में रूप लिखो।

४—नीचे लिखे समस्तपदों के विग्रह-वाक्य लिखो और बताओ कि इन पदों में कौन से समास हैं।

रथिकाश्वारोहम्, वाक्पटुः, चतुर्युगम्, कर्तुकामः, परोक्षम्।

५—पत् धातु और वद् धातु के लट् में, भू और गम् के लङ् में, प्रच्छ् और युध् के लोट में, विद् और पा (भ्वादि) के विधिलिङ् में, कृ और धा के लट् में रूप लिखो।

६—दृश्, स्था, क्रुध्, और दा के शत्रन्त रूप, तथा गम्, श्रु, हन् और ब्रू के क्त्वान्त रूप लिखो।

७—संस्कृत में अनुवाद करो।

(a) निषध देश का राजा नल एक बार वनविहार को निकला। नगर से कुछ दूर निकल जाने पर एक उपवन में उसने एक मनोहर तालाब देखा। उस में खूब कमल खिले हुए थे, मछलियां खेल रहीं थीं और अनेक प्रकार के जलपक्षी कलोल कर रहे थे। वहां पर उसने एक बहुत ही मनोहर हँस को देखा। राजा को वह ऐसा अच्छा लगा कि उसने उसे सजीव पकड़ना चाहा। इस लिये उसने अपने निषङ्ग से एक सम्मोहन शर उस पर चलाने के लिये निकाला। शर को उस ने शरासन पर रक्खा ही था कि उसने एक अलक्षित वाणी सुनी। उस वाणी का मर्म्म यह था कि—"हे नरेश, इस पर बाण मत छोड़। यह तेरा अभीष्ट सिद्ध करेगा। तेरी ही गुण-सम्पदा के अनुरूप यह तुझे एक त्रिभुवन मोहिनी राजकन्या प्राप्त करावेगा। उसे तू अपनी महिषी बनाना।

(b) क. मैं कल ही कलकत्ते मे आया हूं।

ख. तुम्हारा भाई कल ग्राम से लौट आएगा।

ग. महात्मा परोपकार के लिये तन मन धन अर्पण कर देते हैं।

घ. जैसे पहाड़ पृथिवी को धारण करते हैं वैसे ही राजा प्रजा का पालन करते हैं।

ङ. किसी साधुने कुत्ते से पूछा "तू रास्ते में क्यों सोता है।" कुत्ता बोला "मैं भले बुरे की परीक्षा करता हूं।"

च. जो हम सच बोलेंगे तो ईश्वर हम से प्रसन्न होगा।

छ. श्याम बड़ा अच्छा लड़का है। वह किसी को नहीं सताता।

ज. ईश्वर की दी देह के किसी अङ्ग की निन्दा नहीं करनी चाहिये।

झ. इस विषय में तुम्हें कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

ञ. माता पिता की सेवा करो। फल पाओगे।

APPENDIX. II.

धातु	लट्,	लोट्,	लङ्,	विधि-लिङ्,	लृट्	क्तान्त,	तुमुन्नन्त	णिजन्त	कर्मवाच्य	शतृ-शानच्
अट्-घूमना भ्वा. प.	अटति	अटतु	आटत्	अटेत्	अटिष्यति	अटित	अटितुम्	आटयति	अट्यते	अटत्
अर्च्-पूजना भ्वा. प.	अर्चति	अर्चतु	आर्चत्	अर्चेत्	अर्चिष्यति	अर्चित	अर्चितुम्	अर्चयति	अर्च्यते	अर्चत्
अर्ज्-एकत्रकरना भ्वा.प.	अर्जति	अर्जतु	आर्जत्	अर्जेत्	अर्जिष्यति	अर्जित	अर्जितुम्	अर्जयति	अर्ज्यते	अर्जत्
अर्थ्-मांगना चु. आ.	अर्थयते	अर्थयताम्	आर्थयत	अर्थयेत	अर्थयिष्यते	अर्थित	अर्थितुम्	अर्थयति	अर्थ्यते	अर्थयमान
अश्-खाना क्रया. प.	अश्नाति	अश्नातु	आश्नात्	अश्नीयात्	अशिष्यति	अशित	अशितुम्	आशयति	अश्यते	अश्नत्
अस्-होना अ. प.	अस्ति	अस्तु	आसीत्	स्यात्	भविष्यति	भूत	भवितुम्	भावयति	भूयते	सत्
आप्-पाना स्वा. प.	आप्नोति	आप्नोतु	आप्नोत्	आप्नुयात्	आप्स्यति	आप्त	आप्तुम्	आपयति	आप्यते	आप्नुवत्
आस्-बैठना अ. प.	आस्ते	आस्ताम्	आस्त	आसीत	आसिष्यते	आसित	आसितुम्	आसयति	आस्यते	आसीन
इ-जाना अ. प.	एति	एतु	ऐत्	इयात्	एष्यति	इत	एतुम्	गमयति	ईयते	यत्
इष्-चाहना तु. प.	इच्छति	इच्छतु	ऐच्छत्	इच्छेत्	एषिष्यति	इष्ट	एष्टुम्	एषयति	इष्यते	इच्छत्
ईक्ष्-देखना भ्वा. आ.	ईक्षते	ईक्षताम्	ऐक्षत	ईक्षेत	ईक्षिष्यते	ईक्षित	ईक्षितुम्	ईक्षयति	ईक्ष्यते	ईक्षमाण
कथ्-कहना चु. उ.	कथयति	कथयतु	अकथयत्	कथयेत्	कथयिष्यति	कथित	कथयितुम्	कथयति	कथ्यते	कथयत्

,,	कथयते	कथयताम्	अकथयत	कथयेत	कथयिष्यते	,,	,,	,,	,,	कथयमान
कम्प्-काम्पना भ्वा.आ.	कम्पते	कम्पताम्	अकम्पत	कम्पेत	कम्पिष्यते	कम्पित	कम्पितुम्	कम्पयति	कम्प्यते	कम्पमान
काङ्क्ष्-चाहना भ्वा.आ.	काङ्क्षते	काङ्क्षताम्	अकाङ्क्षत	काङ्क्षेत	काङ्क्षिष्यते	काङ्क्षित	काङ्क्षितुम्	काङ्क्षयति	काङ्क्ष्यते	काङ्क्षमाण
कुप्-क्रोध करना दि.प.	कुप्यपि	कुप्यतु	अकुप्यत्	कुप्येत्	कोपिष्यति	कुपित	कोपितुम्	कोपयति	कुप्यते	कुप्यत्
कूज्-बोलना भ्वा. प. (पक्षियों का)	कूजति	कूजतु	अकूजत्	कूजेत्	कूजिष्यति	कूजित	कूजितुम्	कूजयति	कूज्यते	कूजत्
कृ-करना त. उ.	करोति	करोतु	अकरोत्	कुर्यात्	करिष्यति	कृत	कर्तुम्	कारयति	क्रियते	कुर्वत्
,,	कुरुते	कुरुताम्	अकुरुत	कुर्वीत	करिष्यते	,,	,,	,,	,,	कुर्वाण
कृष्-खींचना भ्वा. प.	कर्षति	कर्षतु	अकर्षत्	कर्षेत्	कर्ष्यति	कृष्ट	कर्ष्टुम्	कर्षयति	कृष्यते	कर्षत्
कॄ-बिखेरना तु. प.	किरति	किरतु	अकिरत्	किरेत्	करि(री)ष्यति	कीर्ण	करि(री)तुम्	कारयति	कीर्यते	किरत्
क्रन्द्-चिल्लाना भ्वा. प.	क्रन्दति	क्रन्दतु	अक्रन्दत्	क्रन्देत्	क्रन्दिष्यति	क्रन्दित	क्रन्दितुम्	क्रन्दयति	क्रन्द्यते	क्रन्दत्
क्रम्-चलना भ्वा. उ. ,,	क्रामति	क्रामतु	अक्रामत्	क्रामेत्	क्रमिष्यति -क्रंस्यते	क्रान्त	क्रमितुम्	क्रमयति	क्रम्यते	क्रामत्
,, दि. प.	क्राम्यति	क्राम्यतु	अक्राम्यत्	क्राम्येत्	,,	,,	,,	,,	,,	क्राम्यत्
क्लिश्-दुःखीहोना दि.आ.	क्लिश्यते	क्लिश्यताम्	अक्लिश्यत	क्लिश्येत	क्लेशिष्यते	क्लिष्ट-क्लिशित	क्लेष्टुम्-क्लिशितुम्	क्लेशयति	क्लिश्यते	क्लिश्यमान

क्षम्-क्षमा करना दि.आ.	क्षाम्यति	क्षाम्यतु	अक्षाम्यत्	क्षाम्येत्	क्षमिष्यति	क्षमित	क्षमितुम्	क्षमयति	क्षम्यते	क्षाम्यत्
					क्षंस्यति	क्षान्त	क्षन्तुम्	,,	,,	,,
क्षर्-बहना भ्वा. प.	क्षरति	क्षरतु	अक्षरत्	क्षरेत्	क्षरिष्यति	क्षरित	क्षरितुम्	क्षारयति	क्षर्यते	क्षरत्
क्षल्-धोना चु. उ.	क्षालयति	क्षालयतु	अक्षालयत्	क्षालयेत्	क्षालयिष्यति	क्षालित	क्षालयितुम्	क्षालयति	क्षाल्यते	क्षालयत्
,,	क्षालयते	क्षालयताम्	अक्षालयत	क्षालयेत	क्षालयिष्यते	,,	,,	,,	,,	क्षालयमान
क्षि-क्षीण होना भ्वा. प.	क्षयति,	क्षयतु	अक्षयत्	क्षयेत्	क्षेष्यति	क्षीण	क्षेतुम्	क्षाययति	क्षीयते	क्षयत्
क्षिप्-फैंकना तु. उ.	क्षिपति	क्षिपतु	अक्षिपत्	क्षिपेत्	क्षेप्स्यति	क्षिप्त	क्षेप्तुम्	क्षेपयति	क्षिप्यते	क्षिपत्
,,	क्षिपते	क्षिपताम्	अक्षिपत	क्षिपेत	क्षेप्स्यते	,,	,,	,,	,,	क्षिपमाण
खन्-खोदना भ्वा. प.	खनति	खनतु	अखनत्	खनेत्	खनिष्यति	खात	खनितुम्	खानयति	खन्यते	खनत्
खाद्-खाना भ्वा. प.	खादति	खादतु	अखादत्	खादेत्	खादिष्यति	खादित	खादितुम्	खादयति	खाद्यते	खादत्
खेल्-खेलना भ्वा. प.	खेलति	खेलतु	अखेलत्	खेलेत्	खेलिष्यति	खेलित	खेलितुम्	खेलयति	खेल्यते	खेलत्
गण्-गिनना चु. उ.	गणयति	गणयतु	अगणयत्	गणयेत्	गणयिष्यति	गणित	गणयितुम्	गणयति	गण्यते	गणयत्
,,	गणयते	गणयताम्	अगणयत	गणयेत	गणयिष्यते	,,	,,	,,	,,	गणयमान
गम्-जाना भ्वा. प.	गच्छति	गच्छतु	अगच्छत्	गच्छेत	गमिष्यति	गत	गन्तुम्	गमयति	गम्यते	गच्छत्
गर्ज्-गर्जना भ्वा. प.	गर्जति	गर्जतु	अगर्जत्	गर्जेत्	गर्जिष्यति	गर्जित	गर्जितुम्	गर्जयति	गर्ज्यते	गर्जत्

गाह्-न्हाना भ्वा. आ.	गाहते	गाहताम्	अगाहत	गाहेत	गाहिष्यते	गाहित	गाहितुम्	गाहयति	गाह्यते	गाहमान
गुप्-रक्षाकरना भ्वा. प.	गोपायति	गोपायतु	अगोपायत्	गोपायेत्	गोपायिष्यति	गोपायित	गोपायितुम्	गोपयति	गुप्यते	गुप्यमान
,,					गोपिष्यति	गुप्त	गोप्तुम्			
,,							गोपितुम्			
गै-गाना भ्वा. प.	गायति	गायतु	अगायत्	गायेत्	गास्यति	गीत	गातुम्	गापयति	गीयते	गायत्
ग्रह्-पकड़ना क्रया. उ.	गृह्णाति	गृह्णातु	अगृह्णात्	गृह्णीयात्	ग्रहीष्यति	गृहीत	ग्रहीतुम्	ग्राहयति	गृह्यते	गृह्णत्
,,	गृह्णीते	गृह्णीताम्	अगृह्णीत	गृह्णीत	ग्रहीष्यते	,,	,,	,,	,,	गृह्णान
घ्रा-सूंघना भ्वा. प.	जिघ्रति	जिघ्रतु	आजिघ्रत्	जिघ्रेत्	घ्रास्यति	घ्राण	घ्रातुम्	घ्रापयति	घ्रायते	जिघ्रत्
चर्-चलना करना भ्वा.प.	चरति	चरतु	अचरत्	चरेत्	चरिष्यति	चरित	चरितुम्	चरियति	चर्यते	चरत्
चल्-चलना भ्वा. प.	चलति	चलतु	अचलत्	चलेत्	चलिष्यति	चलित	चलितुम्	चलियति	चल्यते	चलत्
चि-चुनना स्वा. उ.	चिनोति	चिनोतु	अचिनोत्	चिनुयात्	चेष्यति	चित	चेतुम्	चाययति	चीयते	चिन्वत्
,,	चिनुते	चिनुताम्	अचिनुत	चिन्वीत	चेष्यते	,,	,,	,,	,,	चिन्वान
चिन्त्-सोचना चु. उ.	चिन्तयति	चिन्तयतु	अचिन्तयत्	चिन्तयेत्	चिन्तयिष्यति	चिन्तित	चिन्तयितुम्	चिन्तयति	चिन्त्यते	चिन्तयत्
,,	चिन्तयते	चिन्तयताम्	अचिन्तयत	चिन्तयेत	चिन्तयिष्यते	,,	,,	,,	,,	चिन्तयमान
चुम्ब्-चूमना भ्वा. प.	चुम्बति	चुम्बतु	अचुम्बत्	चुम्बेत्	चुम्बिष्यति	चुम्बित	चुम्बितुम्	चुम्बयति	चुम्ब्यते	चुम्बत्

चुर्-चुराना चु. उ.	चोरयति	चोरयतु	अचोरयत्	चोरयेत्	चोरयिष्यति	चोरित	चोरयितुम्	चोरयति	चोर्यते	चोरयत्
,,	चोरयते	चोरयताम्	अचोरयत	चोरयेत	चोरयिष्यते	,,	,,	,,	,,	चोरयमाण
चूर्ण्-पीसना चु. उ.	चूर्णयति	चूर्णयतु	अचूर्णयत	चूर्णयेत्	चूर्णयिष्यति	चूर्णित	चूर्णयितुम्	चूर्णयति	चूर्ण्यते	चूर्णयत्
,,	चूर्णयते	चूर्णयताम्	अचूर्णयत	चूर्णयेत	चूर्णयिष्यते	,,	,,	,,	,,	चूर्णयमान
चेष्ट्-चेष्टाकरना भ्वा.आ.	चेष्टते	चेष्टताम्	अचेष्टत	चेष्टेत	चेष्टिष्यते	चेष्टित	चेष्टितुम्	चेष्टयति	चेष्टयते	चेष्टमान
छद्-ढांपना चु. उ.	छादयति	छादयतु	अच्छादयत्	छादयेत्	छादयिष्यति	छादित	छादयितुम्	छादयति	छाद्यते	छादयत्
,,	छादयते	छादयताम्	अच्छादयत	छादयेत	छादयिष्यते	,,	,,	,,	,,	छादयमान
छिद्-काटना रु. उ.	छिनत्ति	छिनत्तु	अच्छिनत्	छिन्द्यात्	छेत्स्यति	छिन्न	छेत्तुम्	छेदयति	छिद्यते	छिन्दत्
,,	छिन्ते	छिन्ताम्	अच्छिन्त	छिन्दीत	छेत्स्यते	,,	,,	,,	,,	छिन्दान
जप्-जपना भ्वा. प.	जपति	जपतु	अजपत्	जपेत्	जपिष्यति	जपित	जपितुम्	जापयति	जप्यते	जपत्
जागृ-जागना भ्वा. प.	जागर्ति	जागर्तु	अजागः	जागृयात्	जागरिष्यति	जागरित	जागर्तुम्	जागरयति	जागर्यते	जाग्रत्
जि-जीतना भ्वा. प.	जयति	जयतु	अजयत्	जयेत्	जेष्यति	जित	जेतुम्	जापयति	जीयेत	जयत्
जीव्-जीना भ्वा. प.	जीवति	जीवतु	अजीवत्	जीवेत्	जीविष्यति	जीवित	जीवितुम्	जीवयति	जीव्यते	जीवत
जॄ-पुराना होना दि. प.	जीर्यति	जीर्यतु	अजीर्यत्	जीर्येत्	जरि(री)ष्यति	जीर्ण	जरि(री)तुम्	जारयति	जीर्यते	जीर्यत्
ज्ञा-जानना क्रया. उ.	जानाति	जानातु	अजानात्	जानीयात्	ज्ञास्यति	ज्ञात	ज्ञातुम्	ज्ञापयति	ज्ञायते	जानत्

,,	जानीते	जानीताम्	अजानीत	जानीत	ज्ञास्यते	,,	,,	,,	,,	जानान
ज्वल्-जलना भ्वा. पा.	ज्वलति	ज्वलतु	अज्वलत्	ज्वलेत्	ज्वलिष्यति	ज्वलित	ज्वलितुम्	ज्वलयति	ज्वल्यते	ज्वलत्
डी-उड़ना भ्वा. आ.	डयते	डयताम्	अडयत	डयेत	डयिष्यते	डीन	डयितुम्	डाययति	डीयते	डयमान
						डयित				
तनू-फैलाना त. उ.	तनोति	तनोतु	अतनोत्	तनुयात्	तनिष्यति	तत	तनितुम्	तनियति	तन्यते	तन्वत्
,,	तनुते	तनुताम्	अतनुत	तन्वीत	तनिष्यते	,,	,,	,,	,,	तन्वान
तर्क्-कल्पनाकरना चु.उ.	तर्कयति	तर्कयतु	अतर्कयत्	तर्कयेत्	तर्कयिष्यति	तर्कित	तर्कयितुम्	तर्कयति	तर्क्यते	तर्कयत्
,,	तर्कयते	तर्कयताम्	अतर्कयत	तर्कयेत	तर्कयिष्यते	,,	,,	,,	,,	तर्कयमाण
तुल्-तोलना चु. उ.	तोलयति	तोलयतु	अतोलयत्	तोलयेत्	तोलयिष्यति	तोलित	तोलयितुम्	तोलयति	तोल्यते	तोलयत्
,,	तोलयते	तोलयताम्	अतोलयत	तोलयेत	तोलयिष्यते	,,	,,	,,	,,	तोलयमान
तुष्-प्रसन्न होना दि.प.	तुष्यति	तुष्यतु	अतुष्यत्	तुष्येत्	तोक्ष्यति	तुष्ट	तोष्टुम्	तोषयति	तुष्यते	तुष्यत्
त्यज्-त्यागना भ्वा. प.	त्यजति	त्यजतु	अत्यजत्	त्यजेत्	त्यक्ष्यति	त्यक्त	त्यक्तुम्	त्याजयति	त्यज्यते	त्यजत्
त्रस्-डरना भ्वा. दि.प.	त्रसति	त्रसतु	अत्रसत्	त्रसेत्	त्रसिष्यति	त्रस्त	त्रसितुम्	त्रासयति	त्रस्यते	त्रसत्
,,	त्रस्यति	त्रस्यतु	अत्रस्यत्	त्रस्येत्	,,	,,	,,	,,	,,	त्रस्यत्
त्रुट्-टूटना दि. तु.प.	त्रुटति	त्रुटतु	अत्रुटत्	त्रुटेत्	त्रुटिष्यति	त्रुटित	त्रोटितुम्	त्रोटयति	त्रुट्यते	त्रुटत्

,,	त्रुटयति	त्रुटयतु	अत्रुटयत्	त्रुटयेत्	,,	,,	,,	,,	,,	त्रुटयत्
त्रै-रक्षा करना भ्वा.आ.	त्रायते	त्रायताम्	अत्रायत	त्रायेत	त्रास्यते	त्रात	त्रातुम्	त्रापयति	त्रायते	त्रायमाण
त्वर्-जल्दीकरना भ्वा.आ.	त्वरते	त्वरताम्	अत्वरत	त्वरेत	त्वरिष्यते	त्वरित	त्वरितुम्	त्वरयति	त्वर्यते	त्वरत्
दण्ड्-दण्ड देना चु. उ.	दण्डयति	दण्डयतु	अदण्डयत्	दण्डयेत्	दण्डयिष्यति	दण्डित	दण्डयितुम्	दण्डयति	दण्ड्यते	दण्डयत्
,,	दण्डयते	दण्डयताम्	अदण्डयत	दण्डयेत	दण्डयिष्यते	,,	,,	,,	,,	दण्डयमान
पिष्-पीसना रु. प.	पिनष्टि	पिनष्टु	अपिनट्-ड्	पिष्यात्	पेक्ष्यति	पिष्ट	पेष्टुम्	पेषयति	पिष्यते	पिंषत्
दह्-जलाना भ्वा. प.	दहति	दहतु	अदहत्	दहेत्	धक्ष्यति	दग्ध	दग्धुम्	दाहयति	दह्यते	दहत्
दा-देना भ्वा. उ.	यच्छति	यच्छतु	अयच्छत्	यच्छेत्	दास्यति	दत्त	दातुम्	दापयति	दीयते	यच्छत्
दा-देना जु. उ.	ददाति	ददातु	अददात्	दद्यात्	दास्यति	दत्त	दातुम्	दापयति	दीयते	ददत्
,,	दत्ते	दत्ताम्	अदत्त	ददीत	दास्यते	,,	,,	,,	,,	ददान
दिश्-दिखाना तु. उ.	दिशति	दिशतु	अदिशत्	दिशेत्	देक्ष्यति	दिष्ट	देष्टुम्	देशयति	दिश्यते	दिशत्
,,	दिशते	दिशताम्	अदिशत	दिशेत	देक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	दिशमान
दीप्-चमकना दि. आ.	दीप्यते	दीप्यताम्	अदीप्यत	दीप्येत	दीपिष्यति	दीप्त	दीपितुम्	दीपयति	दीप्यते	दीप्यमान
दुह्-दोहना अ. उ.	दोग्धि	दोग्धु	अधोक्-ग्	दुह्यात्	धोक्ष्यति	दुग्ध	दोग्धुम	दोहयति	दुह्यते	दुहत्
,,	दुग्धे	दुग्धाम्	अदुग्ध	दुहीत	धोक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	दुहान

दृप्-दर्प करना दि. प.	दृप्यति	दृप्यतु	अदृप्यत्	दृप्येत्	दर्पिष्यति दर्प्स्यति	दृप्त	दर्पितुम् दर्प्तुम्-द्रप्तुम	दर्पयति	दृप्यते	दृप्यत्
,,										
दृश् देखना भ्वा. प.	पश्यति	पश्यतु	अपश्यत्	पश्येत्	द्रक्ष्यति	दृष्ट	द्रष्टुम	दर्शयति	दृश्यते	पश्यत्
द्युत्-चमकना भ्वा. आ.	द्योतते	द्योतताम्	अद्योतत	द्योतेत	द्योतिष्यते	द्युतित	द्योतितुम्	द्योतयति	द्युत्यते	द्योतमान
द्रुह्-द्रोह करना दि. प.	द्रुह्यति	द्रुह्यतु	अद्रुह्यत्	द्रुह्येत्	ध्रोक्ष्यति	द्रुग्ध द्रूढ	द्रोग्धुम् द्रोढुम्	द्रोहयति	द्रुह्यते	द्रुह्यत्
द्विष्-द्वेष करना अ. उ.	द्वेष्टि	द्वेष्टु	अद्वेट्-ड्	द्विष्यात्	द्वेक्ष्यति	द्विष्ट	द्वेष्टुम्	द्वेषयति	द्विष्यते	द्विषत्
,,	द्विष्टे	द्विष्टाम्	अद्विष्ट	द्विषीत	द्वेक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	द्विषाण
धृ-धारण करना चु. उ.	धारयति	धारयतु	अधारयत्	धारयेत्	धारिष्यति	धारित	धारयितुम्	धारयति	धार्यते	धार्यत्
,,	धारयते	धारयताम्	अधारयत	धारयेत	धारिष्यते	,,	,	,,	,,	धारयमाण
ध्यै-सोचना भ्वा. प.	ध्यायति	ध्यायतु	अध्यायत्	ध्यायेत्	ध्यास्यति	ध्यात	ध्यातुम्	ध्यापयति	ध्यायते	ध्यायत्
नन्द्-प्रसन्न होना भ्वा.प.	नन्दति	नन्दतु	अनन्दत्	नन्देत्	नन्दिष्यति	नन्दित	नन्दितुम्	नन्दयति	नन्द्यते	नन्दत्
नश्-नष्ट होना दि. प.	नश्यति	नश्यतु	अनश्यत्	नश्येत्	नशिष्यति नंक्ष्यति	नष्ट	नंष्टुम्	नाशयति	नश्यते	नश्यत्
निन्द्-निन्दाकरना भ्वा.प.	निन्दति	निन्दतु	अनिन्दत्	निन्देत्	निन्दिष्यति	निन्दित	निन्दितुम्	निन्दियति	निन्द्यते	निन्दत्

नी-लेजाना भ्वा. उ.	नयति	नयतु	अनयत्	नयेत्	नेष्यति	नीत	नेतुम्	नाययति	नीयते	नयत्
,,	नयते	नयताम्	अनयत	नयेत	नेष्यते	,,	,,	,,	,,	नयमान
नृत्-नाचना दि. प.	नृत्यति	नृत्यतु	अनृत्यत्	नृत्येत्	नर्तिष्यति नर्त्स्यति	नृत्त	नर्तितुम्	नर्तयति	नृत्यते	नृत्यत्
पच्-पकाना भ्वा. प.	पचति	पचतु	अपचत्	पचेत्	पक्ष्यति	पक्व	पक्तुम्	पाचयति	पच्यते	पचत्
पठ्-पढ़ना भ्वा. प.	पठति	पठतु	अपठत्	पठेत	पठिष्यति	पठित	पठितुम्	पाठयति	पठ्यते	पठत्
पत्-गिरना भ्वा. प.	पतति	पततु	अपतत्	पतेत्	पतिष्यति	पतित	पतितुम्	पातयति	पत्यते	पतत्
पा-पीना भ्वा. प.	पिबति	पिबतु	अपिबत्	पिबेत्	पास्यति	पीत	पातुम्	पाययति	पीयते	पिबत्
पार्-पूरा करना चु. उ.	पारयति	पारयतु	अपारयत्	पारयेत्	पारयिष्यति	पारित	पारयितुम्	पारयति	पार्यते	पार्यत्
,,	पारयते	पारयताम्	अपारयत	पारयेत	पारयिष्यते	,,	,,	,,	,,	पारयमाण
पाल्-पालना चु. उ.	पालयति	पालयतु	अपालयत्	पालयेत्	पालयिष्यति	पालित	पालयितुम्	पालयति	पाल्यते	पालयत्
,,	पालयते	पालयताम्	अपालयत	पालयेत	पालयिष्यते	,,	,,	,,	,,	पालयमान
पीड्-पीड़ा देना चु. उ.	पीडयति	पीडयतु	अपीडयत्	पीडयेत्	पीडयिष्यति	पीडित	पीडयितुम्	पीडयति	पीड्यते	पीडयत्
,,	पीडयते	पीडयताम्	अपीडयत	पीडयेत	पीडयिष्यते	,,	,,	,,	,,	पीडयमान
पुष्-पोसना दि. प.	पुष्यति	पुष्यतु	अपुष्यत्	पुष्येत्	पोक्ष्यति	पुष्ट	पोष्टुम	पोषयति	पुष्यते	पुष्यत्

पूज्-पूजना चु. उ.	पूजयति	पूजयतु	अपूजयत्	पूजयेत्	पूजयिष्यति	पूजित	पूजयितुम्	पूजयति	पूज्यते	पूजयत्
,,	पूजयते	पूजयताम्	अपूजयत	पूजयेत	पूजयिष्यते	,,	,,	,,	,,	पूजयमान
पूर्-पूरा करना चु. उ.	पूरयति	पूरयतु	अपूरयत्	पूरयेत्	पूरयिष्यति	पूरित	पूरयितुम्	पूरयति	पूर्यते	पूरयत्
,,	पूरयते	पूरयताम्	अपूरयत	पूरयेत	पूरयिष्यते	,,	,,	,,	,,	पूरयमाण
प्रच्छ्-पूछना तु.प.	पृच्छति	पृच्छतु	अपृच्छत्	पृच्छेत्	प्रक्ष्यति	पृष्ट	प्रष्टुम्	प्रच्छयति	पृच्छ्यते	पृच्छत्
प्री-प्रसन्नकरना क्रया. उ.	प्रीणाति	प्रीणातु	अप्रीणात्	प्रीणीयात्	प्रेष्यति	प्रीत	प्रेतुम्	प्रीणयते	प्रीयते	प्रीणत्
,,	प्रीणीते	प्रीणीताम्	अप्रीणीत	प्रीणीत	प्रेष्यते	,,	,,	,,	,,	प्रीणान
प्लु-कूदना तैरना भ्वा.आ.	प्लवते	प्लवताम्	अप्लवत	प्लवेत	प्लोष्यते	प्लुत	प्लोतुम्	प्लावयति	प्लूयते	प्लवमान
फल्-फलना भ्वा. प.	फलति	फलतु	अफलत्	फलेत्	फलिष्यति	फलित	फलितुम्	फालयति	फल्यते	फलत्
बध्-बांधना क्रया. उ.	बध्नाति	बध्नातु	अबध्नात्	बध्नीयात्	भन्त्स्यति	बद्ध	बन्धुम्	बन्धयति	बध्यते	बध्नत्
बाध्-कष्टदेना भ्वा. आ.	बाधते	बाधताम्	अबाधत	बाधेत	बाधिष्यते	बाधित	बाधितुम्	बाधयति	बाध्यते	बाधमान
बुध्-जानना भ्वा. उ.	बोधति	बोधतु	अबोधत्	बोधेत्	बोधिष्यति	बुद्ध	बोद्धुम्	बोधयति	बुध्यते	बोधत्
,,	बोधते	बोधताम्	अबोधत	बोधेत	बोधिष्यते	,,	,,	,,	,	बोधमान
ब्रू-बोलना अ. उ.	ब्रवीति	ब्रवीतु	अब्रवीत्	ब्रूयात्	वक्ष्यति	उक्त	वक्तुम्	वाचयति	उच्यते	ब्रुवत्
,,	ब्रूते	ब्रूताम्	अब्रूत	ब्रुवीत	वक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	ब्रुवाण

भक्ष्-खाना चु. उ.	भक्षयति	भक्षयतु	अभक्षयत्	भक्षयेत्	भक्षयिष्यति	भक्षित	भक्षयितुम्	भक्षयति	भक्ष्यते	भक्षयत्
,,	भक्षयते	भक्षयताम्	अभक्षयत	भक्षयेत	भक्षयिष्यते	,,	,,	,,	,,	भक्षयमाण
भञ्ज्-तोड़ना रु. प.	भनक्ति	भनक्तु	अभनक्	भञ्ज्यात्	भङ्क्ष्यति	भग्न	भङ्क्तुम्	भञ्जयति	भज्यते	भञ्जत्
भिक्ष्-मांगना भ्वा.आ.	भिक्षते	भिक्षताम्	अभिक्षत	भिक्षेत	भिक्षिष्यते	भिक्षित	भिक्षितुम्	भिक्षयति	भिक्ष्यते	भिक्षमाण
भिद् तोड़ना रु. उ.	भिनत्ति	भिनत्तु	अभिनत्-द्	भिन्द्यात्	भेत्स्यति	भिन्न	भेत्तुम्	भेदयति	भिद्यते	भिन्दान
,,	भिन्ते	भिन्ताम्	अभिन्त	भिन्दीत	भेत्स्यते	,,	,,	,,	,,	भिन्दान
भुज्-भोगना रु. उ.	भुनक्ति	भुनक्तु	अभुनक्-ग्	भुञ्ज्यात्	भोक्ष्यति	भुक्त	भोक्तुम्	भोजयति	भुज्यते	भुञ्जत्
,,	भुङ्क्ते	भुङ्क्ताम्	अभुङ्क्त	भुञ्जीत	भोक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	भुञ्जान
भू-होना भ्वा. प.	भवति	भवतु	अभवत्	भवेत्	भविष्यति	भूत	भवितुम्	भावयति	भूयते	भवत्
भूष्-सजाना चु. उ.	भूषयति	भूषयतु	अभूषयत्	भूषयेत्	भूषयिष्यति	भूषित	भूषयितुम्	भूषयति	भूष्यते	भूषयत्
,,	भूषयते	भूषयताम्	अभूषयत	भूषयेत	भूषयिष्यते	,,	,,	,,	,,	भूषयमाण
भी-डरना जु. प.	बिभेति	बिभेतु	अबिभेत्	बिभि(भी)यात्	भेष्यति	भीत	भेतुम्	भाययति भीषयते	भीयते	बिभ्यत्
भ्रम्-घूमना भ्वा.दि.प.	भ्रम्यति	भ्रम्यतु	अभ्रम्यत्	भ्रम्येत्	भ्रमिष्यति	भ्रान्त	भ्रमितुम्	भ्रमयति	भ्रम्यते	भ्रम्यत्
,,	भ्राम्यति	भ्राम्यतु	अभ्राम्यत्	भ्राम्येत्	,,	,,	,,	,,	,,	भ्राम्यत्

,,	भ्रमति	भ्रमतु	अभ्रमत्	भ्रमेत्	,,	,,	,,	,,	,,	भ्रमत्
मन्त्र्-मन्त्रना चु.आ.	मन्त्रयते	मन्त्रयताम्	अमन्त्रयत	मन्त्रयेत	मन्त्रयिष्यते	मन्त्रित	मन्त्रयितुम्	मन्त्रयति	मन्त्र्यते	मन्त्रयमाण
मस्ज्-न्हाना डूबना तु.प.	मज्जति	मज्जतु	अमज्जत्	मज्जेत्	मङ्क्ष्यति	मग्न	मङ्क्तुम्	मज्जयति	मज्ज्यते	मज्जत्
मुच्-छोड़ना तु.उ.	मुञ्चति	मुञ्चतु	अमुञ्चत्	मुञ्चत्	मोक्ष्यति	मुक्त	मोक्तुम्	मोचयति	मुच्यते	मुञ्चत्
,,	मुञ्चते	मुञ्चताम्	अमुञ्चत	मुञ्चेत	मोक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	मुञ्चान
मुष्-चुराना क्रया.प.	मुष्णाति	मुष्णातु	अमुष्णात्	मुष्णीयात्	मोषिष्यति	मुषित	मोषितुम्	मोषयति	मुष्यते	मुष्णत्
मुह्-मूर्छितहोना दि.प.	मुह्यति	मुह्यतु	अमुह्यत्	मुह्येत्	मोहिष्यति	मूढ मुग्ध	मोहितुम् मोग्धुम्	मोहयति	मुह्यते	मुह्यत्
मृ-मरना तु. आ.	म्रियते	म्रियताम्	अम्रियत	म्रियेत	मरिष्यति	मृत	मर्तुम्	मारयति	म्रियते	म्रियमाण
यज्-यज्ञ करना चु.उ.	यजति	यजतु	अयजत्	यजेत्	यक्ष्यति	इष्ट	यष्टुम्	याजयति	इज्यते	यजत्
,,	यजते	यजताम्	अयजत	यजेत	यक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	यजमान
यत्-यत्न करना भ्वा.आ.	यतते	यतताम	अयतत	यतेत	यतिष्यते	यतित	यतितुम्	यातयति	यत्यते	यतमान
या-जाना अ. प.	याति	यातु	अयात्	यायात्	यास्यति	यात	यातुम्	यापयति	यायते	यात्
याच्-मांगना भ्वा. उ.	याचति	याचतु	अयाचत्	याचेत्	याचिष्यति	याचित	याचितुम्	याचयति	याच्यते	याचत्
,,	याचते	याचताम्	अयाचत	याचेत	याचिष्यते	,,	,,	,,	,,	याचमान

युज्-जोड़ना रु. उ.	युनक्ति	युनक्तु	अयुनक्-ग्	युञ्ज्यात्	योक्ष्यति	युक्त	योक्तुम्	योजयति	युज्यते	युञ्जत्
,,	युङ्क्ते	युङ्क्ताम्	अयुङ्क्त	युञ्जीत	योक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	युञ्जान
युध्-लड़ना दि. आ.	युध्यते	युध्यताम्	अयुध्यत	युध्येत	योत्स्यते	युद्ध	योद्धुम्	योधयति	युध्यते	युध्यमान
रक्ष्-रक्षा करना भ्वा.प.	रक्षति	रक्षतु	अरक्षत	रक्षेत्	रक्षिष्यति	रक्षित	रक्षितुम्	रक्षयति	रक्ष्यते	रक्षत्
रच्-रचना चु. उ.	रचयति	रचयतु	अरचयत्	रचयेत्	रचयिष्यति	रचित	रचयितुम्	रचयति	रच्यते	रचयत्
,,	रचयते	रचयताम्	अरचयत	रचयेत	रचयिष्यते	,,	,,	,,	,,	रचयमान
रभ्-आरम्भ करना भ्वा.आ.	रभते	रभताम्	अरभत	रभेत	रप्स्यते	रब्ध	रब्धुम्	रम्भयति	रभ्यते	रभमाण
रम्-खेलना भ्वा. आ.	रमते	रमताम्	अरमत	रमेत	रंस्यते	रत	रन्तुम्	रमयति	रम्यते	रममाण
राज्-चमकना भ्वा.उ.	राजति	राजतु	अराजत्	राजेत्	राजिष्यति	राजित	राजितुम्	राजयति	राज्यते	राजत्
,,	राजते	राजताम्	अराजत	राजेत	राजिष्यते	,,	,,	,,	,,	राजमान
रुच्-चमकना भ्वा.आ. (पसन्द करना)	रोचते	रोचताम्	अरोचत	रोचेत	रोचिष्यते	रुचित	रोचितुम्	रोचयति	रुच्यते	रोचमान
रुद्-रोना अ. प.	रोदिति	रोदितु	अरोदत् अरोदीत्	रुद्यात्	रोदिष्यति	रुदित	रोदितुम्	रोदयति	रुद्यते	रुदत्
रुध्-रोकना रु. उ.	रुणद्धि	रुणद्धु	अरुणत्-द्	रुन्ध्यात्	रोत्स्यति	रुद्ध	रोद्धुम्	रोधयति	रुध्यते	रुन्धत्

,,	रुन्द्धे	रुन्द्धाम्	अरुन्द्ध	रुन्धीत	रोत्स्यते	,,	,,	,,	,,	रुन्धान
रुह्-उगना भ्वा. प.	रोहति	रोहतु	अरोहत्	रोहेत्	रोक्ष्यति	रूढ	रोढुम्	रोहयति	रुह्यते	रोहत्
लज्ज्-शर्म करना तु.आ.	लज्जते	लज्जताम्	अलज्जत	लज्जेत	लज्जिष्यते	लज्जित	लज्जितुम्	लज्जयति	लज्जयते	लज्जमान
लभ्-पाना भ्वा. आ.	लभते	लभताम्	अलभत	लभेत	लप्स्यते	लब्ध	लब्धुम्	लम्भयति	लभ्यते	लभमान
लिख्-लिखना तु. प.	लिखति	लिखतु	अलिखत्	लिखेत्	लेखिष्यति	लिखित	लिखितुम्	लेखयति	लिख्यते	लिखत्
वन्द्-वन्दनाकरना भ्वा.आ.	वन्दते	वन्दताम्	अवन्दत	वन्देत	वन्दिष्यते	वान्दित	वन्दितुम्	वन्दयति	वन्द्यते	वन्दमान
वस्-रहना भ्वा. प.	वसति	वसतु	अवसत्	वसेत्	वत्स्यति	उषित	वस्तुम्	वासयति	उष्यते	वसत्
वह्-बहना, भ्वा. उ.	वहति	वहतु	अवहत्	वहेत्	वक्ष्यति	ऊढ	वोढुम्	वाहयति	उह्यते	वहत्
ले जाना	वहते	वहताम्	अवहत	वहेत	वक्ष्यते	,,	,,	,,	,,	वहमान
वा-चलना(वायुका)अ. प.	वाति	वातु	अवात्	वायात्	वास्यति	वात	वातुम्	वापयति	वायते	वात्
वाञ्छ्-चाहना भ्वा. प.	वाञ्छति	वाञ्छतु	अवाञ्छत्	वाञ्छेत्	वाञ्छिष्यति	वाञ्छित	वाञ्छितुम्	वाञ्छयति	वाञ्छयते	वाञ्छत्
विद्-जानना अ. प.	वेत्ति	वेत्तु	अवेत्-द्	विद्यात्	वेदिष्यति वेत्स्यति	विदित	वेत्तुम्	वेदयति	विद्यते	विदत्
विद्-होना दि. आ.	विद्यते	विद्यताम्	अविद्यत	विद्यते	वेत्स्यते	वित्त	वेत्तु	वेदयति	विद्यते	विद्यमान
विन्द्-पाना तु. उ.	विन्दति	विन्दतु	अविन्दत्	विन्देत्	वेत्स्यति	वित्त	वेत्तुम्	वेदयति	विद्यते	विन्दत्

,,	विन्दते	विन्दताम्	अविन्दत	विन्देत	वेत्स्यते	विन्न	वेदितुम्	,,	,,	विन्दमान
वृत्-होना भ्वा. आ.	वर्तते	वर्तताम्	अवर्तत	वर्तेत	वर्तिष्यते वर्त्स्यति	वृत्त	वर्तितुम्	वर्तयति	वृत्यते	वर्तमान
वेप्-कांपना भ्वा. आ.	वेपते	वेपताम्	अवेपत	वेपेत	वेपिष्यते	वेपित	वेपितुम्	वेपयति	वेप्यते	वेपमान
व्यथ्-दुःखपाना भ्वा.आ.	व्यथते	व्यथताम्	अव्यथत	व्यथेत	व्यथिष्यते	व्यथित	व्यथितुम्	व्यथयति	व्यथ्यते	व्यथमान
व्यध्-बींधना दि. प.	विध्यति	विध्यतु	अविध्यत्	विध्येत्	व्यत्स्यति	विद्ध	वेद्धुम्	व्याधयति	विध्यते	विध्यत्
व्रज्-चलना भ्वा. प.	व्रजति	व्रजतु	अव्रजत्	व्रजेत्	व्रजिष्यति	व्रजित	व्रजितुम्	व्राजयति	व्रज्यते	व्रजत्
शक्-समर्थ होना स्वा.प.	शक्नोति	शक्नोतु	अशक्नोत्	शक्नुयात्	शक्ष्यति	शक्त	शक्तुम्	शाकयति	शक्यते	शक्नुवत्
शंक्-शङ्का करना भ्वा.आ.	शङ्कते	शङ्कताम्	अशङ्कत	शङ्केत	शङ्किष्यते	शङ्कित	शङ्कितुम्	शङ्कयति	शङ्क्यते	शङ्कमान
शप्-शपथकरना भ्वा.दि.उ.	शपति	शपतु	अशपत्	शपेत्	शप्स्यति	शप्त	शप्तुम्	शापयति	शप्यते	शपत्
,,	शपते	शपताम्	अशपत	शपेत	शप्स्यते	,,	,,	,,	,,	शपमान
,,	शप्यति	शप्यतु	अशप्यत्	शप्येत्	,,	,,	,,	,,	,,	शप्यत्
,,	शप्यते	शप्यताम्	अशप्यत	शप्येत	,,	,,	,,	,,	,,	शप्यमान
शब्द्-शब्द करना चु.उ.	शब्दयति	शब्दयतु	अशब्दयत्	शब्दयेत्	शब्दयिष्यति	शब्दित	शब्दयितुम्	शब्दयति	शब्द्यते	शब्दयत्
,,	शब्दयते	शब्दयताम्	अशब्दयत	शब्दयेत	शब्दयिष्यते	,,	,,	,,	,,	शब्दयमान

शम्-शान्त होना दि.प. शाम्यति	शाम्यतु	अशाम्यत्	शाम्येत्	शमिष्यति	शान्त	शमितुम्	शमयति	शम्येत	शाम्यत्
शास्-शासन करना अ.प.शास्ति	शास्तु	अशात्-द्	शिष्यात्	शासिष्यति	शिष्ट	शासितुम्	शासयति	शिष्यते	शासत्
शिक्ष्-सीखना भ्वा.आ. शिक्षते	शिक्षताम्	अशिक्षत	शिक्षेत	शिक्षिष्यते	शिक्षित	शिक्षितुम्	शिक्षयति	शिक्ष्यते	शिक्षमाण
शुच्-शोक करना भ्वा.प.शोचति	शोचतु	अशोचत्	शोचेत्	शोचिष्यति	शुचित शोचित	शोचितुम्	शोचयति	शुच्यते	शुचत्
शुध्-शुद्ध होना दि. प. शुध्यति	शुध्यतु	अशुध्यत्	शुध्येत्	शोत्स्यति	शुद्ध	शोद्धुम्	शोधयति	शुध्यते	शुध्यत्
शुष्-सूखना दि. प. शुष्यति	शुष्यतु	अशुष्यत्	शुष्येत्	शोक्ष्यति	शुष्क	शोष्टुम्	शोषयति	शुष्यते	शुष्यत्
श्रम्-श्रान्त होना दि. प. श्राम्यति	श्राम्यतु	अश्राम्यत्	श्राम्येत्	श्रमिष्यति	श्रान्त	श्रमितुम्	श्रमयति	श्रम्येत	श्राम्यत्
श्रि-आश्रित होना भ्वा.उ.श्रयति	श्रयतु	अश्रयत्	श्रयेत्	श्रयिष्यति	श्रित	श्रयितुम्	श्राययति	श्रीयते	श्रयत्
,, श्रयते	श्रयताम्	अश्रयत	श्रयेत	श्रयिष्यते	,,	,,	,,	,,	श्रयमाण
श्रु-सुनना स्वा. प. शृणोति	शृणोतु	अशृणोत्	शृणुयात्	श्रोष्यति	श्रुत	श्रोतुम्	श्रावयति	श्रूयते	शृण्वत्
श्लाघ्-प्रशंसाकरना भ्वा.आ.श्लाघते	श्लाघताम्	अश्लाघत	श्लाघेत	श्लाघिष्यते	श्लाघित	श्लाघितुम्	श्लाघयति	श्लाघ्यते	श्लाघमान
श्वस्-श्वास लेना अ. प. श्वसिति	श्वसितु	अश्वस(सी)त्	श्वस्यात्	श्वसिष्यति	श्वसित	श्वसितुम्	श्वसयति	श्वस्यते	श्वसत्
सद्-बैठना भ्वा. प. सीदति (दुःखी होना)	सीदतु	असीदत्	सीदेत्	सत्स्यति	सन्न	सत्तुम्	सादयति	सद्यते	सीदत्

सस्ज्-त्यार होना भ्वा. प.	सजति	सजतु	असजत्	सजेत्	सजिष्यति	सजित	सजितुम्	सज्जयति	सज्ज्यते	सजत्
सह्-सहना भ्वा. आ.	सहते	सहताम्	असहत	सहेत	सहिष्यते	सहित	साहितुम् सोढुम्	साहयति	सह्यते	सहमान
साध्-सिद्ध करना स्वा.प.	साध्नोति	साध्नोतु	असाध्नोत्	साध्नुयात्	सात्स्यति	साद्ध	साद्धुम्	साधयति	साध्यते	साध्नुवत्
सिच्-सींचना तु. उ.	सिञ्चति	सिञ्चतु	असिञ्चत्	सिञ्चेत्	सेक्ष्यति	सिक्त	सेक्तुम्	सेचयति	सिच्यते	सिञ्चत
सिध्-सिद्ध होना दि. प.	सिध्यति	सिध्यतु	असिध्यत्	सिध्येत्	सेत्स्यति	सिद्ध	सेद्धुम्	सेधयति	सिध्यते	सिध्यत्
सिव्-सीना दि. प.	सीव्यति	सीव्यतु	असीव्यत्	सीव्येत्	सेविष्यति	स्यूत	सेवितुम्	सेवयति	सीव्यते	सीव्यत्
सूच्-सूचना देना चु. उ.	सूचयति	सूचयतु	असूचयत्	सूचयेत्	सूचयिष्यति	सूचित	सूचयितुम्	सूचयति	सूच्यते	सूचयत्
,,	सूचयते	सूचयताम्	असूचयत	सूचयेत्	सूचयिष्यते	,,	,,	,,	,,	सूचयमान
सेव्-सेवा करना भ्वा.आ.	सेवते	सेवताम्	असेवत	सेवेत	सेविष्यते	सेवित	सेवितुम्	सेवयति	सेव्यते	सेवमान
स्खल्-गिरना फिसलना भ्वा.प.	स्खलति	स्खलतु	अस्खलत्	स्खलेत्	स्खलिष्यति	स्खलित	स्खलितुम्	स्खलयति	स्खल्यते	स्खलत्
स्तु-स्तुति करना अ. उ.	स्तौति	स्तौतु	अस्तौत्	स्तुयात्	स्तोष्यति	स्तुत	स्तोतुम्	स्तावयति	स्तूयते	स्तुवत्
,,	स्तुते	स्तुताम्	अस्तुत	स्तुवीत	स्तोष्यते	,,	,,	,,	,,	स्तूयमान
स्था-खड़ा होना भ्वा. प.	तिष्ठति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	तिष्ठेत्	स्थास्यति	स्थित	स्थातुम	स्थापयति	स्थीयते	तिष्ठत्
स्ना-नहाना अ. प.	स्नाति	स्नातु	अस्नात्	स्नायात्	स्नास्यति	स्नात	स्नातुम्	स्नापयति	स्नायते	स्नात्
स्निह्-प्यार करना दि. प.	स्निह्यति	स्निह्यतु	अस्निह्यत्	स्निह्येत्	स्नेढ्यिति	स्निग्ध	स्नेहितुम् स्नेग्धुम्-स्नेढुम्	स्नेहयति	स्निह्यते	स्निह्यत्

स्पृश्-छूना तु. प.	स्पृशति	स्पृशतु	अस्पृशत्	स्पृशेत्	स्प्रक्ष्यति	स्पृष्ट	स्प्रष्टुम्	स्पर्शयति	स्पृश्यते	स्पृशत्
स्फुर्-फड़कना तु. प.	स्फुरति	स्फुरतु	अस्फुरत्	स्फुरेत्	स्फुरिष्यति	स्फुरित	स्फुरितुम्	स्फोरयति	स्फुर्यते	स्फुरत्
स्मि-मुसकराना भ्वा.आ.	स्मयते	स्मयताम्	अस्मयत	स्मयेत	स्मयिष्यते	स्मित	स्मेतुम्	स्माययति	स्मीयते	स्मयमान
स्मृ-स्मरण करना भ्वा.प.	स्मरति	स्मरतु	अस्मरत्	स्मरेत्	स्मरिष्यति	स्मृत	स्मर्तुम्	स्मारयति	स्मर्यते	स्मरत्
स्रंस्-गिरना भ्वा. आ.	स्रंसते	स्रंसताम्	अस्रंसत	स्रंसेत	स्रंसिष्यते	स्रस्त	स्रंसितुम्	स्रंसयति	स्रस्यते	स्रंसमान
स्रु-बहना भ्वा. प.	स्रवति	स्रवतु	अस्रवत्	स्रवेत्	स्रविष्यति	स्रुत	स्रोतुम्	स्रावयति	स्रूयते	स्रवत्
स्वप्-सोना अ. प.	स्वपिति	स्वपितु	अस्वप(पी)त्	स्वप्यात्	स्वप्स्यति	सुप्त	स्वप्तुम्	स्वापयति	सुप्यते	स्वपत्
हन् मारना अ. प.	हन्ति	हन्तु	अहन्	हन्यात्	हनिष्यति	हत	हन्तुम्	घातयति	हन्यते	घ्नत्
हा-छोड़ना जु. प.	जहाति	जहातु	अजहात्	हायात्	हास्यति	हीन	हातुम्	हापयति	हीयते	जहत्
हु-हवन जु. प.	जुहोति	जुहोतु	अजुहोत्	जुहुयात्	होष्यति	हुत	होतुम्	हावयति	हूयते	जुह्वत्
हृ-हरना भ्वा. उ.	हरति	हरतु	अहरत्	हरेत्	हरिष्यते	हृत	हर्तुम्	हारयति	ह्रियते	हरत्
,,	हरते	हरताम्	अहरत	हरेत	हरिष्यते	,,	,,	,,	,,	हरमाण
हृष्-हर्ष करना दि. प.	हृष्यति	हृष्यतु	अहृष्यत्	हृष्येत्	हर्षिष्यति	हृष्ट	हर्षितुम्	हर्षयति	हृष्यते	हृष्यत्
ह्लाद् प्रसन्न होना भ्वा.आ.	ह्लादते	ह्लादताम्	अह्लादत	ह्लादेत	ह्लादिष्यते	ह्लादित	ह्लादितुम्	ह्लादयति	ह्लाद्यते	ह्लादमान

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय
Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration Library

मसूरी
MUSSOORIE

अवाप्ति सं०
Acc. No.............................

कृपया इस पुस्तक को निम्न लिखित दिनांक या उससे पहले वापस कर दें।

Please return this book on or before the date last stamped below.

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.
[illegible]	[illegible]		
	[illegible]		

491.207
राजा

LIBRARY
LAL BAHADUR SHASTRI
National Academy of Administration
MUSSOORIE

Accession No. 125408

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving